Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान

[मासिक]

२०४०

१५ सितुम्बर से
१५ अक्तूबर तक

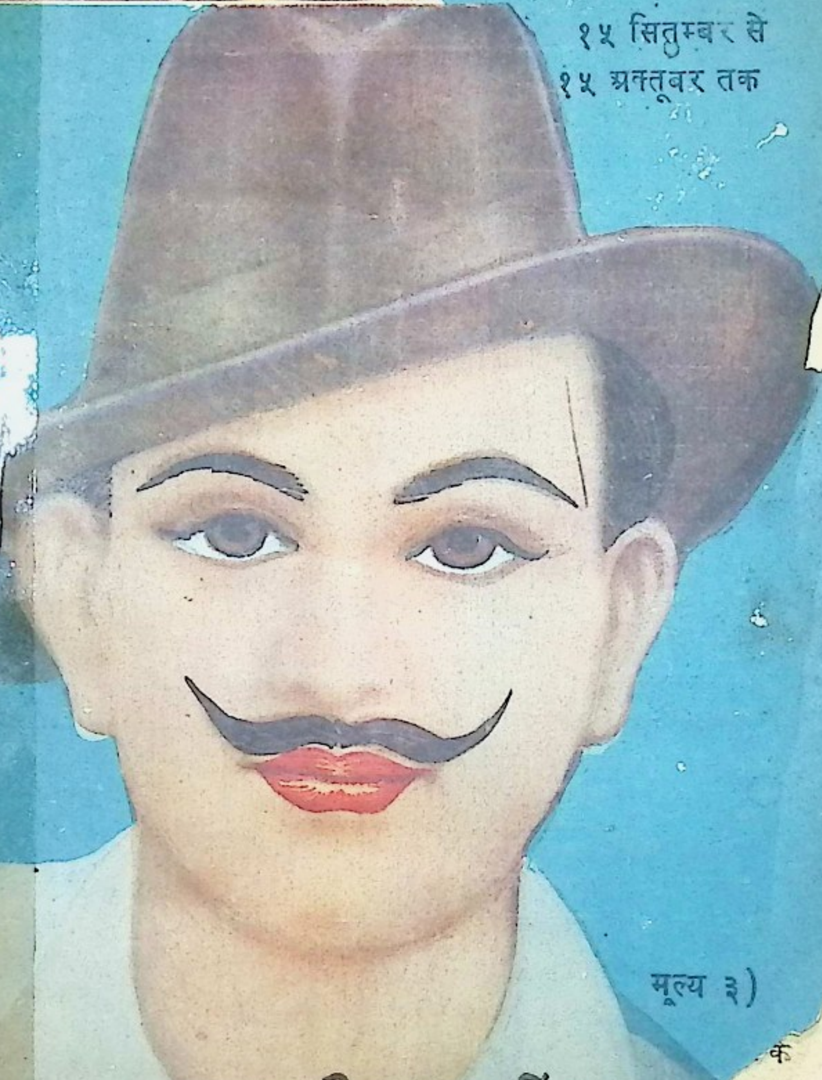

मूल्य ३)

के

दुर्भिक्ष :

अमरशहीद भगतसिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंक में पढ़िये !

महात्मा आनन्द स्वामी उवाच १८
श्रीलंका में हिंसक उपद्रव : परिणाम क्या होगा ? —सत्यसुमन २०
सिख विद्वानों की सेवा में —स्व० स्वामी अमृतानन्द २४
गुरुओं का अपमान किया है —कविता २८
प्रतिश्याय (जुकाम, नजला) और उसकी चिकित्सा ३३
वीर सावरकर की सधर्मिणी माई —सत्यवती गोयल ३७
तालस्ताय की वेदों में श्रद्धा — फतेहचन्द शर्मा आराधक ४४
स्वातन्त्र्यवीर सावरकर की जीवनयात्रा —प्रतापनारायणमिश्र ४६
आध्यात्मिक चिकित्सा : विकास की एक दिशा—आचार्य दिवाकर ५५
आरण्यक ग्रन्थ और उनके प्रतिपादित विषय—कु० मधुरानी ५८
भारत में भारतीयों का राज्य है या अल्पसंख्यकों का ? ६१
होमलैन्ड मांग समस्या का एक मात्र हल सुब्रत चटर्जी ६५
पिता का प्रेम (कहानी) —निशाकान्त मिश्र ७०
स्वस्थ जीवन चाहने वालों के लिए आवश्यक बातें (स्वास्थ्यस्तम्भ)
बाइबिल के पैगम्बर चोर – चोरों से सावधान ८४
शिशुसंसार ९१
राष्ट्र की तस्वीर ९३
अरब देशों द्वारा मुस्लिम साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन ९७
क्रिश्चियनिटी इज कृष्णनीति — प्रहलादराय पचेरिया १०३
पंजाब में पुनः शान्ति कैसे स्थापित हो ? - ज्ञानी राजसिंह देहलवी
दुखों की औषधि और सच्ची शान्ति का सच्चा उपाय ११२
धर्मपरिवर्तन के लिए विदेशों से धन — रमेशचन्द्र १२५
गोरक्षा के लिए अकबर का फरमान १३०
फलों का महाराजा अंगूर —अनिल चोपड़ा १३१
हत्यारे के नाम खुला पत्र (व्यंग्य) —सुरेन्द्र चतुर्वेदी १३३
हिन्दुओं को निगलने वाली चार शक्तियां —प्रो० हरिशचन्द्र १३६
महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर आर्यसमाज क्या करे ? १६१
"This is what did" as confessed by
eigners themselves १६४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो

सम्पादक—**राकेशरानी**
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग,
करौलबाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६२६३९
५६४७४१
८०१२११
वार्षिक मूल्य : ३० रुपए
विदेश में : विमान से ४२ पौंड;
६० डालर

आजीवन : ५०१ रुपए
विदेश में : १००१)
यह प्रति : तीन रुपये

भाद्रपद संवत् २०४०
सितम्बर १९८३, वर्ष १६ अंक ५

देखो ! भविष्य को !

कल से शिक्षा लो, आज को समझो और भविष्य की ओर देखो, ! क्या होगा कल,⋯इतिहास क्या कहेगा और धरती पर हमारा क्या स्थान होगा ?

असंभव कुछ नहीं है। हम सर्वत्र छा सकते हैं और यह भी संभव है कि हमारा नाम—चिन्ह भी कहीं खोजने पर न मिले ?

कल्पनाएं भूल जाओ, यथार्थ को जानो और नए निर्माण के लिए श्रम करो, त्याग करो, सफलता के लिए संघर्ष अनिवार्य है।

आज—कल—और आज यह एक चक्र है। इसको समझ अपने जीवन के, लक्ष्य को जानिए और निर्णय कीजिए।

हम इस लिए नहीं लड़ें कि हमारा नाम रहे, संघर्ष इसलिए करना है कि धरती स्वर्ग बने। शांति और आनन्द की खोज हमें करनी है और उनकी स्थापना भी हमारा ही दायित्व है।

हम सब कुछ जानते हैं, पर स्वार्थ में आज को बनाने के लिए सब कुछ भूल जाते हैं। हमें आज की ही नहीं आने वाले कल की भी चिन्ता करनी है।

वेद—शास्त्र—उपनिषद् गीता सभी का लक्ष्य है मानव की शांति ! कुरान—बाइबिल अशान्ति का साधन हैं, इसलिए मेरे भाई युद्ध के नगाड़े हमें ही बजाने हैं—विजय के लिए—सफलता के लिए—आओ हमारे साथ—

—वेदभिक्षु :

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रा० सा० चौ० प्रतापसिंह जी बैठे हैं और भाषण दे रही हैं - पंडिता राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

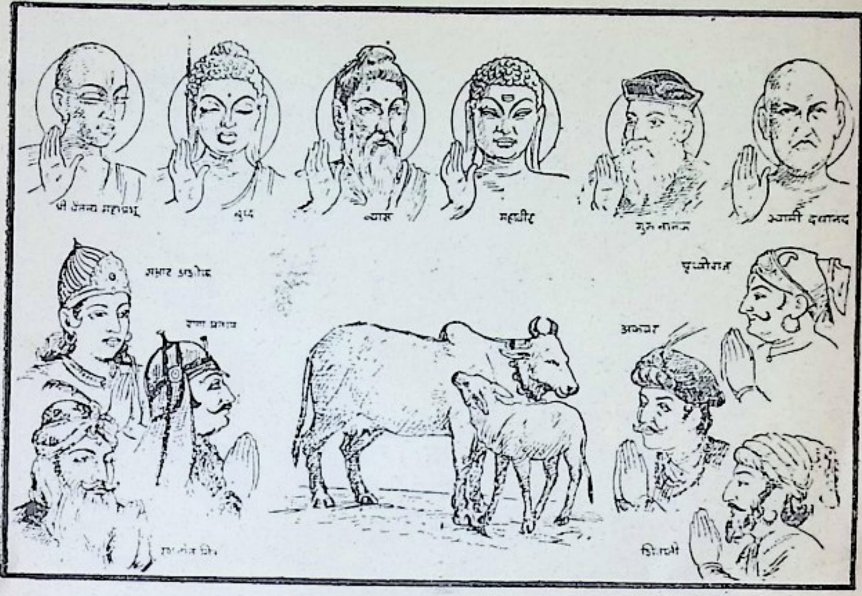

गो रक्षा संकल्प

भारत के सभी महापुरुषों ने गो की रक्षा को परम धर्म बताया, गांधी ने इसे प्रथम कर्त्तव्य कहा, पर दिन निकलने से पहले राम-कृष्ण गौतम-गांधी के देश में हजारों गौएं कटती हैं।

गो माता की पूजा हम करते हैं। उसे मां कहते हैं पर सभी मां को कटते देख रहे हैं और यह तमाशा आजादी के १५ वर्ष बाद भी चल रहा है।

मां कटे और हम देखें, इससे बड़ी लज्जा की बात और क्या होगी ? हमारे धर्म गुरु, हमारे युवा, हिन्दू सेना सब सो रहे हैं, और हम अपना सिर धुन रो रहे हैं।

हिन्दू गणराज्य में गौ पूज्या होगी। उसकी ओर टेढ़ी आंख से देखने वाले का सिर काट दिया जाएगा। यह हमारी घोषणा है।

और आज भी हम आपसे कहते हैं। संगठन बनाओ और गौ बचाओ, बूचड़-खाने बन्द करो, मांस खाना छोड़ो।

अपना सिर कटाकर भी जिस दिन हम गौ की रक्षा करेंगे, उस दिन मेरी मां की रक्षा होगी। भारत की संस्कृति का प्रतीक गौ है।

इसलिए हिन्दुओ ! कायर न बनो। गौ रक्षा के लिए सब कुछ अर्पण की भावना जगाओ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

—राकेशरानी

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५००० हिन्दुओं की हत्या का संकल्प और घोषणा

शासन चूड़ियां पहन ले

भिंडरावाले की पंजाब पुलिस को चेतावनी

अमृतसर १७ अगस्त। उग्र सिख नेता संत जनरैल सिंह भिंडरावाले ने अपने समर्थकों के साथ पुलिस की कथित जाली मुठभेड़ों के विरुद्ध पंजाब पुलिस को चेतावनी देते हुए कहा है कि इनका बदला लिया जाएगा।

मंजी साहब ने अपने भाषण में श्री भिंडरावाले ने कहा है कि पुलिस हर दिन जाली मुठभेड़ों के बहाने उनके समर्थकों को मार रही है। उन्होंने सिख युवकों से कहा कि वे जवानी जमा खर्च छोड़ दें और सिखों के अधिकारों के लिए एक मोटर साईकिल और रिवाल्वर खरीदें।

कल संत ने पुलिस को चेतावनी देते हुए कहा था कि मुक्तसर में पुलिस द्वारा रोकी गई उनकी मिनी बस को शाम ५ बजे तक छोड़ दिया जाए अन्यथा उनके समर्थकों द्वारा एक घण्टे में ५ हजार हिन्दुओं का कत्लेआम कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि मिनी बस अखिल भारतीय सिख फेडरेशन के अध्यक्ष श्री अमरीक सिंह के माता-पिता को लेने जा रही थी। उसका पुलिस ए० एस० आई० श्री गुरुचरनसिंह की हत्या से कोई लेना-देना नहीं था।"

—पढ़ लिया आपने, कितनी उद्दंडता है। वे ५००० देश भक्तों को अकारण कत्ल करने की बात करते हैं। पर अगर हम ५००० देश द्रोहियों को भी कत्ल करने की बात कहें—तो क्या शासन क्षमा करेगा।

कायर हिन्दु नेताओं को, सरकार को, मैं सादर चूड़ियां अर्पित करती हूं।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनता के नाम अपील

आदरणीय बन्धुओ,

अज्ञान, अभाव और अन्याय के अन्धकार में सिसक रही मानवता के उद्धारक ज्योति पुंज महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी की तिथियां लगातार निकट आ रही हैं। विश्व भर में महर्षि के शिष्यों और श्रद्धालुओं के लिए यह एक चुनौती है कि वे अपने आदर्श पुरुष के इस समारोह को कितने प्रभावशाली ढंग से मनाते हैं।

मैं निजी तौर पर यह अभिलाषा रखता हूं कि इस बार का उत्सव केवल उत्सव न रहे अपितु इसमें आर्यसमाज एक ऐसे संगठन का स्वरूप ग्रहण करे, जो भारत माता को उसकी वर्तमान दुर्दशा से मुक्ति दिला सके, और एक ऐसी पारिवारिक संस्था बन जाए जिसके ओजस्वी सपूत अपनी आत्मबलिदानी परम्परा से सारे समाज में दीप शिखा बनकर चमकें।

हम इसके लिए अनेक प्रकार से प्रयत्न कर रहे हैं। किन्तु इसके साथ ही सबसे बड़ा उत्तरदायित्व उन ५ से १० लाख भाई-बहनों, वृद्धों और बच्चों के समुचित आवास तथा भोजन आदि का प्रबन्ध करना है जो शताब्दी में भाग लेने अजमेर पहुंचेंगे। इससे पूर्व कई बड़े समारोहों में यह देखा गया है कि केवल इस व्यवस्था के अभाव से लोग परेशान हुए तथा समारोह के असली उद्देश्य में व्यवधान पड़ा।

मैं चाहता हूं कि यह समारोह एक पारिवारिक वातावरण में सम्पन्न हो, इसके लिए आवश्यक है कि भोजन एवं आवास की संयुक्त व्यवस्था हो सके। इसके लिए, तथा यज्ञशाला, प्रदर्शनी तथा साहित्य प्रकाशन आदि के लिए हमें तुरन्त कम से कम १० लाख रुपयों की आवश्यकता है। दानवीरता का इतिहास रखने वाले आर्य बन्धुओं के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं है। अतः आप कम से कम १० हजार भाई-बहिन प्रत्येक १०१)-रु० मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भिजवायें।

क्या हमारे १० हजार सहयोगी देश भर में ऐसे नहीं जो सिर्फ सौ रु० अपनी जेब से निकाल कर इस महान् यज्ञ में अपनी पवित्र आहुति के रूप में दे सकें? मुझे विश्वास है, आप मेरी अपील को पढ़कर अलग नहीं रख देंगे, अपितु व्यक्तिगत पत्र मानकर आज ही मनीआर्डर करेंगे।

आशीर्वाद सहित

आपका

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान परोपकारी सभा

केसरगंज अजमेर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—राकेशरानी

सम्पादकीय

हिन्दू बनाम आर्य बनाम हिन्दू

२० बार अनेक स्थानों पर बहुत से व्यक्ति आर्यसमाज के क्षेत्र में ऐसे मिल जाते हैं जिनका यह आग्रह होता है कि हम आर्य हैं, हिन्दू नहीं। वस्तु-स्थिति हमारी दृष्टि में इस प्रकार है कि हिन्दू शब्द प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है जिसकी निष्ठा भारत की संस्कृति, परम्परा और राष्ट्र के प्रति अर्पित हो। हिन्दू शब्द जाति वाचक न होकर हमारी दृष्टि में राष्ट्र-वाचक है और इस नाम पर भारत का प्रत्येक व्यक्ति जिसकी निष्ठा भारत से बाहर नहीं है स्वदेश में आबद्ध हो सकती है, हिन्दू है।

आज हम संक्रान्ति काल से निकल रहे हैं। इसमें महत्त्व शब्दों का नहीं है, भावना का है और भावना की दृष्टि से, यह एक स्पष्ट सत्य है कि उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक भारत को एकता में बांध रखने की शक्ति केवल 'हिन्दू' शब्द में है। हिन्दू का विरोध वही व्यक्ति करेगा जिसकी निष्ठा भारत के प्रति नहीं होगी। वेद, शास्त्र, उपनिषद् और गीता के प्रति प्रत्येक भारतीय को श्रद्धा है, चाहे उसकी निष्ठा और पूजा पद्धति अलग-अलग ही क्यों न हो। आप हिन्दू हैं, का तात्पर्य सीधा-सा यह बनता है कि आप दो करोड़ वर्ष पुरानी परम्पराओं से, इतिहास से सम्बन्धित हैं और यह परम्पराएं और इतिहास हमारी सबसे अनमोल निधि है, जिसके बल पर हम आगे बढ़ सकते हैं।

आर्य शब्द गुण-वाचक है, जाति-वाचक नहीं। विदेशों ने हमें हानि पहुंचाने की दृष्टि से आर्य शब्द को जाति-वाचक सिद्ध करने का प्रयत्न किया किन्तु वैदिक परम्परा के अनुसार आर्य का अर्थ है—श्रेष्ठ मनुष्य और महर्षि यास्क के अनुसार "ईश्वर का पुत्र"। हम सारे संसार को आर्य बनाएं यह हमारा लक्ष्य हैं लेकिन आर्य बनाने का अर्थ यह नहीं कि इंग्लैण्ड का रहने वाला व्यक्ति इंग्लैण्ड के प्रति निष्ठा न रखे। वह आर्य हो सकता है। रूस का व्यक्ति भी आर्य हो सकता है। अमेरिका का व्यक्ति भी आर्य हो सकता है। अरब देशों के व्यक्ति और पोप के अनुयायी भी आर्य बन सकते हैं, अगर वे परमात्मा के गुणों को धारण करें। आर्य होते हुए भी उनकी राष्ट्रीयता पृथक्-पृथक् रहेगी। इसलिए हमारी मान्यता है कि भारत में हमारी राष्ट्रीयता हिन्दू है। उसी प्रकार रूस में रहने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वालों की राष्ट्रीयता रशियन रहेगी। भारत का आर्य आर्य होते हुए भी अपने को हिन्दुस्तान का नागरिक कहेगा और उसे अपने हिन्दुत्व पर अभिमान करना होगा। यह वस्तुस्थिति है कोरी कल्पना नहीं। कल्पनाएं और आदर्श हमें प्रेरणा दे सकते हैं किन्तु जीवन के लिए हम यथार्थ की उपेक्षा नहीं कर सकते।

आज यवन और ईसाइयों की दुरभिसंधियों को विफल करने के लिए हमें हिन्दू के रूप में संगठित होना है और संसार के प्रत्येक नागरिक को आर्य बनाने का लक्ष्य लेकर अपना धार्मिक कार्य आरम्भ करना है।

एक हिन्दू वैदिक परम्पराओं के अधिक निकट है इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता। समय के साथ-साथ बहुत ही कुरीतियां हममें आ गई हैं यह भी सत्य है किन्तु आज का समय न दोष-दर्शन का है न छोटी-छोटी समस्याओं से उलझने का अपितु आज हमें सीधा संघर्ष करना है। बाईबिल और कुरान की शिक्षाओं से प्रेरणा प्राप्त कर जो आसुरी शक्तियां भारत को इस्लाम और ईसाइयत के झंडे के नीचे लाना चाहती हैं, उनका सामना करना है।

हमें इस समय सब कुछ भूलकर इस देश की परम्पराओं को बचाना है और उसके लिए हिन्दू को संगठित करना है। दूसरे शब्दों में कहें तो हिन्दू सेना का संगठन कर सारे देश में पनप रही आसुरी शक्ति को समाप्त करना है।

हमें विश्वास है कि भारत के प्रबुद्ध नागरिक भारत में हिन्दू गणराज्य बना कर संसार के सबसे प्राचीन वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार धरती पर करेंगे। अज्ञान और अन्धकार से प्रेरणा लेकर चलने वाली शक्तियों को कुचल ज्ञान सूर्य का प्रकाश भू-मण्डल में फैलाएंगे।

हम हिन्दू हैं, भारत के लिए, राष्ट्र के संगठन के लिए, प्राचीन वैदिक धर्म की रक्षा के लिए। हम आर्य बनाएंगे। अपने जीवन को सुख-शान्ति और आनन्द से भरने के लिए। आशा है हम सभी इस समय छोटी-छोटी बातों में न उलझ अजगर की लपलपाती आग को बुझाने के लिए एक ओ३म् के झण्डे के नीचे इकट्ठे होंगे और हिन्दू की रक्षा करेंगे। हिन्दू बचेगा तो वैदिक धर्म भी बचेगा। हिन्दू मर जाएगा तो पाकिस्तान की तरह न हिन्दू बचेगा और न धर्म बचेगा। जो पाकिस्तान में हुआ वही स्थिति भारत की भी हो सकती है अगर हम सोते रहे तो।

मैं
अपने जीवन को,
सत्य के दर्शन से,
पूत पावन कर,
देश की पीड़ा को—
अंतर में संजो,
अपने को भुलाकर
आपके लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जलने लग गयी,
तो क्या यह मेरा
अपराध था।
संकट मुझे सहने हैं,
जानती हूं।
तूफान कहर बरसाएंगे,
मानती हूं,
सब कुछ सहने को
तैयार हूं—
पर क्या,
इस कंटीले पथ पर
चलने के लिए
आप मुझे
अपना स्नेह
आशीर्वाद
भी नहीं दे सकते।

० ० ०

मेरे काम
आपके लिए प्रमाण नहीं,
लगता है आप
केवल बातों में
विश्वास रखते हैं,
लच्छेदार भाषणों से,
झूठ से
अपना मन बनाते हैं,
मरने वाले का नहीं
जीने वाले का
साथ देना
शायद
अधिक आसान है।

० ० ०

कुछ भी हो,
मेरा गीत
अब युद्ध का स्वर
बन गया है।
हम जीतें, या,
हारें,
हम बढ़ेंगे,
मरेंगे,
विजय वरण करेंगे
और
आज या कल
आपका
स्नेह दुलार
मुझे मिलेगा,
अभी तो
प्रभु के आशीर्वाद
बल से
मैं बढ़ रही हूं—
आप सोचते रहिए
क्या ठीक है।
क्या गलत है।

समस्याओं का हल

अगर शासन चाहे तो एक दिन में सभी अलगाववादी शक्तियों को कुचला जा सकता है। शासन की ढीली नीति ही इन्हें बढ़ावा देती है।

शासन स्पष्ट घोषणा करे कि जो भी किसी वर्ग-मत विशेष होने के नाते अधिकार मांगेगा उसे देश द्रोही समझा जाएगा। और शासन उसे पूरी शक्ति से कुचल देगा।

इस घोषणा के बाद कोई सिर नहीं उठाएगा। कश्मीर में भारत के सभी नागरिकों को, विशेष रूप से रिटायर्ड सैनिकों को बसाया जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश की एकता के संदर्भ में सभी समस्याओं पर विचार किया जाए।

असम, नागालैण्ड, कश्मीर और पंजाब की समस्याओं का हल राष्ट्रवाद द्वारा ही हो सकता है। हम भारतीय हैं, कश्मीरी नहीं, असमी नहीं, पंजाबी नहीं। इस भावना को जब तक नहीं उभारेंगे देश नहीं, उभरेगा।

प्रदेश प्रबन्ध की दृष्टि से हैं न कि अलग राष्ट्र हैं वे। हम केवल भारतीय हैं। भारत के नागरिक हैं। सभी के समान अधिकार और कर्त्तव्य हैं। यह सभी समझ लें तो कोई उलझन ही खड़ी न रहे। ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।

अमेरिका में हिन्दू युवक

अमेरिका में पढ़ने गये हिन्दू युवकों के संगठन ने हिन्दू गण राज्य की स्थापना के लिये हमें पूरा सहयोग का आश्वासन दिया है।

उनका पत्र इसी अंक में अंग्रेजी में हम छाप रहे हैं। हमें प्रसन्नता है कि हमारी आवाज आज देश की ही नहीं सभी हिन्दुओं की बन गयी है।

हम पर जो भी संकट आयेंगे, सहेंगे, पर हम अपनी राह नहीं बदलेंगे। हम हिन्दू को भारत की राष्ट्रीयता का प्रतीक मानते हैं। और यह समझते हैं कि हिन्दू द्वारा ही देश की एकता स्थायी रह सकती है।

इसलिए आज समाजवाद, सैक्यूलर वाद के विरुद्ध संघर्ष कर 'हिन्दू' अर्थात् देश भक्ति की अग्नि प्रज्जलित कर आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

हम अमेरिका में पढ़ रहे वीर हिंदू विद्यार्थियों की भावना का हृदय से स्वागत करते हैं।

रक्त से इतिहास

कुछ लोग देश का इतिहास रक्त से लिखना चाहते हैं। पर हम उन्हें ऐसा नहीं करने देंगे। आजादी मिलने के समय जिन्होंने नर-संहार किया वही आज भी दंगों की राजनीति से देश का भविष्य लिखने को उत्सुक हैं।

अलगाव का विष, साम्प्रदायिकता का प्रवाह हिन्दू नहीं बहा सकता। भारत उसका घर है। कोई भी अपने हाथों अपना घर नहीं जलाता। जलाते वे हैं जो अपने घर को अपना नहीं समझते।

इस्लाम और ईसाइयत के अनुयायी भारत को अपना घर नहीं मानते इसलिए घर फूंक तमाशा देखना उनका स्वभाव है। यही कारण है कि वे जहां उनका बस चलता है वहीं आग लगाने में देरी नहीं करते।

हमारा संकल्प है कि हम उन्हें ऐसा नहीं करने देंगे। हम भारत को जलाने वालों का अस्तित्व मिटा सकते हैं, पर भारत के अस्तित्व पर आंच आने नहीं दे सकते।

हमारा धर्म, कर्त्तव्य, नीति, लक्ष्य केवल एक है कि हम देश की एकता बचायेंगे। देश से साम्प्रदायिकता मिटायेंगे और देश का इतिहास किसी को भी खून से नहीं लिखने देंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद पर कुरान का हमला

हिन्दू नेता अपनी कायरता छोड़ें अन्यथा देश समाप्त हो जाएगा। परिस्थितियां जिस तेजी के साथ बदल रही हैं, उनमें अब एक प्रतिशत भी यह संशय नहीं रह गया कि कुरान के मानने वालों ने वेद और वैदिक संस्कृति को मिटाने का संकल्प कर लिया है। वेद और वैदिक युग के सारे परम्परागत इतिहास वेद के विज्ञान और दर्शन को समाप्त करने के लिए योजनाबद्ध ढंग से चला जा रहा है। अरब से आया हुआ धन इस्लाम के मानने वालों का उत्साह हर संभव उपाय से वेद और गीता पर प्रहार करता जा रहा है। बांटने की राजनीति, अलगाव की आग विघटन का षड्यन्त्र सब कुछ एक साथ चल रहा है और हिन्दू नेता खड़े तमाशा देख रहे हैं। देखत रहिये तमाशा। जब सब कुछ जल जाएगा और बाजी हाथ से निकल जाएगी, तब क्या होगा? जब मन्दिरों से अजान गूंजेगी, तब क्या होगा? हम तो जब ऐसी कल्पना करते हैं तो मन कांपने लगता है। पाकिस्तान में हमारे मन्दिर थे, उनका क्या हुआ? बंगला देश के हिन्दुओं का क्या हुआ? क्या मरना और पिटना ही हमारी नियति है।

जीवन एक संघर्ष है, लेकिन इस संघर्ष में विजय उन्हें मिलती है, जो अपने अधिकारों की रक्षा के लिए मरना जानते हैं। घर बैठे कोई व्यक्ति विजय के डंके नहीं बजा सकता। विजय केलिए मैदान में आना पड़ता है और मौत से दो दो हाथ करने पड़ते हैं।

मेरा प्रश्न है कि क्या वह समय नहीं आ गया, जब हम उन लोगों को जिन्होंने हमारे वेद, गीता और धर्मशास्त्रों पर प्रहार किया है, पाठ पढ़ाने के लिए दृढ़ हो जाएं। भारत की एकता और अखण्डता पर चोट करने वालों को जीवित रहने देना हमारी दृष्टि में इतना बड़ा अपराध है कि उसे क्षमा नहीं किया जा सकता। शासन तमाशा देख रहा है, जनता आलस्य में पड़ी है, हिन्दू नेता आलस्य में या स्वार्थ में डूबे अपनी मौत के सामान जुटा रहे हैं। भाषण से अधिक वे कुछ करने के लिए तैयार नहीं बात तब तक नहीं बनेगी जब तक हम सिर पर कफन बांधकर मैदान में आ कर दो-दो हाथ करने के लिए तैयार नहीं होंगे। आप में से कोई क्या सोचता है, यही चिन्तनीय और यही विचारणीय भी है।

—**राकेशरानी**

प्रेस लगाने व हिन्दू संगठन के लिए अधिक से अधिक धन भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

— वेदभिक्षुः

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ —

मरघट में शहनाइयां न बजाओ

जीवन केवल एक कल्पना है, क्योंकि लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए मैं पंगु हो चुका हूं। साधनों के अभाव ने मेरी महती कल्पनाओं पर रोक लगा दी है, इसलिए मैं मरना चाहता हूं।

तुम अपने में व्यस्त, राष्ट्र-धर्म-भावना को भूल केवल अपनी सज्जा में लीन, बोलो मैं किसे पुकारूं ? किसे कहूं कि कुछ ऐसा करो कि कुछ नया हो जाए। पर हीनता की भाषा परिभाषा खोज रही है।

इतनी बड़ी धरा पर कौन है मेरा, बिल्कुल मेरा, जो मुझमें आत्मसात हो सके। मेरे चिन्तन तो गीत के भरोसे बैठे किसी की मनुहार करना चाह रहे थे। पर मैंने तो ठोकरें ही खायी हैं, अपनों से, परायों से, मित्र से शत्रु से। फिर तुम ही बताओ मेरे जीवन का क्या उपयोग।

काल की मारक रेखा मेरी निर्देशिका नहीं बन सकती। मेरा दर्द किसी की आहों का सर्द धुंआ भी तो नहीं हो सकता। तुम जो भी सोचते हो वह ठीक है पर मेरे ठीक को तुम नया रूप कैसे दे पाओगे ?

पूंजी, शक्ति, साधना सब तुम्हारे पास होगी, पर मेरे पास तो केवल प्यार है, ठुकराया हुआ प्यार··· जो अपनी अणिमा को बिसार धार से दूर काल की वीणा बजा रहा है।

मेरे प्राणों के सरगम गीत नहीं—महानाश के डमरू का आरंभ करना चाहते हैं—पर क्या तुम में इतनी शक्ति है ?

समय के चक्र में सभी चक्कर देना चाहते हैं। मुझे विक्षिप्त सिद्ध करना चाहते हैं। किसी का स्नेह मुझ पर झरता नहीं। क्रांति के लिए कोई मरता नहीं। तुम ही बताओ मैं क्या करूं ?

मैं सब कुछ सहूंगा, पर अपने गीत नहीं छोड़ूंगा। मेरे मन का स्पंदन तुम्हारी भाषा नहीं सुनेगा, पर यह न भूलो समय आएगा, जब मेरे सत्य को धरती प्रणाम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करेगी। मैं तब अमर बनकर ध्रुव तारे के समीप विश्राम करूंगा।

और तब सभी कहेंगे वह महान् था पर तब मैं कुछ कर न सकूंगा।

हिन्दू संघ के सदस्य

हिन्दू का एक सुदृढ़ संगठन गठन की दृष्टि से हमने हिन्दू संघ के एक करोड़ सदस्य बनाने का आवाहन किया था।

हमारी इच्छा थी कि १) वार्षिक देने वाले एक करोड़ सदस्य यदि बन जाएं तो हम में आत्म विश्वास जागेगा और हिन्दू राज्य स्थापना का मार्ग प्रशस्त होगा।

१) में ५० पैसे आप अपने नगर में व्यय करेंगे ग्रौर ५० पैसे दिल्ली केन्द्र को कार्यालय व्यय के लिए भेजेंगे। इन ५० पैसों में से १० पैसे प्रति फार्म अग्रिम भेजने होंगे और शेष राशि बाद में।

१) देने से कोई भी हिन्दू इन्कार नहीं करेगा। अतः सभी कार्य-कर्त्ताओं व समितियों से आग्रह है कि वे इस कार्य में जुट जाएं।

साहित्य प्रचार। सम्मेलन आदि भी अपने क्षेत्र में आयोजित करें, हम जहां आवश्यकता होगी वहां रुग्ण होते हुए भी आएंगे।

बातें नहीं काम,
काम, रचनात्मक काम
ही हिन्दू राज्य की
स्थापना करेगा।
हम यह न भूलें।

ग्रार्य समाज का नेता कौन ?

क्या हम भविष्य को नया सन्देश देने के लिए तैयार हैं ? क्या हम वर्तमान की चुनौती स्वीकार करेंगे ?

यह प्रश्न ३-६ नवम्बर तक तक अजमेर में होने वाले शताब्दी समारोह के आयोजकों से पूछना चाहते हैं।

अभी तक तो यह भी पता नहीं चला कि इस समारोह का नेतृत्व कौन करेगा। पार्टी बाजी, स्वार्थ, धन लिप्सा और पूर्वाग्रहों को छोड़कर कौन चलेगा ? दयानन्द की राह पर—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रैस अभी तक भी नहीं लग सका

हम देश के प्रबुद्ध नागरिकों को सहयोग के लिये पुकारते हैं। हमारी इच्छा है कि देश का भाग्य बदलें। सफलता भी मिल रही है और हिन्दू के नाम पर बड़े-बड़े राजनेता अब वास्तविकता को समझते जा रहे हैं।

भारत को हिन्दू गणराज्य बनाने के लिए हमें आवाज उठानी है। पर आवाज उठाने के साधन तो आपको जुटाने हैं।

इस समय हमें आपका सहयोग चाहिए। कम से कम नहीं, अधिक से अधिक, हमें बहुत कुछ करना है। सब कुछ तो कह भी नहीं सकते।

आपकी सहायता हमें निरन्तर चाहिए। एक बार नहीं, बार-बार चाहिए। प्रतिमाह चाहिए। प्रैस के लिए तो बहुत अधिक चाहिए। क्या सोचते हैं आप। सहयोग दीजिए इसलिये कि हम तेजी से दौड़ सकें, आपके लिये, देश के लिए, धर्म के लिए।

सहयोग मत दो।

आप बहुत बुद्धिमान हैं। केवल अपना स्वार्थ देखते हैं, देखना भी चाहिए, इसलिए हम कहते हैं कि हमें सहयोग मत दीजिए क्योंकि हम तो केवल आदर्श के लिए पागल हैं, जिससे कोई लाभ होने वाला नहीं। संपूर्ण जीवन लग गया, जीवन के अन्तिम क्षणों में, एकान्त में सोचने के लिए बाध्य हैं कि आखिर हम कहां खड़े हैं?

लोग कहते हैं कि सुधार का ठेका व्यर्थ है। जो मरता है मरने दो, जैसा करता है करने दो, तुम कौन होते हो किसी को कुछ कहने वाले···क्या अधिकार है तुम्हारा·· तुम पागल हो, सोचती हूं शायद आप ठीक हैं और हम भटके हुए। व्यक्ति जीवन के संघर्षों में जीतते रहे, जूझते रहे, कभी झुकना नहीं सीखा, पर आज तो यह अनुभव होता है कि हम बुरी तरह टूट चुके हैं।

२४ जून से आज २५ अगस्त तक, ज्वर में पड़ा हूं। देह दुर्बल हो गयी और देह के साथ मन भी दुर्बल हो रहा है, कोई सोचने वाला नहीं, साथ देने वाला नहीं, स्वार्थ-स्वार्थ-स्वार्थ युग धर्म है। इसलिए मैं कहता हूं युग धर्म का उल्लंघन मत करो।

सत्य को रोते हुए देख रहा हूं। झूठ पैर पसार बढ़ रहा है। मुझे उपदेश मिलता है समझौतावादी बनो··· मैं कैसे बन जाऊं—कैसे छोड़ दूं सारे जीवन का पाठ। राह मिलती नहीं। इसलिए सोचता हूं कि राह बदलने से मर जाना उसमें···जीने का परित्याग भी क्या है···?

एक टूटा हुआ तारा, एक बुझता हुआ, दीपक एक जलता हुआ जीवित सपनों की भाषा नहीं जानता, मृत्यु का स्वागत आसान है जीने की राह कठिन इसलिए जो आसान है वही स्वीकार है।

बहुत कुछ सोचा था, पर किसी का सोचा कब पूरा हुआ है। संघर्ष ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन है। जीवन ही संघर्ष है। पर कितने हैं जो जीवित हैं · जीते हुए भी अपने को भुला देना मृत्यु नहीं तो क्या है ?

हिन्दू राष्ट्र की बात फैल रही है हमारे सपने आकाश से उतर व्यक्तियों के मन-मस्तिष्क पर छा गए हैं। मुझे हर्ष है कि हमारी कल्पना सत्य सिद्ध हो रही है। ६० करोड़ देश भक्त अब इस्लामी-ईसाइयत के जहर से टकराने की बात सोचने की ओर बढ़ रहे हैं।

मेरा देश स्वतन्त्र हुआ था पर स्वराज्य स्थापित होकर भी अधूरा रहा। भूखी जनता, भटकते राजनेता, भौतिकता की आंधी और सर्वनाश की छाया फैलती जा रही है।

किन्तु आने वाला कल राम-कृष्ण-गौतम-कणाद्, के सपनों को साकार करेगा, यह मेरा विश्वास है। मैं जानता हूं कि मेरे देश की धरती का पावन जल-माटी, गंगा के गीतों की अमर गाथा बन युग की वाणी को साकार झकझोरेगी।

जीवन में झुकना अपराध है। आदर्शों को साथ लेकर चलने में यदि जीवित भी जलना पड़े तो हम मरकर भी नहीं मरेंगे। हमारे शब्द को आज आप ठुकरा दें पर भविष्य उनको मूर्त रूप देगा। युद्ध-घृणा, द्वेष धरती पर रहें, यह सम्भव नहीं, इसलिए आप आज भले ही हमें उपेक्षित कर दें, कल आपको तैयार करनी है। अमर गीत गाने होंगे।

बहुत कुछ सोचा था, सपने भी देखे थे, पर आज आप की उपेक्षा मेरे सपनों को धूमिल भले ही कर दे पर मेरी चिता का एक-एक कण भारत के गौरव गीतों को युगों तक गाता धरती को एकता के सूत्र में आबद्ध करेगा।

आप स्वतन्त्र हैं अपनी राह के लिए मैं स्वतन्त्र हूं निज चाह के लिए। आप असहयोग कर दें तब भी झुकूंगा नहीं, राह बदलूंगा नहीं···यह मेरा अटल विश्वास है। मैं संकल्पबद्ध हूं··· विजय के लिए। ग्राम—नगर—महा-नगर की छाया में प्रतिबद्ध होकर हम सफलता के लिए संघर्ष करेंगे। जीवन की अन्तिम सांस तक भी अज्ञान के विरुद्ध हमारा युद्ध जारी रहेगा। आप कुछ भी सोचें पर हमारा चिन्तन हमें कुछ और सोचने ही नहीं देता, इसलिए आज रोगी काया से, दुर्बलमन से··· यह सब लिख रहा हूं।

धरती के सभी धर्म स्थानों पर 'ओ३म्' पताका फहराने का सपना आज मेरा है, तो कल आपका होगा। आसुरी शक्तियों से टकराने की बात आज मैं कहता हूं तो कल आप कहेंगे। हम जिएंगे भी, मरेंगे भी, चलेंगे भी बढ़ेंगे भी, पर याद रखिए हम झुकेंगे नहीं, मरना स्वीकार पर राह बदलना स्वीकार नहीं।

जो हमारे भावों से सहमत नहीं वे सहयोग न दें। जो हमारी भाषा में सोच सकें वे आशीर्वाद दें कि हम राह बदलें नहीं, झुकें नहीं।

और कोई चाह अब शेष नहीं है।

—वेदभिक्षु:

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी के रहते कैसे हम स्वाधीन हैं ।
अपना सर्वस्व लुटाकर, सब बने हीन हैं ।।
जब हिन्दी के प्रारब्ध में प्रतिष्ठा नहीं होगी ।
इस धरती पर जीवन की भाषा नहीं होगी ।।

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान [मासिक]

के

आजीवन सदस्य बनकर

आगे बढ़ने में
सहयोग दीजिए।

अपने मित्रों-परिचितों को भी आजीवन सदस्य बनाइए।

आज ही आप ५०१) भेजिए।

यह मेरी प्रार्थना है।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंडिता राकेशरानी पर २३ मुकद्दमे चल रहे हैं ।

यह सम्पूर्ण हिन्दू समाज के लिए एक चुनौती है ।

चुनौती का उत्तर देना है तो संग्रह करके या अपने पास से तुरन्त अधिक से अधिक धन भेजें ।

जो अधिक न भेज सकें वे इन पंक्तियों को पढ़कर

एक रीम कागज का मूल्य १२५) तो अवश्य ही भिजवायें ।

आप काम नहीं रुकने देंगे, इसी विश्वास से आपको पुकार रहा हूं ।

—वेदभिक्षु:

अध्यक्ष
अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

प्रेस लगाने के लिए उदारतापूर्वक दान दें ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा आनन्द स्वामी उवाच

एक वकील की बात सुनाता हूं आपको। वकील साहब कभी-कभी सत्संग में जाते थे। उनका सात वर्ष का बच्चा भी साथ जाता था। वहां एक बार एक आदमी ने एक बार गाना गाया, 'कड़वे बोल न बोल रे भाई!' बच्चे को यह गाना अच्छा लगा। उसने याद कर लिया। जब कभी उसको समय मिलता, तब वह इस गीत को गाता फिरता— 'कड़वे बोल न बोल।'

एक दिन वकील साहब और उनकी धर्मपत्नी में हो गई अनबन; रूठ गये दोनों। कई दिन बीत गये। एक दूसरे से बोले नहीं। परन्तु पति-पत्नी कब तक रूठे रहें! पति के मन में बार-बार आए कि वह मान जाए, पत्नी के मन में भी आये, परन्तु दोनों की यह इच्छा कि पहल दूसरा करे। पति दफ्तर से आते अपने कमरे में जाकर बैठे रहते। पत्नी खाना बना कर नौकर के हाथ भेज देती। पहल होने में न आती एक दिन वकील साहब दफ्तर से आए, अपने कमरे में चले गए। इनके कमरे में आकर गाना शुरू किया—"कड़वे बोल न बोल!"

वकील साहब के हृदय में एक आशा जाग उठी। बच्चे से बोले—"बेटा! यह गीत अपनी माँ के कमरे में जाकर गा!"

बच्चा मां के कमरे में गया। वहां जाकर गाने लगा—"कड़वे बोल न बोल।"

मां ने कहा—"यहाँ क्या गाता है, जा, अपने पिता जी के कमरे में जाकर गा!"

बच्चा फिर पिता जी के कमरे में पहुंचा; बोला—"कड़वे बोल न बोल!"

पिताजी ने कहा—"अरे! तुझे मां के कमरे में जाकर गाने को कहा था। वहीं जाकर गा!"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बच्चा फिर माँ के कमरे में पहुंचा : मां ने कहा—'अरे ! तुझे पिता जी के कमरे में जाने के लिए कहा था । जा, वहां जाकर गा !"

बच्चे ने दोनों कमरों के बीच में जाकर कहा—"तुम दोनों तो मुझे गाने नहीं देते । मैं अब यहां खड़ा होकर गाऊँगा ।" वह गाने लगा... "कड़वे बोल न बोल रे भाई, कड़वे बोल न बोल !"

पिता और माता दोनों ने बच्चे की भोली बोली को सुना। दोनों हँस पड़े । हंसी के इस फव्वारे में क्रोध की दीवार टूट गई । दोनों बच्चे के पास आ गए; एक दूसरे की आंखों में देख कर हंसते हुए बोले... कड़वे बोल न बोल !" घर में मुस्कराहटें चमक उठीं, क्रोध के बादल टुकड़े हो गए । रोशनी जाग उठी ।

यह है सत्संग का चमत्कार ! जादू यह सत्संग ! एक छोटे-से बच्चे को वह ऐसी शक्ति दे देता है कि बड़े-बड़ों की भूल को सुधार दे । सन्नाटे को कहकहों में बदल दे ।

तुलसी मीठे वचन से,
सुख उपजत चहुं ओर ।
वशीकरण यह मन्त्र है;
तज दो वचन कठोर ।।

—o—

राकेशरानी : अपराधी के कटघरे में ।

१८ अगस्त—कल दिल्ली कचहरी में कमरा नं० २० में राकेश रानी के विरुद्ध एक मुकद्दमे की कार्यवाही आरम्भ हुई और मैजिस्ट्रेट ने विचार के लिए १४ दिसम्बर, १९८३ की अगली तारीख डाल दी ।

स्मरण रहे कि इस प्रकार के २२ अभियोग पण्डिता राकेशरानी के ऊपर चल रहे हैं और देश की वह हिन्दू जनता जिसको बचाने की आवाज उठाने पर यह अभियोग चलाए गए हैं, मौन तमाशा देख रहे हैं ।

पण्डिता राकेशरानी ने अपने एक वक्तव्य में कहा कि वह दिन दूर नहीं जब सारे देश के राजनीतिज्ञों को हमारे मार्ग पर चलना होगा और देशद्रोहियों के विरुद्ध कड़े से कड़े सम्भव कदम उठाने होंगे ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सत्यसुमन

श्रीलंका में हिंसक उपद्रव : परिणाम क्या होगा ?

श्रीलंका में खुलेआम व्यापक हिंसा, आगजनी और लूटपाट की घटनाओं ने न केवल उस द्वीप को बल्कि समूचे दक्षिण भारत को हिला दिया है। श्रीलंका की सरकारी सूचनाओं के अनुसार २०० से भी अधिक व्यक्ति अपनी जानें गंवा चुके हैं, जिनमें वे ५३ नजरबंद कैदी भी शामिल हैं, जिनकी हत्या से हिंसक उपद्रव आरम्भ हुए थे। मरने वालों के गैर-सरकारी आंकड़े हजारों में हैं। हजारों व्यक्तियों को गाली-गलौज और मारपीट का शिकार होना पड़ा है। कोलम्बो, गाम्फा, गाले, कालुतुरा, नुवारा एल्या, त्रिन्कोमली, राडुला और कैंडी में भारत से किसी भी तरह से सम्बन्धित हजारों लोगों के कच्चे-पक्के मकान फूंककर उन्हें बेघरबार बना दिया गया है। लगभग एक लाख लोग इस समय शरणार्थियों के रूप में सहायता शिविरों में हैं, जहां खाने-पीने और रहने की न्यूनतम आवश्यकताएं भी पूरी नहीं हैं। विवश होकर श्रीलंका सरकार को भारत से इन एक लाख व्यक्तियों के लिए खाद्य सामग्री और दवाएं मांगनी पड़ी हैं। हजारों लोग अपने घरों से भागकर अपने मित्रों और रिश्तेदारों के पास शरण लिए हुए हैं। कोलम्बो और कैंडी में व्यापारिक प्रतिष्ठान कार्यालय और सजी-सजाई दूकानें जलाकर खाक कर दी गई हैं। यहां तक कि भारतीय उच्चायोग को अपने कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए विशेष प्रबन्ध करने पड़े हैं।

सेना और पुलिस बेकाबू

सबसे अधिक क्लेश की बात तो यह है कि स्थान-स्थान पर श्रीलंका की सशस्त्र सेनाएं भी हमलावरों का साथ दे रही हैं। तमिल संयुक्त मुक्ति मोर्चे के एक ताजा ज्ञापन के अनुसार जाफना में सेना के कर्मचारियों ने ४० व्यक्तियों को गोलियों से भून डाला, जिनमें अधिकतर छात्र, विश्वविद्यालय के प्रवक्ता और कुछ गृहिणियां भी थीं। त्रिन्कोमली बंदरगाह नगर में नौसेना और थलसेना के बगावत पर उतारू जवानों ने सिंहली बदमाशों के साथ मिलकर २०० से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिक घरों और दूकानों को जला डाला। एक शिवमन्दिर और कुछ अन्य हिन्दू मन्दिरों को क्षति पहुंचाई गई। कोलम्बो में व्यापारिक प्रतिष्ठानों, दूकानों और दफ्तरों को लूटे जाते समय सेना के जवान खड़े देखते रहे और पुलिस कर्मचारियों ने तो लूटपाट और आगजनी में कई मामलों में हिस्सा लिया। 'तमिल संयुक्त मुक्ति मोर्चे' के अध्यक्ष को मिली धमकियों के बारे में पूर्व चेतावनी दिये जाने पर भी पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की और अध्यक्ष का घर और कार जलाकर राख कर दिये जाने के कई घंटे बाद ही पुलिस के जवान घटनास्थल पर पहुंचे।

भारत में गहरी चिन्ता

भारत में इन सभी घटनाओं पर गहरी चिन्ता और तीव्र प्रतिक्रिया स्वाभाविक ही थी। यह केवल एक पड़ौसी देश का आंतरिक मामला नहीं था। यह श्रीलंका की कुल जनसंख्या के छह प्रतिशत तमिलभाषियों की सुरक्षा का सवाल था, जो वहां ब्रिटिश काल से रह रहे हैं और जिनके मित्र—सम्बन्धी सारे तमिलनाडु में बिखरे हुए हैं। यह शास्त्री-सिरीमावो समझौते के उल्लंघन का भी सवाल था, जिसके अनुसार कुल पन्द्रह वर्षों की अवधि में दोनों देशों में लगभग सवा दस लाख लोगों को पुनः बसाया जाना है और उनकी नागरिकता का मसला हल किया जाना है।

चेतावनी देने वाली प्रारम्भिक घटनाओं के बाद श्रीलंका में स्थिति खतरनाक हो जाने का पता तब चला, जब प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने २८ जुलाई को राष्ट्रपति जयवर्धन से टेलीफोन पर बातचीत की और विदेशमन्त्री श्री नरसिंह राव को स्थिति का जायजा लेने के लिए कोलम्बो भेजा। हालांकि उससे पूर्व ही उपद्रवों में सौ से अधिक तमिलभाषियों के मारे जाने और श्रीलंका के सभी बड़े शहरों में कर्फ्यू तथा सेना की गश्त की खबरें छप चुकी थीं। पश्चिम जर्मनी की समाचार एजेंसी डी० पी० ए० ने ३०० से अधिक तमिलों की हत्या और ८० हजार से अधिक के बेघरबार होने की खबर दी थी। २८ जुलाई से ही संसद् में इस विषय पर ध्यानाकर्षण प्रस्ताव और अन्य तरीकों से चर्चा तथा संसद् से बाहर श्रीलंका उच्चायोग पर धरने और प्रदर्शन का सिलसिला चला, जो लगातार जोर पकड़ता चला गया। कोलम्बो में श्री राव ने श्री जयवर्धन से लगभग ६० मिनट तक बातचीत की और हेलीकाप्टर से कैंडी क्षेत्र का दौरा भी किया। लेकिन श्री राव के श्रीलंका में होते हुए भी कोलम्बो में हिंसा की और अधिक उग्र घटनाएं हुईं। गृह मंत्रालय के सचिव श्री डगलस लियागें ने श्रीलंका रेडियो पर स्वीकार किया कि हिंसा की नई वारदातों में ३३ से अधिक लोग मारे गए और ३०० लुटेरे गिरफ्तार किये गए। पन्द्रह लुटेरों को ऐन मौके पर गोली मार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देनी पड़ी। कर्फ्यू ने घरों में बन्द लोगों का जीना दूभर कर दिया।

स्थिति आरम्भ से ही श्रीलंका सरकार के नियन्त्रण से बाहर रही या उसकी जानबूझ कर उपेक्षा की गई, इस बारे में परस्परविरोधी रिपोर्टें मिली हैं, लेकिन यह बात साफ है कि श्रीलंका सरकार स्थिति का समय रहते पूरी तरह मुकाबला नहीं कर पाई। जाफना में सैनिकों ने अपने १३ साथियों की आतंकवादियों द्वारा हत्या का बदला सरेआम युवकों की हत्याएं करके लिया और पुलिस अधिकारी कुछ भी न कर पाए। भारतीय उच्चायोग के कर्मचारियों के घरों पर हमले किये गए। कर्फ्यू और सेना की गश्त के बावजूद जाफना, कैंडी और कोलम्बो में हमले और लूटपाट होती रही। कड़ी सेंसरशिप के कारण लोगों को सही खबरें नहीं मिल पाईं और आतंक फैलता गया। दंगे आरम्भ होने के चार दिन बाद राष्ट्रपति जयवर्धन दूरदर्शन पर दिखाई दिये और तमिलभाषियों को सुरक्षा का आश्वासन देने की बजाय उन्होंने पृथक्तावादी आन्दोलन को कानून बनाकर कुचल देने की चेतावनी दी। उनके कहने का सीधा-सादा अर्थ यह था कि तमिल संयुक्त मुक्ति मोर्चे का मुंह बन्द कर दिया जाएगा और उससे सम्बद्ध तमिल एलियम या तमिल टाइगर्स उग्रवादियों को सख्ती से कुचल दिया जाएगा।

दंगे से प्रभावित लोगों को कोलम्बो से निकालने और उन्हें सुरक्षित तमिल-बहुल नगर जाफना पहुंचाने के लिए भी श्रीलंका सरकार कुछ विशेष नहीं कर पाई, अतः उसे भारत से एक यात्री जहाज उपलब्ध कराने का अनुरोध करना पड़ा। शरणार्थी शिविरों की खराब हालत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि श्रीलंका सरकार को भारत से खाद्य सामग्री और दवाएं मांगनी पड़ी हैं।

राजनैतिक उलटफेर

इस बीच राजनैतिक स्तर पर भी घटनाएं तेजी से घटीं, जिनसे श्रीलंका सरकार के रुख और रवैये का पता चला। तीस जुलाई को सरकार ने आपात अधिकारों का प्रयोग करते हुए तीन वामपंथी दलों पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगा दिया। ये दल हैं श्रीलंका की कम्युनिस्ट पार्टी, जनता विमुक्ति पेरामुना (लोक-मुक्ति मोर्चा) और नवलंका समसमाज पार्टी (सोशलिस्ट)। इसके साथ ही सरकार ने संविधान में संशोधन करने का प्रस्ताव रखा, ताकि सबसे बड़े सिरदर्द तमिल संयुक्त मुक्ति मोर्चे को पृथक्तावादी करार कर समाप्त किया जा सके। ताजा समाचार के अनुसार श्रीलंका के सर्वोच्च न्यायालय ने भी इसकी अनुमति दे दी हैं, जिसके बाद श्रीलंका की संसद् ने ५ अगस्त को संविधान संशोधन विधेयक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पारित कर दिया। इससे स्थिति शांत होने की बजाय और भड़कने की आशंका है।

इधर जबकि श्रीलंका के विदेशमन्त्री श्री ए० सी०एस० हमीद नई दिल्ली में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग सम्मेलन में मैत्री और भाईचारे की बात कर रहे थे, श्रीलंका में भारत-विरोधी भावनाएं भड़काई जा रही थीं। श्रीलंका के नियंत्रित प्रचार माध्यमों ने तमिलों के सामूहिक नरसंहार की बात नजरअंदाज करते हुए आरोप लगाया कि श्रीलंका के आंतरिक मामलों में भारत का हस्तक्षेप अन्य देशों के लिए भी चिन्ता का विषय बना हुआ है। एक प्रमुख समाचारपत्र ने राष्ट्रपति जयवर्धन की यह टिप्पणी प्रकाशित की कि यदि भारत ने हम पर आक्रमण किया तो हम अन्त तक लड़ेंगे और चाहे हार जाएं, लेकिन शान से हारेंगे। इसके साथ लगती हुई यू० पी० आई० के सम्वाददाता की खबर आई, जिसमें कोलम्बो के लोकप्रिय पत्र "सन" को उद्धृत करते हुए कहा गया था कि श्रीलंका सरकार ने अमेरिका, ब्रिटेन, पाकिस्तान और बंगलादेश से सैनिक सहायता मांगी है, ताकि बाहरी आक्रमण की स्थिति से निपटा जा सके।

भारत सरकार की संयत नीति

हालांकि श्रीलंका सरकार ने इन खबरों का खंडन कर दिया है, जिस पर श्री राव ने संसद् में एक बयान भी दिया, लेकिन कड़वाहट अभी भी बनी हुई है। श्री राव ने इस बयान के दौरान विदेशी शक्तियों को श्रीलंका में वर्तमान अशांति से दूर ही रहने की चेतावनी दी है, जो स्थिति को देखते हुए बहुत ही उपयुक्त कही जा सकती है।

तनाव के बावजूद स्थिति सामान्य होती जा रही है। श्री जयवर्धन तमिल उग्रवादियों से इस शर्त पर बातचीत के लिए राजी हो गए हैं कि वे हथियार डाल दें। उन्होंने आतंक विरोधी कानून और उत्तरी क्षेत्र से सेनाएं हटा लेने और आम क्षमादान की बात भी कही है। तमिल समस्या पर विचार के लिए उन्होंने एक सर्वदलीय सम्मेलन भी बुलाया है।

उम्मीद की जानी चाहिए कि भारत-श्रीलंका सम्बन्धों में कोई बिगाड़ पैदा नहीं होगा और भगवान् बुद्ध के सन्देशों से प्रभावित श्रीलंका की प्राचीन भूमि पर तमिल और सिंहली शांतिपूर्वक मिल-जुलकर रह सकेंगे।

प्रेस के लिए व्रत

रखकर भी सहायता दें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्वर्गीय स्वामी अमृतानन्द (यमुनानगर)

सिख विद्वानों की सेवा में

वेद की शिक्षा मनुष्य मात्र के लिए है। वेद की पहली शिक्षा यह है कि मनुष्य सत्य ज्ञान को प्राप्त करे और उसके अनुकूल अपना आचरण बनाता चला जाए। वेद की दूसरी शिक्षा यह है कि संसार भर के मनुष्य अधिक से अधिक प्रेम करें, कोई भी किसी दूसरे प्राणी को कष्ट न दे। सब मनुष्य सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें। ऋग्वेद में मनुष्यमात्र को उपदेश है कि तुम्हारा इरादा एक हो, तुम्हारे उद्देश्य एक हों, तुम्हारा मन एक हो, जिससे तुम्हारा शुभ मेल सदा बना रहे। कहा भी है कि —

विद्वानों का एक मत, मूर्ख अलग संलग।

गुरु गोविन्दसिंह जी ने भी कहा था—

एक मजहब (मत) रहना भला, दो में रहे न कोय।
मेरा सिख कहाय के, भ्रमे पापी होये। (सूर्यप्रकाश)

परन्तु इस समय कई गुरु सिख लिखते और कहते हैं कि सिख पन्थ का वैदिक धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। सिख पन्थ अलग सम्प्रदाय है। परन्तु सचाई यह है कि सिख गुरुओं की विचारधारा वैदिक धर्म के अति समीप है।

१. जिन धार्मिक सिद्धान्तों का आदि मूल परमात्मा है और जिनका प्रभु ने वेद द्वारा उपदेश किया है, उन सबको सिख गुरुओं ने स्वीकार किया है।

२. जिस प्रकार ऋषि दयानन्द जी ने धर्म प्रचार किया, जैसे वे मत मतान्तरों के विरुद्ध थे, उसी प्रकार गुरु नानक आदि ने भी मतों का निषेध करके वैदिक सत्य धर्म का प्रचार किया था। दोनों महापुरुष मानो एक ही पथ के पथिक थे। ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि मत मतान्तरों के जो परस्पर झगड़े हैं, उनको मैं पसन्द नहीं करता, वेदों में जो सर्व सत्य है उसी का प्रचार करके सबको एक मत में ला, सबको सुख-लाभ पहुंचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। इसी प्रकार दशम गुरु विचित्र नाटक में लिखते हैं—

जो कोई होत भयो जग सियाना।
तिन तिन अपनो पन्थु चलाना ।।१४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परम पुरुष किन्हूं नहीं पायो ।
वैर वाद अहंकार वढ़ायो ॥१५

फिर कहा—

हम एह काज जगत मों आये।
धर्म हेतु गुरु देव पठाये ॥
जहां तहां तुम धर्म विथारो ।
दुष्ट दोखीयन पकर पछारो ॥४२
या ही काज धरा हम जन्मम।
समझ लेहो साधु सभ मन मम ॥
धर्म चलावन सन्त उबारन ।
दुष्ट सभन को मूल उपारन ॥ ४३

अर्थात् जो जरा चालाक हो गया, उसने अपना अलग पन्थ चला दिया। इनमें से किसी ने परम पुरुष परमात्मा को नहीं समझा। केवल आपस में लड़ाई-झगड़ा और अभिमान वढ़ाते रहे। हमें गुरुदेव परमात्मा ने इसलिए संसार में भेजा कि आप सब जगह वैदिक धर्म का विस्तार करो; दुष्ट और दोषी मनुष्यों को पछाड़ दो, हमारा यही जीवन उद्देश्य है। ऐ भले मनुष्यो ! मन में निश्चय जान लो कि हम धर्म प्रचार करने, संतों की रक्षा और दुष्टों की जड़ें उखाड़ने को आए हैं।

इससे साफ सिद्ध है कि दसों सिख गुरु और ऋषि दयानन्द जी धर्मप्रचार में एक ही मार्ग के मार्गगामी थे। दोनों ही अपना उद्देश्य वेदोक्त धर्म प्रचार मानते थे।

वेद में लिखा है कि—

"नान्य: पन्था विद्यते अयनाय"

अनन्त सुख की प्राप्ति, मोक्ष या मुक्ति का एक ही रास्ता है—दो नहीं।

गुरु अर्जुनदेव ने भी कहा—

इका बाणी इक गुरु एका शव्द विचार।

अर्थात् एक ही वेद वाणी है और इसका प्रकाशक परमात्मा भी एक और शव्द या सत्य ज्ञान और विचार भी एक या सत्य है।

गुरु नानक देव जी ने कहा—

आदि सच, जुगादि सच, है भी सच, नानक होसी भी सच।
अर्थात् सचाई हर समय एकरस रहती है, बदलती नहीं।

सच पुराणान थिए, नाम न मैला होय

सचाई पुरानी नहीं होती और नाम या परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव सदा उजले रहते हैं, किसी समय मैले या गलत नहीं होते। शेख इब्राहीम ने गुरु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नानक देव जी से प्रश्न किया कि—

इक साहिब ते दो हद्दीं, केहड़ो सेवीं ते केहड़ी रद्दीं

तो गुरु जी ने उत्तर दिया कि—

इक साहिब ते इको हद, एक सेव ते दूजा रद।

अर्थात् ईश्वर एक है तो उसकी हद, ज्ञान या न्याय नियम भी एक है, इसलिये एक [वेद धर्म] का सेवन करो और दूसरे या उलट को या वेद विरुद्ध को रद्द करो या त्याग दो।

दशम गुरु जी ने जाप साहिब में कहा—

ओंकार आदि, कथनी अनादि।

अर्थात् ओंकार सब विद्याओं का आदि मूल है। उसकी कथनी, वाणी या सत्य ज्ञान वेद अनादि है।

परन्तु गुरु जी ने बड़े दुःख से कहा कि—

ठोर ठोर नव मत चले उठा धर्म का दौर,
सुकृत जहें तहें दूर रही, पाप भयो सिरमोर।

अर्थात् आज देश में जगह-जगह नवीन मत चल पड़े हैं, जिनके कारण शुभ कर्म दूर हो गए हैं और पाप सिरमौर या नेता बन गया है।

पेड़ पात आपन ते जले, प्रभु के पन्थ न कोऊ चले।

अर्थात् धर्म का पेड़ अपने ही पत्तों या गलतियों से जलने लगा है। प्रभु के पन्थ पर या वेद मार्ग पर लोगों ने चलना छोड़ दिया है।

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हो गया कि हम सब मनुष्य भाई-भाई हैं। हमारा एक ही पन्थ या एक ही धर्म है।

इसलिए सिख विद्वानों का सिख पन्थ को वेद मार्ग से अलग मानना गुरुओं पर मिथ्या दोष लगाना है।

अब हमारा सिख जगत् से पहला प्रश्न यह है कि दसों गुरु एक सचाई, एक धर्म या एक सत्य ज्ञान वेद वाणी को मानते हैं, तो आपका यह कहना कि गुरुओं ने अलग खालसा पन्थ निर्माण किया था और इसके सिद्धान्त सबसे अलग और निराले हैं, कैसे सच हो सकता है ?

वेद की एक सूक्ति है—

"पतिरेक आसीत्"

अर्थात् संसार भर का एक ही पति, स्वामी या उपास्य देव है।

गुरु नानकदेव जी ने भी कहा था—

एक ओंकार सत नाम, कर्ता पुरुष, निर्भो, निरवैर,
अकाल मूरत, अजूनी सैभंग गुरु प्रसाद।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् परमात्मा एक है, जिसका मुख्य नाम ओंकार है, जिसका नाम या गुण कर्म स्वभाव सत्य हैं, जो सृष्टि का कर्त्ता और सर्वव्यापक है, जिसे किसी का डर नहीं और न किसी से वैर है। वह काल से रहित और अमूरत है या उसका कोई रंगरूप शकल या तोल माप नहीं। वह जन्म-मरण से रहित और स्वयं प्रकाश स्वरूप है और असीम कृपासागर है।

यह गुरु वाक्य ग्रंथ साहिब में ५६७ बार आया। इसे सिख धर्म का आदि मूल भी कहा जाता है और यह सारे का सारा वेदानुकूल है। आगे कहा—

एको रब रहिया सभ ठाई। अवर न दोसे किस पूज चढ़ाई।

(प्रभाती म० १)

अर्थात् वह एक प्रभु सब जगह रम रहा है। उसके ऊपर या उससे बड़ा और कोई दिखाई नहीं देता। फिर हम किसी दूसरे की क्यों और कैसे पूजा, उपासना या भक्ति करें?

हरि की तुम सेवा करो, दूजी सेवा करो न कोई जी।

(गुजरी म० ३)

गुरु अमरदास जी ने कहा कि केवल एक ईश्वर की भक्ति करो और किसी की उपासना न करो—

सदा सदा सो सेविये, जो सभ में रहा समाई।
अवर दूजा क्यों सेविये, जो जम्मे ते मर जाई॥

(गुजरी की वार)

अर्थात् सदा उसी एक परमात्मा की उपासना करो, जो सब में और सब जगह व्यापक है। उसको छोड़ दूसरों की पूजा या भक्ति न करो जो जन्म लेते और अन्त में मर जाते हैं।

स्वतन्त्र भारत के इतिहास में

शासन ने मुझ पर २३ अभियोग चलाकर हमें हमारी देशभक्ति का पारितोषिक दिया है।

राष्ट्र के इतिहास को नया मोड़ देने के लिए
आप हमारे हाथ मजबूत कीजिए।

बातें नहीं, प्रशंसा नहीं, सहयोग दीजिए।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रो० राजवीर सिंह

गुरुओं का अपमान किया है

धर्म बचाने को आये तुम, देश बचाने को आये तुम।
हंसते-हंसते बलिवेदी पर शीश चढ़ाने को आये तुम।।
किन्तु आज लगता है तुम्हारा व्यर्थ सभी बलिदान गया है।
खालिस्तान मांग कर तुमने गुरुओं का अपमान किया है।।

[१]

भूल गये नानक की वाणी, तेग बहादुर जी का पानी।
गुरु गोविन्द सिंह के चारों, सिंह सपूतों की कुर्बानी।।
भूल गये हुंकार कि जिसने असुरों का शासन दहलाया।
भूल गये तलवार कि जिसने लुटता हिन्दू धर्म बचाया।।
ऊधम सिंह की राष्ट्र साधना सुबक-सुबक कर पूछ रही है।
भगत सिंह की पुण्य आत्मा बिलख-बिलख कर पूछ रही है।
हमने जो बलिदान किये, तुम उनको क्यों नीलाम कर रहे।
गुरुओं के पावन मन्दिर को बोलो क्यों बदनाम कर रहे।।
राजनीति का भूखा अजगर कहीं देश को निगल न जाये।
अलगावी मक्कारों का दल स्वतन्त्रता को न छल जाये।।
सोच-सोच कर फटी जा रही भारत मां की घायल छाती।
देख-देख कर शर्मिंदा है जलियांवाला बाग की माटी।।
अमृतसर-सा पावन आंगन देखो लहू-लुहान हुआ है।।
खालिस्तान मांग कर तुमने गुरुओं का अपमान किया है।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[२]

आस्तीन में काले विषधर रह-रह कर फुंकार रहे हैं।
सीमाओं पर गिद्ध-भेड़िये भारत मां को ताक रहे हैं।।
षड्यन्त्रों में फंसा देश है राजनीति गुल खिला रही है।
राष्ट्र एकता है खतरे में आजादी बिलबिला रही है।
नतमस्तक इतिहास हमारा सिक्खों के जौहर के आगे।
जब भी कदम बढ़ाया तुमने दुश्मन छोड़ मोर्चा भागे।।
बन करके हनुमान् जलादो असुर-शक्तियों की यह लंका।
राज करेगा सिर्फ खालसा, इसमें नहीं तनिक भी शंका।।
अमृतसर से बाहर आओ, सारा देश तुम्हारे पीछे।
खड़ी जवानी चौराहों पर भूखी अंतड़ियों को भींचे।।
भूल रहे हो तुम रक्षक हो खेत-खेत खलिहान तुम्हारा।
पंजाबी सूबा तो छोटा है सारा हिन्दुस्तान तुम्हारा।।
सिक्ख पंथ मर्यादा तज, क्यों आज घिनौना काम किया है।
खालिस्तान मांग कर तुमने गुरुओं का अपमान किया है।।

(३)

हर भारतवासी को आगे आकर देश बचाना होगा।
अलगावी द्रोही तत्त्वों को फांसी पर लटकाना होगा।।
अब भी समय मान जाओ तुम, वरना फिर पछताना होगा।
यदि अब भी बेहोश रहे तुम जीते जी मर जाना होगा।।
युग के चारण का यह दावा, फिर इतिहास बनाना होगा।
खालिस्तानी गद्दारों को देश छोड़ कर जाना होगा।।
गुरु गोविन्द सिंह के बन्दो, देर करो मत, आगे आओ।
रावण दुर्योधन कंसों से लड़-लड़ कर जौहर दिखलाओ।।
हम भी साथ तुम्हारे मरने-मिटने को तैयार खड़े हैं।
सीमाओं पर हिन्द केसरी, लड़ने को तैयार खड़े हैं।।
मुट्ठी भर कुछ शैतानों ने सिक्ख पंथ बदनाम किया है।
खालिस्तान मांग कर तुमने गुरुओं का अपमान किया है।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बने न कोई खालिस्तान

हमें शक्ति दो भारत जननी
अखिल विश्व में गूंजे गान
तेरी कीर्ति का ध्वज लहराये
महके भारत का उद्यान
पाठ शान्ति का जग में फैले
करें सभी भारत का मान
निर्भय होकर कदम बढ़ायें
शत-शत हों तुझ पर बलिदान
राष्ट्र-भावना से प्रेरित हो
कण-कण भारतवर्ष महान्
उठे लहर जन-जन में गूँजे
हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान
नहीं द्वेष हो नहीं विषमता
भाषा अलग-अलग परिधान
एक सूत्र में सभी पिरोये
देश प्रेम हो एक समान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आसेतु हिमाचल टूट पड़ें
तुझ पर उत्सर्ग करें निज प्राण
जननी तेरी रक्षा के हित
जाग उठे फिर हिन्दुस्तान
कहीं धर्म की ध्वजा न उखड़े
निरपेक्षता की यह पहचान
सभी मिलें आपस में ऐसे
एक ही माँ की सब सन्तान
भारत फिर गरिमा मंडित हो
विश्व गगन में ज्यों दिनमान
नव किसलय से युक्त धरा हो
नूतन वर्ष नवीन विहान
हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई
आपस में हों एक समान
फूट नहीं हो कहीं देश में
बने न कोई खालिस्तान।

—मोहनप्रसाद बरनवाल

(पृष्ठ ३२ का शेष)

श्री घीसादास वैष्णव, २) श्री महावीरप्रसाद, २) श्री रामेश्वरलाल कुमार, २) श्री शिवप्रसाद रेगर, २) श्री भवानीराम खटीक, २) श्री जीवण खटीक, २) श्री शंकर मेधवाल, २) श्री मंघाराम टेलर, २) श्री हजारी रेगर, २) श्री रामनिवास चौधरी, २) श्रीमती शान्ति देवी।

सभी का धन्यवाद—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संग्रहीत दान : जावला राजस्थान

५१) श्री रामलाल सोभी, ५१) श्री नथराम जैन, ३१) श्री रामेश्वरलाल सोनी, ३१) श्री राधाकिशन राठी, ३१) श्री श्यामसुन्दर, २१) श्री रामानंद सोनी २६५५, २१) श्री जमनादास, २१) श्री विहारीलाल सोनी, २१) श्री अमरचन्द चाण्डक, २१) श्री मदनलाल सांखला, २१) श्री धर्मीचन्द जैन, २१) श्री भीकदान खिड़ीया, २१) श्री मोहनलाल रेगर, ११) श्री भोलाराम सोनी ४२१६, ११) धन्नादास वैष्णव, ११) श्री रजूनाथ जोगी, ११) श्री केसरीमल अग्रवाल, ११) श्री कैलाशचन्द रांका, ११) श्री मोहनलाल खाती, ११) श्री भेरूसिंह सेखावत, ११) श्री तुलसीराम व्यास, ११) श्री पन्नालाल जाघू, ११) श्री सम्पतराज लोढ़ा, ११) श्री मदनलाल चाण्डक, ११) श्री रामकुंवर भुतड़ा, ११) श्री जगदीशप्रसाद सोनी, ११) श्री आत्माराम रेगर, १०) श्री नाहरसिंह राठोड़, ५) श्री शंकरलाल सोनी, ५) श्री मोहनलाल कोचेचा, ५) श्री छगनलाल कुयार, ५) श्री हरीराम कुमार, ५) श्री रामवतार सिंह, ५) श्री गणेशलाल राठी, ५) श्री पुखराज जैन, ५) श्री सुपाराम भाली, ५) श्री भंवर सिंह पंवार, ५) श्री सुघनाथ टेलर, ५) श्री शंकरलाल कारपेन्टर, ५) श्री रामेश्वरलाल शर्मा, ५) श्री विजय मिस्त्री, ५) श्रीदामोदर टेलर, ५) श्री मदन लाल जोशी, ५) श्री दामोदर जोशी, ५) श्री गोरधन टेलर, ५) श्री हनुमानराम चौधरी, ५) श्री मेघसिंह, ५) श्री रमेश शर्मा, ५) श्री रामचन्द्र सिंह जाकड़, ५) श्री विजेन्द्रपाल सिंह, ५) श्री रंगलाल यादव, ५) श्री कंवरसिंह यादव, ५) श्री बाबूलाल कडवासरा, ५) श्री गोविन्दलाल वैष्णव, ५) श्री सुआलाल, ५) श्री रामाराम, ५) श्री बन्नेसिंह, ५) श्री शिवचरण माथुर, ५) श्रीमती सीता टेलर, ५) श्री मोहनलाल चौहान, ५) श्री हेमराज कोठारी, ५) श्री तुलसीराम जाट, ५) श्री ओमप्रकाश लोहाटी, ५) श्री भंवर सिंह, ५) श्री सीताराम राठी, ५) श्री गोर्धरन शर्मा, ५) श्री शिवनारायण भुतड़ा, ५) श्री सुपचन्द भुतड़ा, ५) श्री श्रीकिशन भुतड़ा, ५) रतनलाल दायमा, ५) श्री राधा कृष्ण दायमा, ५) श्री रूपनारायण भुतड़ा, ५) श्री भंवरलाल बराला, ५) श्री पृथ्वीसिंह राठोड़, ५) श्री रामनारायण सेनी, ५) श्री बालूराम तिवाड़ी, ५) श्री शंकरलाल रेगर, ५) श्री मंगलाराम जाट, ५) श्री जानकीलाल चित्रकार, २) श्री नोरलमल सोनी, २) श्री देवाराम नाई, २) श्री जगदीश सेन, २) श्री विष्णु सेन, २) श्री सत्यनारायण खाती, २) श्री सीताराम हरीजन, २) श्री बालमुकन्द गोड, २) श्री तुलसीराम वैष्णव, २) श्री शंकरपुरी गोस्वामी, २) श्री बाबूलाल टेलर, २) श्री नारायणजी गोदारा, २) राधेश्याम वैष्णव, २)

(शेप पृष्ठ ३१ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रतिश्याय (जुकाम, नजला) और उसकी चिकित्सा

—राजवैद्य गोविन्दसहाय द्विगुन आयुर्वेदाचार्य

इस समय अन्य कई रोगों की भांति प्रतिश्याय भी मानव को पर्याप्त क्षति पहुंचा रहा है। यह रोग देखने में तो साधारण लगता है परन्तु इसका शरीर पर बहुत ही हानिप्रद प्रभाव पड़ता है। इस व्याधि से कास एवं क्षय जैसी भयंकर व्याधियां भी होती देखी जा रही हैं। अतः किसी भी रोग को छोटा समझकर उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। तत्काल उपचार करवाना चाहिए। अन्यथा इसके भयानक दुष्परिणाम भोगने पड़ते हैं।

प्रतिश्याय का कारण

यह रोग प्रायः शीत लग जाने से होता है। निद्रावस्था में बिना ओढ़े सोते रहना अथवा बिस्तर से बिना कुछ ओढ़े अकस्मात् बाहर ठण्डी हवा में आ जाना आदि इसकी उत्पत्ति के कारण हैं। खुली हवा में ठण्डे पानी से नहाना, पसीने में नहाना या पानी पीना आदि भी इसके हेतु हैं। भोजन उष्ण एवं शीत एक साथ करना तथा उष्ण एवं शीत पदार्थ का एक साथ प्रयोग करना ये सभी प्रतिश्याय उत्पन्न करने के प्रमुख निमित्त हैं। इन्हीं असावधानियों से यह व्याधि प्रसार पाती है, अतः इनसे बचने की अथक चेष्टा करनी चाहिए।

इस रोग में तीव्र कास, सिर में वेदना, अंगमर्द एवं अस्थिज्वर होते हैं। मलावरोध एवं क्वचित् अतिसार भी रहते हैं। भोजन में अरुचि, मुख की अस्वादुता आदि उपद्रव होते हैं। कण्ठ में तथा नाक में दाह का प्रभाव होता है। कहीं नासास्राव होता है, तो कहीं नासास्राव का अवरोध भी दिखाई देता है। अनिद्रा होती है। अरति बढ़ती जाती है। स्वरभेद हो जाता है। इन रोगों से शारीरिक एवं मानसिक प्राकृत क्रियायें नष्ट होने लगती हैं, जिससे जीवन संकटमय हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाता है। अतः इन उपद्रवों के शमन के शीघ्र ही उपाय करने चाहिए, अन्यथा इनसे मनुष्य देह को भारी हानि उठानी पड़ती है।

चिकित्सा-क्रम

प्रतिश्याय में निम्नलिखित द्रव्यों से निर्मित (फाण्ट) चाय का प्रयोग ही इस रोग को उसी दिन से समाप्त करना आरम्भ कर देता है जिस दिन से इसका विधिवत् पालन किया जाता है। बिना नियम के कोई भी वस्तु निश्चित समय में लाभ नहीं पहुंचा पाती अतः किसी भी द्रव्य या योग का प्रयोग करने से पूर्व उसकी क्रम-विधि को समझना अनिवार्य है, अन्यथा कोई भी लाभ होना सम्भव नहीं।

फाण्ट के द्रव्य—शुण्ठी ३ रत्ती, काली मिर्च ३ रत्ती, पीपल १, लौंग ३ नग, जावित्री १ रत्ती, जायफल १ रत्ती, दालचीनी ३ रत्ती, सूखा खजूर फल मज्जा १ या—और तुलसी के पत्ते १० नग। ऐसी एक मात्रा लेकर पत्थर पर पीसकर पाव भर पानी में उबालिए—जब पानी एक छटांक रहजाए तब उसमें दूध शक्कर १-१ औंस डालकर एक और उबाल आवे तब तक प्रतीक्षा करें। फिर छानकर प्रचलित चाय की भांति पीकर सो जाइये। शयन-कक्ष स्वच्छ एवं प्रकाशयुक्त हो, परन्तु इस समय खिड़कियां खुली न रखें। यह फाण्ट लेते ही बिस्तर पर अधिक से अधिक ओढ़ने एवं बिछाने के कपड़े बिछाकर एवं ओढ़कर सोते रहना चाहिए। नाक के अतिरिक्त शरीर का कोई भी भाग खुला न रहे। इस क्रम से पांच से दस मिनट में पसीना आना आरम्भ हो जाएगा। पसीने को कपड़ों के भीतर ही पोंछते रहना चाहिए। हवा नहीं लगनी चाहिए। यदि कोई विशेष आपत्ति न हो, तो पूरा मुंह भी ढका हुआ रखा जा सकता है। इस क्रम से अधिक से अधिक पसीना आयेगा। जितना पसीना आवे उतना ही अच्छा है। परन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि पसीने में बिस्तर फेंक न देवें। ऐसे समय में यदि हवा लग गई, तो स्मरण रखिए, लाभ के स्थान पर हानि निश्चित है। जब पसीना आ चुका हो, तो फिर कपड़ों के भीतर ही पसीना सुखाकर एक-एक अंग को धीरे-धीरे सुखाना चाहिए, फिर आवश्यक वस्त्र पहनकर बाहर आ सकते हैं। आप देखेंगे कि इस विधि से कितना शीघ्र लाभ दिखाई देता है। बिस्तर से उठते ही शरीर में स्फूर्ति आ जायेगी। शरीर हल्का एवं मन प्रसन्न लगेगा। इस विधि को दिनभर में तीन बार दोहराना चाहिए। अपने व्यवसाय के कारण यदि दिन में तीन बार सम्भव हो, तो प्रातः-सायं तो यह फाण्ट पीना आवश्यक है। इसके साथ अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं।

इस उपरोक्त क्वाथ से न केवल प्रतिश्याय में लाभ होगा, अपितु तज्जन्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभी उपद्रव नष्ट हो जायेंगे। अधिक से अधिक चार से छः बार के प्रयोग से प्रतिश्याय में निश्चित एवं स्थायी लाभ हो जाता है परन्तु इस क्रम-विधि को न भूलें।

उपद्रवोपचार

कास-शमन के लिए मक्का नामक खाद्यान्नया भुट्टा सेककर गर्म-गर्म खाइये। खाकर एक घंटे तक पानी न पीवें। यदि भुट्टा उपलब्ध न हो, तो मकईको फुला कर (सेककर) भी गर्म-गर्म खाना चाहिए। इससे कास में सद्यः लाभ दिखाई देगा। श्वेत स्फटिका को फुलाकर उसका चूर्ण कर लीजिए और केवल २-२ रत्ती नागर वेल के पान के साथ चूसिए। इसके साथ यदि शुद्ध अकरकरा १-१ रत्ती भी खायेंगे, तो प्रतिश्याय एवं कास दोनों में अवश्य लाभ होगा। सरसों के तेल का गुड़ के साथ बना हुआ आटे का हलवा जितना गर्म खाया जा सके, खाकर ओढ़कर सो जाइए। प्रतिश्याय एवं कास में तुरन्त लाभ होगा। परन्तु याद रखिए कि एक घन्टा तक मुंह से पानी न लगने दीजिए। हलवा खाते समय यदि पानी के गरारे भी कर लिए, तो हानि होना निश्चित है। भुने हुए गर्म-गर्म चने भी खाकर सोने से जुकाम में लाभ होता है, परन्तु पानी न पीवें। जीर्ण प्रतिश्याय एवं उसके द्वारा उत्पन्न विबन्ध के लिए आधे नींबू का रस आधा कप गर्म जल में कुछ नमक डालकर प्रातः-सायं पीते रहें। अवश्य लाभ होगा। इससे मलावरोध-जन्य शिरोरोग भी दूर होता है।

(२) शिर-शूल के शमन के लिए १-१ फुलेरी एरण्ड तेल एवं तारपीन तेल को लेकर शिर में अभ्यङ्ग कीजिए। ललाट, कनपटी पर ३ रत्ती राई, १ माशा सोंठ एवं १ माशा कपूर को पीसकर लेप कीजिए। अवश्य लाभान्वित होंगे। अजवायन को भूनकर तुरन्त रूमाल में बांधकर सूंघते रहिए। शिरोवेदना, प्रतिश्याय दोनों में लाभ उठाइए।

(३) मुख की विरसता के लिए उष्ण जल में नमक डालकर गरारे कीजिए और गर्म-गर्म जितना सुहा सके। नाक में चढ़ाइए। अवश्य लाभ होगा।

(४) अरुचि के लिए नमक, अजवाइन और अमचूर को समान पीसकर मुंह में चूसते रहें। नींम्बू को चीरकर उसके बीज निकाल दीजिए और उसमें पिसा हुआ नमक एवं काली मिर्च भरकर गर्म कर चूसते रहें। इस प्रयोग से मुख स्वच्छ होगा, क्षुधा प्रदीप्त होगी तथा उदर साफ होगा।

(५) विबन्ध होने पर एक-दो समय उसे ६ माशे की मात्रा में ईसबगोल की भूसी गर्म नमक के पानी से या दूध से ले लेनी चाहिए। इससे उदरआम एवं वातशुद्धि होगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(६) कंठदाह हो, तो भुना हुआ जीरा, सौंफ, आमले को चूसते रहना चाहिए। अधिक कंठदाह हो, तो इसके साथ १ रत्ती कपूर भी चूसना चाहिए।

अनिद्रा हो, तो रोगी के हाथ-पैर के तलुओं पर बकरी के दूध में पीसी हुई भांग का लेप करना चाहिए। त्वचा उतरे हुए एरण्डबीज को गाय के घी में जला लीजिए, फिर घोंटकर इसका अंजन करने से निद्रोत्पत्ति होती है। सिर, कनपटी, और कर्ण में वातनाशक तैलाभ्यंग भी करना चाहिए।

(७) अवरुद्ध प्रतिश्याय हो, तो नासास्राव कराने के लिए कटु कोशातकी के रस को निकालकर नाक में खींचना चाहिए। इस नस्य से नासास्राव होकर प्रतिश्याय एवं शिर-शूल शांत होता है।

(८) भोजन में आटे में नमक की भांति परिमित पीसी हुई अजवायन डालकर बनाई गई फुलकी या गेहूं का दलिया अदरक की चटनी के साथ देना हितकारक है। दूध, घी, तेल, खटाई, छाछ, दही, आलू, भिंडी, बेसन के साग आदि त्याज्य हैं। कड़ाके की भूख लगने पर ही दिन में एक या दो बार भोजन करना चाहिए। अन्य साग न हों, तो मेथी के पत्ते, पालक के पत्ते या बथुए के पत्ते सम्मिलित या अलग-अलग दाल या आंवले की कढ़ी में पकाकर साग बना लेना चाहिए। यदि परिस्थितिवश अन्न खाने में असुविधा हो या अरुचि हो तो उबलते हुए दूध में १ माशा सोंठ डालकर छानकर दूध पीना चाहिए। यदि अतिसार हो, तो उबलते हुए दूध में एक माशा जायफल उबालकर लीजिए अथवा दो-चार छुहारे (खजूर) का मुंह खोलकर उबलते हुए दूध में डाल दीजिए, फिर इन्हें चबाकर गुठली फेंक दीजिए और दूध पीकर सो जाइए। प्रतिश्याय एवं अतिसार दोनों में लाभ होगा।

"राज्य आते और जाते रहते हैं, परन्तु जातियों के प्राण राज्य नहीं हैं। प्राण हैं धर्म और संस्कृति।

मनुष्य और पशुओं में अन्तर बुद्धि का ही है और वर्तमान शिक्षा से हमारी बुद्धि को विदेशों में गिरवी रखा जा रहा है…

"राज्य ने शिक्षा अपने अधीन कर रखी है और पढ़े-लिखे विचारशून्य बनाये जा रहे हैं।…इसकी गति पहले धीमी थी, परन्तु लुढ़कने वर्फ के ढेले की भांति यह बढ़ती जा रही है। यदि इसे शीघ्र ही रोका न गया तो यह ढेला इतना बड़ा हो जायेगा कि फिर इसे रोकना किसी मनुष्य के वस की बात नहीं रहेगी।"

—उपन्यासकार गुरुदत्त
('दो राहें' से उद्धृत)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धैर्य, दृढ़ता व वीरता की प्रतीक आदर्श महिला

वीर सावरकर की सहधर्मिणी माई

—सत्यवती गोयल

माई की आयु केवल ११ वर्ष थी कि उसके पिता चिपलूणकर ने उसके हाथ पीले करने की तैयारियां प्रारम्भ कर दीं। श्री चिपलूणकर जाव्हार राज्य के दीवान थे। अच्छे, खाते-पीते परिवार के सम्पन्न ब्राह्मण थे।

माई का विवाह सन् १९०१ में चितपावन ब्राह्मणवंशीय भगूर निवासी श्री दामोदर सावरकर के पुत्र १८-वर्षीय युवक विनायक 'तात्याराव' के साथ कर दिया गया। 'तात्याराव' ने पूना के फ़र्ग्युसन कालिज से बी० ए० किया। श्री तिलक जी के प्रयास से कानून की पढ़ाई के लिये लन्दन जाने की 'शिवाजी छात्रवृत्ति' श्यामजी कृष्ण वर्मा से मिल गयी। तात्या के श्वसुर श्री चिपलूणकर ने अपने दामाद को कानून की पढ़ाई के लिये विदेश जाते देखा तो उनका हृदय खुशी से भर गया। उन्होंने तुरन्त दो हजार रुपये अपने दामाद को अपनी ओर से भेंट किये।

'माई' की आयु उस समय १९ वर्ष की थी। वह अपने सम्बन्धियों व परिजनों के साथ अपने पति 'तात्या' को लन्दन के लिये विदाई देने बन्दरगाह तक गई थी। विदाई देते समय माई के हृदय में यही आशा थी कि यह बिछुड़ना क्षणिक ही है तथा कुछ ही वर्षों में जब उसके पति उच्चकोटि के बैरिस्टर बनकर लौटेंगे, तब कितने सुखद क्षण होंगे।

'माई' भविष्य के सुखद जीवन की कल्पना में लीन थी कि एक दिन उसे समाचार मिला कि तात्याराव ने तो कानून की पढ़ाई के बदले लंदन में दूसरा—कांटों का मार्ग, तेज छुरी की धार का रास्ता अपना लिया है। उसे लन्दन की तरह-तरह की घटनायें सुनने को मिलने लगीं। माई का अपने पति को बैरिस्टर के रूप में देखने का स्वप्न चकनाचूर हो गया।

२३ मार्च १९१० को 'तात्या' लन्दन में बन्दी बना लिये गये तो 'माई' को अपने पति के जेल में कष्ट सहन करने के समाचार से भारी आघात लगा। उसने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने पतिदेव की मुक्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना प्रारम्भ कर दी।

तात्या भारत लाये जाते समय समुद्र में कूद पड़े व पुनः बन्दी बनाकर भारत लाये गये। समुद्र में कूद जाने की साहसिक व रोमांचकारी घटना से एक बार तो माई का सिर गौरव से ऊंचा हो उठा। अपने पति के अदम्य साहस की कथा सुनकर वह फूली न समाई।

किन्तु जब बम्बई के न्यायालय ने 'तात्या' को एक नहीं दो, आजीवन कारावासों का दण्ड दिया, ५० वर्ष के लिये अण्डमान की काल-कोठरी में भेजने का आदेश दिया तो 'माई' दहाड़ मारकर रो पड़ी। उसकी समस्त आकांक्षाओं पर पानी फिर गया।

माई अपने भाई के साथ डोंगरी के कारागृह में अपने पूज्य पति के दर्शनों के लिये गई तो उसके हृदय में यही आशंका थी कि वह उनके अन्तिम दर्शन कर रही है। बैरिस्टर की वेशभूषा में देखने की आकांक्षा रखने वाली आंखों ने तात्या को लोहे के मोटे सींखचों के पीछे लोहे की जंजीरों एवं हथकड़ी-बेड़ियों से जकड़ा हुआ पाया तो उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। माई का हृदय चीत्कार कर उठा।

'बेटे-बेटियों की संख्या बढ़ाना और चार तिनके (लकड़ी) बचा करके घर बांध लेना यदि संसार व सुख कहलाता है तो ऐसा संसार कौवे, कुत्ते व चिड़ियां भी बनाती रहती हैं। किन्तु अपने सुखों को मातृभूमि के चरणों पर न्यौछावर कर देना यह मानव का वास्तविक सुखद संसार है। तुम धैर्य करो, हमारा यह त्याग भविष्य में अन्य सैकड़ों घरों में तो आनन्द की वर्षा करेगा ही।'

१९-वर्षीय तरुणी माई ने अपने बन्दी पति 'तात्या' के मुख से ये शब्द सुने तो वह राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत भावनाओं को देखकर हृदय में प्रफुल्लित हो उठी। भीगी आंखों से वह पति से विदा हुई।

तात्याराव के अण्डमान रवाना होने के बाद माई ने पति के जीवन की रक्षा के लिये। रिहा होकर पुनः मिलन के लिये व्रत उपवास व ईश्वराराधना प्रारम्भ कर दी। वह पातिव्रत धर्म का पूर्णतः पालन करती रही। हृदय में केवल एक ही आशा-आकांक्षा थी कि एक दिन पतिदेव के साथ रहने का सौभाग्य अवश्य मिलेगा।

१३ वर्षों की लम्बी प्रतीक्षा के बाद आशा का सूर्य प्रकट हुआ, निराशा के अन्धकार को उसने भगा दिया। 'तात्याराव' को अण्डमान से लाकर रत्नगिरि में स्थानबद्ध कर दिया गया। पति-पत्नी दोनों मिले। माई का हृदय पति के चरणों में नतमस्तक हो उठा। उन्होंने अपने मृत्युंजयी वीर पति के मृत्यु को पराजित करके वापस आने पर भगवान् को धन्यवाद दिया। माई का त्याग, माई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का धैर्य एवं पातिव्रत धर्म, 'तात्या' के त्याग-बलिदान से, समुद्र में कूद पड़ने के अदम्य साहस से किसी भी प्रकार कम न रहा। माई के पातिव्रत धर्म के बल पर ही तो तात्या विश्व को अपने अदम्य साहस व त्याग के 'चमत्कार' से चमत्कृत कर सके थे। माई सीता, सावित्री, पद्मिनी की तरह महान् पतिव्रता हिन्दू नारी थीं। उन्होंने अपने पातिव्रत धर्म का पालन जीवन के अन्तिम क्षण तक किया। उनके इष्टदेव ने 'मैं अपने पति के सम्मुख ही उनकी सेवा करती-करती मर जाऊं' उनकी इस अन्तिम अभिलाषा को भी पूर्ण किया। सन् १९३३ में माई तात्या से बिछुड़ गईं। उन्होंने अपने महान् पातिव्रत धर्म के पालन से हिन्दू नारियों के गौरवमय इतिहास में एक नया पन्ना जोड़ दिया।

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए
पवित्र धर्मग्रन्थ : परमात्मा की वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मंत्र-अर्थ-भावार्थ-छन्द स्वर देवता आदि सहित

लागत मूल्य लगभग ४४४ रु०

किन्तु प्रचार के लिए अपने सदस्यों को
जनता संस्करण : २२५ रु०, पुस्तकालय संस्करण : २५१ रु०

उपहार संस्करण : ६०४ रु०

५० रु० अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६२६३९-५६४७४१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सत्यपाल शास्त्री

सामयिक विचार

जम्मू-कश्मीर में क्या हुआ ?

जम्मू-कश्मीर को लेकर एक नया विवाद खड़ा हो गया है। पांच जून को वहां की विधान सभा का चुनाव हुआ था। कुल ७६ सीटों में से ४७ नेशनल कान्फरैन्स को मिलीं और २६ इन्दिरा कांग्रेस को। शेष तीन सीटें छोटे दलों में बंट गईं। चुनाव से पहले इन्दिरा कांग्रेस के महामन्त्री राजीव गांधी और नेशनल कान्फरैन्स के अध्यक्ष डा० फारुख अब्दुल्ला में इस उद्देश्य से समझौता-वार्ता चली कि दोनों दल मिलकर चुनाव लड़ें। सीटों के बंटवारे को लेकर वार्ता के कई दौर चले, लेकिन बातचीत सिरे न चढ़ी, क्योंकि डा० फारुख का आग्रह था कि इन्दिरा कांग्रेस अपना अस्तित्व समाप्त करके नेशनल कान्फरैन्स में विलीन हो जाये। इन्दिरा कांग्रेस को यह प्रस्ताव न स्वीकार्य हो सकता था और न हुआ। फलस्वरूप दोनों दलों ने अलग-अलग चिह्नों पर चुनाव लड़ा।

चुनाव परिणामों में कश्मीर घाटी की लगभग सारी सीटें नेशनल कान्फरैन्स के हाथ लगीं और जम्मू क्षेत्र की करीब-करीब सारी सीटें इन्दिरा कांग्रेस को मिलीं। भारतीय जनता पार्टी ने २५ उम्मीदवार खड़े किये थे, जो सबके सब पराजित हो गये।

मतदान से पूर्व हिंसात्मक घटनाएं हुईं। अब एक विवाद छिड़ गया है कि क्या ये घटनाएं उसी पैमाने पर हुईं, जिस पैमाने पर समाचार-पत्रों में चित्रित की गईं ? एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के सचिव के० नरेन्द्र का कहना है कि गिल्ड ने अपने दो सदस्यों को (जिनमें एक अरुण शौरी हैं) सही स्थिति का पता लगाने के लिए कश्मीर भेजा था और उन सदस्यों की रिपोर्ट है कि समाचार-पत्रों और संवाद समितियों ने बढ़ा-चढ़ाकर समाचार प्रकाशित किये। (इस सम्बन्ध में अरुण शौरी का एक लेख भी 'इंडिया टुडे' में प्रकाशित हुआ है।) दूसरी ओर अखिल भारतीय समाचार-पत्र सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष विश्वबन्धु गुप्त का कहना है कि समाचार-पत्रों और संवाद समितियों द्वारा दिए गए समाचार सही हैं। (इस सम्बन्ध में उर्दू पत्रकार जमनादास अख्तर का एक लेख दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित हुआ है।) अब प्रश्न उठता है कि किस पर विश्वास किया जाए और किस पर न किया जाए ? हमने दोनों पक्षों की बातों पर ध्यान दिया है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि सम्पादक सम्मेलन जिस परिणाम पर पहुंचा है—वह अधिक सही है। कश्मीर के चुनावों में धांधली कोई नई बात नहीं। शेख अब्दुल्ला और बख्शी गुलाम मुहम्मद के समय में भी उनके दलों के अनेक उम्मीदवार 'निर्विरोध' निर्वाचित हो जाया करते थे, जबकि शेष भारत में प्रधानमन्त्री को भी अपने चुनावक्षेत्र में अनेक प्रतिद्वन्द्वियों का सामना करना पड़ता था। मान लिया कि कुछ अतिरंजित समाचार भी प्रकाशित हुए होंगे, लेकिन जांच के बाद जो तथ्य सामने आये हैं, वे भी कुछ कम गम्भीर नहीं। (इन तथ्यों को प्रस्तुत करने से पूर्व हम इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति की ओर भी संकेत कर दें कि दोनों पक्ष—एडिटर्स गिल्ड के कथन के समर्थक नेशनल कान्फरैन्सी और सम्पादक सम्मेलन की बातों के पक्षधर इन्दिरा कांग्रेसी--एक-दूसरे की नीयत पर सन्देह कर रहे हैं। अरुण शौरी के बारे में कहा जा रहा है कि वे कश्मीर में सरकारी अतिथि बनकर रहे और जमनादास अख्तर के बारे में कहा जा रहा है कि उन्हें इन्दिरा कांग्रेस वालों ने खूब खिलाया-पिलाया।) हमारे पाठक अपने परिणामों पर पहुंचने में स्वतन्त्र हैं। लेकिन आइए, देखें कि विजयी पक्ष—नेशनल कान्फरैन्स—पर कैसे-कैसे आरोप लग रहे हैं?

जमनादास अख्तर लिखते हैं कि "हमारे पास जम्मू और कश्मीर के कई नगरों के लोगों के टेपरिकार्ड किये हुए बयान हैं कि पोलिंग से पहले नेशनल कान्फरैन्स के मुसलमान कार्यकर्त्ताओं को बुलाकर कहा गया कि यह इस्लाम और कुफ्र में संघर्ष है। कांग्रेस की विजय हिन्दू की विजय होगी और लोगों को चोटी रखना और तिलक लगाना पड़ेगा। इस्लामी भावनाओं को उभारने के लिए मुस्लिम बहुसंख्यक इलाकों में नेशनल कान्फरैन्स के झण्डे के साथ ही हरे रंग के इस्लामी झंडे लगाये गये। ये दोनों झंडे अब भी बिजली के खम्भों पर लगे हुए दिखाई देते हैं।

"बैलट पेपरों पर नेशनल कान्फरैन्स की मुहरें लगाकर पार्टी के कार्यकर्त्ताओं में बांटी गईं। ये कार्यकर्त्ता दस-दस बीस-बीस के बंडल लेकर पोलिंग बूथों पर जाते रहे। कई जगह तो पोलिंग अफसर स्वयं मुहर लगा देते थे। अनन्तनाग, बारहमूला, शोपियां और श्रीनगर में तो यह हालत थी कि विपक्ष, विशेषकर कांग्रेस, के समर्थकों को सारा-सारा दिन खड़े रहने पर भी पोलिंग स्टेशनों के अन्दर न जाने दिया गया। उनके नाम से दूसरों ने मतदान कर दिया।"

कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं ने पोलिंग स्टेशनों से बाहर हजारों ऐसे बैलट पेपर नेशनल कान्फरैन्स के कार्यकर्त्ताओं से पकड़े, जिन पर नेशनल कान्फरैन्स के उम्मीदवार के चुनाव चिह्न की मुहरें लगी थीं।

"२९ मई को लगभग ३०० ट्रकों पर नेशनल कान्फरैन्स के कार्यकर्त्ताओं का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जलूस निकला, जो विभिन्न इलाकों में ऊधम मचाता हुआ, विरोधियों को गन्दी गालियां देता हुआ और उनके झंडे उखाड़ता तथा मकानों और दूकानों को लूटता हुआ अनन्तनाग और शोपियां के चुनावक्षेत्रों के बाजारों में गुजरा। इन लोगों ने मकानों और दूकानों को लूटा, आग लगाई व महिलाओं तक से दुर्व्यवहार किया। इसके प्रमाण आज भी मिलते हैं।"

जमनादास अख्तर ने डा० फारूख के बारे में लिखा है कि "डा० फारूख अब्दुल्ला ने सफलता प्राप्त करने के लिए अपने सबसे बड़े विरोधी मीरवाइज मौलाना फारूक से गठबन्धन किया और अपने जलसों में मौलाना साहब का हरे रंग का चांद-तारे वाला झंडा इस्तेमाल किया।" "डा० फारूख अब्दुल्ला ने कहा कि कश्मीर इस्लामी प्रदेश है। वे इसकी वर्त्तमान रूपरेखा की रक्षा करेंगे। उन्होंने भारत-भर के मुसलमानों के हितों का रक्षक होने का दावा करते हुए कहा है कि वे देश के मुसलमानों का सम्मेलन आयोजित करेंगे। वे अपने भाषणों में कहते रहे हैं कि मैं कश्मीरी मुसलमानों को सऊदी अरब और खाड़ी के देशों में नोकरियां दिलाऊंगा।"

अरुण शौरी का लेख भी हमारी नजर से गुजरा है। उसमें शब्दजाल अधिक है, सार की बात कम है। एक समाचार के अनुसार डा० फारूख ने जिन्ना बनकर दिखाने की धमकी दी। इन्हीं सब बातों को देखकर जम्मू-कश्मीर ने इन्दिरा कांग्रेस का समर्थन किया।

पंजाब का ज्वालामुखी

यदि पंजाब की स्थिति को न संभाला गया, तो वहां का ज्वालामुखी कभी भी फट सकता है। अकालियों की मांगें बढ़ती ही जा रही हैं और वे अपनी मांगें मनवाने के लिए धमकियों पर उतर आए हैं। सिख छात्र संघ ने अमृतसर के दुर्गियाना मन्दिर, जालन्धर के सोढल मन्दिर और पंजाब के अन्य हिन्दू मन्दिरों को बमों से उड़ा देने की धमकी है। जवानी के जोश में अन्धे छात्र भूल गये कि क्रिया अपने हाथ में होती है, लेकिन प्रतिक्रिया दूसरे के हाथ में होती है। इसके अतिरिक्त यह भी सच है कि हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। यदि पंजाब के हिन्दू मन्दिरों को बमों से उड़ाया जा सकता है, तो इसकी प्रतिक्रियास्वरूप भारत-भर में गुरुद्वारों पर हमले हो सकते हैं। इसलिए अच्छा यही है कि अकाली अपनी मांगों को हिन्दू-सिख प्रश्न का रूप न दें।

केन्द्रीय सरकार इस बात को जितनी जल्दी समझ ले, उतना ही अच्छा है कि अकाली आन्दोलन से निपटने का एक ही उपाय है कि पुलिस को स्वर्ण मन्दिर में प्रविष्ट होकर अपराधियों को गिरफ्तार करने की अनुमति दी जाये। जब तक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसा नहीं किया जाता, स्थिति बिगड़ती ही जायेगी। पिछले महीनों में कई हत्याएं हुईं। निरंकारी और पत्रकार अकाली उग्रवादियों की कोप दृष्टि के विशेष रूप से शिकार हैं। २८ जून को एक पार्सल जालन्धर के प्रताप के सम्पादक वीरेन्द्र जी के नाम आया। यह अमृतसर से आया था। वीरेन्द्र जी दफ्तर में नहीं थे। उनकी अनुपस्थिति में एक क्लर्क ने वह पार्सल खोला। परिणाम: वह बेचारा तो बम बिस्फोट से वहीं मारा गया और उसके एक साथी ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। वीरेन्द्र जी अकाली उग्रवादियों की 'हिट लिस्ट' पर हैं। उन्हें धमकी के पत्र मिल चुके हैं। सुबह अखबार खोलते ही अकालियों की नई से नई धमकी पढ़ने को मिलती है। कभी कहते हैं कि हम संविधान को नहीं मानेंगे, कभी कहते हैं कि हम भारत से अलग हो जायेंगे, हम नहर की खुदाई रोकेंगे, रास्ता रोकेंगे, रेलें रोकेंगे, बसें रोकेंगे, कामकाज ठप्प कर देंगे—ऐसी तरह-तरह की धमकियां। आन्दोलन की धमकियां देते जाते हैं, साथ ही जनता की आंखों में धूल झोंकने के लिए कहते जाते हैं कि हमारा हर आन्दोलन शान्तिपूर्ण होगा। अकालियों के आन्दोलन कितने शान्तिपूर्ण होते हैं, इसका तो अब तक हुई हत्याओं की संख्या से पता चल जाता है। अब तक अकाली केन्द्रीय सरकार से बात तक करने को तैयार नहीं। उनका कहना है कि "हमने अपना सरकार के समक्ष रख दिया है। अब तो सरकार को चाहिए कि वह हमारी मांगों की स्वीकृति की घोषणा कर दे।" सरकार अकालियों को खुश करने में लगी हुई है, लेकिन अकाली सरकार के सौजन्य को उसकी दुर्बलता समझ रहे हैं। तभी तो जब सरकार ने 'रेल रोको' अभियान को देखते हुए रेलगाड़ियां कैन्सिल कर दीं, तब अकाली दल के अध्यक्ष सन्त हरचन्द लौंगोवाल ने सरकारी निर्णय को अपनी विजय का नाम दिया। यह बात ध्यान देने योग्य है कि अकाली दूध पीने वाले मजनूं हैं, खून देने वाले मजनूं नहीं। तभी तो अकाली विधायक और संसद् सदस्य अपने-अपने सदनों से त्यागपत्र देने के बावजूद अपने वेतन, भत्ते, सुविधाएं आदि तो लिए जा रहे हैं, लेकिन काम धेलेभर का नहीं कर रहे। उनके त्यागपत्र स्वीकृत नहीं किये गये, इसलिए उनके हौसले बढ़ गये हैं। लोकदल को छोड़कर सभी राजनैतिक दल अकालियों की खुशामद में लगे हुए हैं—कोई ऊंचे स्वर में और कोई दबे स्वर में। लगता है कि भारतीय जनता पार्टी भी यह सोच रही है कि अकाली आन्दोलन इन्दिराजी का सिर दर्द है और हम इन्दिराजी के विरोधी हैं; इसलिए अकालियों से निपटने में इन्दिराजी की सहायता करके हम अकालियों की शत्रुता क्यों मोल लें? मतलब यह कि पंजाब जल रहा है और इस जलते हुए तन्दूर पर राजनैतिक दल अपने क्षुद्र स्वार्थों की रोटियां सेंक रहे हैं। भगवान् ही जानता है कि पंजाब के भाग्य में क्या लिखा है?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्वर्गीय फतेहचन्द शर्मा 'आराधक'

तालस्ताय की वेदों में श्रद्धा

युगस्रष्टा लियो तालस्ताय भारतीय साहित्य के प्रति विशेष अभिरुचि रखते थे। उनकी भारत के प्राचीनतम साहित्य और महाकाव्यों के प्रति अगाध श्रद्धा थी। वेदों के सम्बन्ध में उनका ध्यान सबसे पहले आकर्षित हुआ था। वैदिक ज्ञान की उपलब्धि उन्हें गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी से प्रकाशित वैदिक पत्रिका से मिली थी। यह पत्रिका गुरुकुल के भूतपूर्व आचार्य स्व० प्रो० रामदेव के सम्पादकत्व में निकलती थी। पत्रिका में आर्यसमाज के सिद्धान्तों की अपेक्षा वेदविषयक जानकारी विशेष रूप से दी जाती थी। इस कारण महर्षि तालस्ताय का पत्र-व्यवहार समय-समय पर प्रो० रामदेव से चलता रहता था और प्रो० रामदेव तालस्ताय के भारतीय मित्रों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते थे।

लियो तालस्ताय के संग्रहालय के एक विशेष अधिकारी अलेक्जेण्डर शिफमान के अनुसार तालस्ताय वेदों के गम्भीर ज्ञान पर मुग्ध थे। वे वेदों के उन खण्डों पर विशेष ध्यान देते थे जिनका सम्बन्ध नीतिशास्त्र सम्बन्धी समस्याओं से है। यह एक ऐसा विषय था जिसमें उनकी प्रगाढ़ अभिरुचि थी। वेदों में व्याप्त मानवीय प्रेम के सिद्धान्त, मानववाद तथा शान्तिमय श्रम की प्रशस्ति के वे समर्थक थे। ऐसा अनुभव करते थे कि मानव आत्मा में निहित गुणसम्बन्धी उनके अपने सिद्धान्त की इससे पुष्टि होती है।

तालस्ताय के सम्बन्ध में बताया जाता है कि वे वेद तथा उसके भाष्य एवं उपनिषदों को विश्व की सर्वांगपूर्ण रचनाओं की श्रेणी में मानते थे क्योंकि इस साहित्य ने कई शताब्दियों से देश और धर्म की परम्परा को छोड़कर हजारों हृदयों को अपने उत्कृष्ट साहित्य द्वारा विमोहित किया है, जो इस देश के नागरिक भी नहीं। इस दृष्टि से तालस्ताय इस साहित्य को सच्ची कला का अंश मानते थे। उन्होंने अपने एक निबन्ध में लिखा था कि शाक्य मुनि का इतिहास और वेद की कथाएं अपने उदात्त भाव के कारण हमारे लिए अत्यन्त बोधगम्य हैं, चाहे हम शिक्षित हों या नहीं। उस युग के लोग हमारी श्रमिक जनता की तुलना में अल्पशिक्षित थे। किन्तु बोधगम्य थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तालस्ताय ने केवल वेदों को पढ़ा ही नहीं, वरन् उनकी शिक्षाओं का भी इस प्रकार से प्रचार किया जिससे उनके बहुत से अनुयायी वेद और उपनिषदों के ज्ञान को भली प्रकार जान सकें। तालस्ताय ने वेद और उपनिषद् दोनों की अनेक सूक्तियों और उक्तियों का संग्रह "पठन विस्तार तथा बुद्धिमान् मनुष्यों के विचार" नाम से किया है।

वेदों के अतिरिक्त तालस्ताय अन्य भारतीय प्राचीन कृतियों से विशेषकर 'महाभारत' और 'रामायण' से परिचित थे।

तालस्ताय ने रूसी और पश्चिमी यूरोप की भाषाओं के श्रेष्ठ अनुवादों के माध्यम से इन उत्कृष्ट कृतियों का ज्ञान प्राप्त किया।

यास्नाया पोल्याना के पुस्तकालय में अब भी 'रामायण' का दो भागों का संस्करण है जो १८६४ में पेरिस से प्रकाशित हुआ था।

तालस्ताय श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के विशेष उपासक थे। महाभारत के सभी भागों की अपेक्षा उन्हें गीता अधिक प्रिय थी। गीताप्रिय होने की जानकारी तालस्ताय के पत्रों और डायरी में लिखे गए समय-समय के उल्लेखों से होती है और पता है चलता कि वे उस पर कितनी श्रद्धा रखते थे।

भारतीय महाकाव्यों के कवित्व की भी प्रशंसा उन्होने अपने मित्रों से की थी। भारत के एक प्रसिद्ध विद्वान् को तालस्ताय ने अपने एक पत्र में लिखा था कि महाभारत के सभी भागों की अपेक्षा गीता के प्रति मेरी विशेष आस्था इसलिए भी है कि उसमें पूरे मनोयोग के साथ कर्त्तव्य पालन करने की प्रेरणा की गई है। उसके प्रति मेरी पूरी निष्ठा रही है और अपने जीवन में मैंने उसका उपयोग करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने यह भी लिखा था कि उसका प्रभाव मेरे जीवन पर यहां तक हुआ है कि मैंने अपनी रचनाओं में भी यत्र-तत्र उसका उपयोग किया है।

तालस्ताय के पत्र और डायरी के साहित्य से यह पूरी तरह से पता चलता है कि उन्होंने महाभारत और रामायण की सैकड़ों सूक्तियां संग्रहीत की थीं और बहुत-सी लोक-कथाएं भी संकलित की थीं।

उन्होंने इन कथाओं का पढ़ने योग्य रूसी पुस्तकों में प्रयोग किया था। बाद में उन्होंने इन और तरुणवर्ग के लिए इसी तरह का साहित्य लिखा। तालस्ताय का स्वप्न था कि भारतीय साहित्य का रसास्वादन सोवियत रूस के नागरिक भली प्रकार कर सकें। उनके इस प्रयत्न से हजारों रूसी नागरिकों को भारतीय साहित्य और दर्शन सम्बन्धी विचारधारा को जानने का अवसर मिला। रूसी नागरिक तालस्ताय के माध्यम से शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द आदि भारतीय महापुरुषों और उनके विचारों को जान सके।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—मु० खालिद नीमची

क्या आप धीमा जहर पी रहे हैं ?

अन्तर्राष्ट्रीय चिकित्सकों एवं अन्वेषणकारियों का यह सर्वसम्मत निर्णय है कि तम्बाकू मानव स्वास्थ्य के लिए किसी तरह भी लाभप्रद नहीं। जो व्यक्ति धड़ल्ले से सिगरेट या बीड़ी का कश लेते हैं और खासकर ऐसे व्यक्ति दुर्बल स्वास्थ्य के हैं, क्षय-रोग, हार्दिक अव्यवस्था—आमाशय विस्फोट तथा कैंन्सर जैसे रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं। फलस्वरूप साधारणतः उनका देहान्त हो जाता है।

कैन्सर उत्पन्न होने के मुख्य कारण पर प्रकाश डालते हुए सन् १९६४ में विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक सम्मेलन ने अपनी रिपोर्ट में चर्चा की है कि इसमें कुछ भी संदेह की गुंजाइश नहीं कि कैंन्सर रोग उभरने में अशुद्ध वायु मुख्य कारण है। इससे अधिक प्रेक्षकों ने यह भी पता चलाया है कि धूम्रपान तथा कैन्सर में गहरा सम्बन्ध है और इसी कारण फेफड़े में कैंन्सर होता है। धूम्रपान से मुक्त हो जाने पर कैन्सर की आशंका बहुत हद तक दूर हो जाती है।

वर्तमान काल तक तम्बाकू के सम्बन्ध में वैज्ञानिकों तथा चिकित्सकों ने उन्नीस प्रकार के विषावत तत्त्वों का अनुसंधान किया है। इनमें मुख्य (१) निकोटीन (२) प्रस्सिक एसिड कार्बन मोनोक्साइड पाइरीडीन, बिन्ज-पाइरीन हैं। इनमें निकोटीन का प्रथम अन्वेषण हुआ है जो सबसे अधिक प्रभाव-शाली एवं घातक है।

तम्बाकू या बीड़ी का एक कश लेने के बाद इसके सभी विषाक्त तत्त्व रक्त संचालन के साथ दौड़ने लगते हैं। यहां तक कि कुल नाड़ियों, धमनियों से गुजर कर तन्तुओं तथा मुख्य-मुख्य ग्रन्थियों में प्रवेश कर जाते हैं जो मुख्य अवयवों पर भीषण दबाव डालते हैं। बार-बार इस तरह की क्रिया से रक्त नाड़ियां सिकुड़ जाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप रक्त-गति शिथिल हो जाती है और शारीरिक शक्ति घटती चली जाती है तथा मानसिक व हार्दिक स्थिरता भंग हो जाती है।

आजकल संयुक्त राज्य अमेरिका के अभिनेताओं-अभिनेत्रियों के माध्यम से जनता को ज्ञान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है कि धूम्रपान पुरुषत्व शक्ति को अतिशीघ्र नष्ट कर देता है। उदाहरणतः यहां के एक अभिनेता टोनी कार्टस ने ऐलिन से तृतीय विवाह किया है। इन दोनों ने स्वीकार किया है कि जो व्यक्ति धूम्रपान से विरत है उनकी यौवन शक्ति दीर्घकाल तक कायम रहती है।

महिलाएं और धूम्रपान

महिलाओं की मांसपेशी-व्यवस्था अत्यधिक नाजुक होती है, इसलिए उनका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शारीरिक आकार अति दुर्बल होता है। इस कारण तम्बाकू का विष उन पर अधिक घातक प्रभाव डालता है।

इस तरह धूम्रपान करने से उनकी शारीरिक शक्ति अविलम्ब नष्ट हो जाती है। फलतः उनके गुलाबी होंठ, जिन पर लाली दौड़ती रहती थी, फीके दिखाई देते हैं। गाल भी पीले होकर मुरझा जाते हैं। उनकी आंखों के इर्द-गिर्द अन्धकार-मय चारदीवारियां खड़ी हो जाती हैं। ऐसी माताएं जो अपने बच्चों को स्वस्थ व बलवान् देखना चाहती हैं और उनके नीरोग शरीर को आदर्श बनाना चाहती हैं, उनके लिए यह अनिवार्य है कि वे धूम्रपान न करें।

डा० वाइकर हिल्ड ब्रिस्डाम लिखते हैं—"ऐसी माताएं जो प्रतिदिन लगभग बीस सिगरेट प्रयोग करती हैं, उनके दूध से पोषण धारण करने वाले बच्चे प्रतिक्षण भीषण पीड़ा से व्याकुल रहते हैं। उनपर अनिद्रा छायी रहती है तथा ऐसे मासूम बच्चों को दमन, मिचली, दस्त व रक्त-संचालन दोष से हर पल ग्रस्त रहना पड़ता है। वे आगे लिखते हैं —"मैंने उन माताओं को सिगरेट त्यागने की सलाह दी। मेरे इस उपदेश का उन्होंने पालन किया तथा दृढ़तापूर्वक इस पर कायम रहीं। कुछ ही दिनों में इसका उत्साहजनक परिणाम प्रकट होने लगा। दिन-प्रतिदिन उन बच्चों का स्वास्थ्य पुनः चंगा होने लगा।"

इसी पुस्तक में संयुक्त राज्य अमेरिका के एक प्रान्त मिशीगन के गौरवपूर्ण चिकित्सक डा० चार्ल्स बार्बर ने इससे भी अधिक भयावह अनुभवों की पुष्टि की है जो उन्होंने एक मद्य अनुसन्धान सम्मेलन में पढ़कर सुनाया था। सिगरेट पीने वाली माताओं की सन्तानें रोगग्रस्त जन्म लेती हैं। उनके शरीर के भीतरी भाग जहरीले मवाद से भरे होते हैं। उन्होंने कई ऐसे बच्चों का अन्त्य परीक्षण भी किया था जिससे उनको एक नयी जानकारी मिली। इन बच्चों का हृदय, यकृत् तथा प्रमुख इन्द्रियां (जब कि वे जीवित थे) उचित ढंग से कार्यरत नहीं थे। इस तरह बच्चों की ६० प्रतिशत संख्या दो वर्ष के कालान्तर ही परलोक सिधार जाती है।

इन अनुसन्धानों के अलावा १५ अप्रैल, १९६७ ई० को विश्व स्वास्थ्य संगठन के सम्मानपूर्ण सदस्यों ने भी दूधमुंहे शिशुओं की वृद्धि के पूर्ण सर्वेक्षण के बाद नारियों को प्रबल चेतावनी के साथ आग्रह किया है कि गर्भवती महिलाएं तत्काल तम्बाकू का इस्तेमाल बन्द कर दें, क्योंकि अधिकतर धूम्रपान न करने वाली माताओं के शिशुओं के मुकाबले में सिगरेट पीने वाली माताओं के शिशुगण या तो जन्म के पूर्व अपनी माताओं की कोख में शव बन जाते हैं या जन्म होते ही उनकी मृत्यु हो जाती है।

महिलाओं के बांझ होने के अनेक कारणों में से एक कारण तम्बाकू-नोशी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी है। इस सम्बन्ध में वियना (यूरोप) के एक चिकित्सक डा० होफ स्टाईटर ने एक वक्तव्य में कहा है कि "यहां स्त्रियां धूम्रपान के सम्बन्ध में विशिष्ट विश्वास रखती हैं कि धूम्रपान का व्यवहार गर्भवती होने से वंचित रखता है।" वे आगे लिखते हैं कि "ऐसा दीख पड़ता है कि उन नारियों का यह विश्वास विज्ञान शास्त्र के आधार पर है। इसलिए कि उनके पास असंख्य ऐसी अस्वस्थ नारियां उपचारार्थ पहुंची थीं जो तम्बाकू में बेहद रुचि रखती थीं। उनमें से केवल एक की गोद भरी थी, वरना सभी की गोद से पतझड़ की झलकियां दिखाई दे रही थीं।"

वैज्ञानिक निष्कर्ष

इसी प्रकार अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के अध्यापक डा० बी० एम-अब्रोल ने भी अपने अनुभव से पुष्टि की है कि "अन्धाधुंध धूम्रपान के कारण नर जाति नपुंसक होने एवं नारियां बांझ रहने का खतरा मोल ले रही हैं।" (दी टाइम्स आफ इण्डिया २१ सितम्बर, १९७५)

सेन फ्रानसिसको (संयुक्त राज्य अमेरिका) के एक प्रसिद्ध चिकित्सक डा० ए० सी० विलन्टन ने धूम्रपायी बालकों के चरित्र तथा शारीरिक क्षमता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है—"धूम्रपान से बालकों के नैतिक गुण नष्ट हो जाते हैं तथा उनके शारीरिक अंगों पर भयावह प्रभाव पड़ता है। आरम्भ में यह शिराओं की गति को तेज कर देती है। इसके बाद शिरायें शून्य हो जाती हैं। सिगरेटनोशी से बालक क्षयरोगग्रस्त हो जाते हैं। उनके दिल का आकार असा-मान्यतः बढ़ जाता है तथा पागल हो जाने की स्थिति आ आती है। वे यह भी लिखते हैं कि मैंने ऐसे बहुत-से बुद्धिमान्, ईमानदार तथा सत्यप्रिय बच्चों को देखा है जो धूम्रपान की आदत के बाद बुद्धिभ्रष्ट व कायर हो गये हैं।"

संयुक्त राज्य अमेरिका के मैसाचूसैट्स राज्य स्थित शहर ब्रौक्टन में जार्ज डब्लू आलिडन नामक एक आलीशान व्यावसायिक भवन है। उन्होंने धूम्रपायी युवकों के बारे में अपना अनुभव इस प्रकार स्पष्ट किया है—"जहां तक मुझे ज्ञात हुआ है, मेरे यहां कोई भी कर्मचारी सिगरेट नहीं उपयोग करता। सत्य बात यह है कि मैं किसी भी ऐसे व्यक्ति अथवा युवक को नियुक्त नहीं करता जो सिगरेट के अभ्यस्त हैं, क्योंकि मैं किसी भी सिगरेटनोश उम्मीदवार को अपने यहां एक मिनट के लिए भी सेवा योग्य नहीं समझता। मुझे अपने निरीक्षण से जो खेदपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ है, वह यह है कि सिगरेटनोश युवा उच्च साहसी नहीं होते तथा उत्साहपूर्वक काम नहीं कर सकते। स्वाभावतः वे आलसी होते हैं और अधिक से अधिक सिगरेट-पान करने के आदी हो जाते हैं। मैं चेतावनी देता हूं कि मेरे व्यावसायिक कार्यालय में सिगरेटनोश युवकों को काम करने का कोई अवसर नहीं दिया जायेगा क्योंकि सिगरेटनोशी उनकी जीवन शक्ति को नष्ट कर देती है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वातन्त्र्यवीर सावरकर की जीवन यात्रा

—प्रतापनारायण मिश्र

धांयं ! धायं ! पिस्तौल गरज उठी। भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के सेनानियों को काला पानी का कारावास एवं फांसी की सजा दिलवाने वाले धूर्त ब्रिटिश उच्चाधिकारी का रक्त से लथपथ निर्जीव शरीर गिर पड़ा। वह दिन एक जुलाई १९०९ गुरुवार का था। ब्रिटिश साम्राज्य जिसमें कभी सूर्य अस्त नहीं होता था उसकी राजधानी लन्दन में एक अनोखी घटना घटी थी। उसको यमलोक पहुंचाने वाला भारतीय विद्यार्थी मदनलाल ढींगरा था।

आजादी के दीवाने क्रान्तिकारियों और ढींगरा की निन्दा का प्रस्ताव पारित करने के लिए सभा आयोजित की गई। "ढींगरा के कार्य की निन्दा का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ।" अध्यक्ष के मुख से वाक्य पूरा भी नहीं निकला था कि ठिगने कद के एक भारतीय युवक की आवाज कड़क उठी—"सर्वसम्मति से नहीं। मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं।" ग्रेट ब्रिटेन की राजधानी में ऐसी जुर्रत करने वाला यह भारतीय कौन है ? सभा में मौत का सन्नाटा छा गया। पामर नामक एक अंग्रेज ने कूदकर युवक के मुंह पर तानकर घूंसा मारा और कहा—"यह अंग्रेजी मुक्के का जायजा लो।" इसी बीच एक अन्य भारतीय क्रान्तिकारी तिरुमलाचार्य ने अति चपलता से पामर के सिर पर एक जबर्दस्त लाठी का प्रहार जड़ दिया। उसने कहा—"अब जरा भारतीय डण्डे का भी मजा चख लो।" अंग्रेज चारों खाने चित था। अप्रत्याशित बमों से सभा में भगदड़ मच गई। भारतीय क्रान्तिकारी के विरोध में उस दिन लन्दन में सभा न हो सकी। वह साहसी युवक और कोई नहीं, मदनलाल ढींगरा का प्रेरक, क्रान्तिकारियों का नेता विनायक दामोदर सावरकर था जो बाद में स्वातन्त्र्यवीर नाम से लोकप्रिय हुआ।

महाराष्ट्र के नासिक जिले में ग्राम भगूर। इसी ग्राम में दामोदर सावरकर के घर में विनायक का जन्म हुआ था। उनके ज्येष्ठ भ्राता का नाम गणश और कनिष्ठ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का नाम नारायण था। विनायक जब ९ वर्ष के ही थे तभी उनकी माता राधाबाई का स्वर्गवास हो गया। तीक्ष्णबुद्धि विनायक १० वर्ष की अल्पावस्था से ही कविताओं की रचना करने लगे। उनकी देशभक्तिपूर्ण कविताओं और लेखों का प्रकाशन महाराष्ट्र के केसरी, भाला, काल, युगान्तर, विहारी, संध्या आदि पत्रों में होने लगा। माध्यमिक शिक्षाकाल में उन्होंने नासिक में "मित्रमेला" नामक संस्था प्रारम्भ की। शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक दृष्टि से किशोरों व युवकों में प्रखर देशभक्ति और देशाभिमान जाग्रत करना संस्था का मुख्य लक्ष्य था। व्यायामशाला चलाना, शिवाजी, राणा प्रताप, गणेश उत्सवों आदि के आयोजन किए जाते। मित्र मेला स्वदेशाभिमान जाग्रत करने का केन्द्र बन गया।

१८९७ में इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया के राज्य की स्वर्ण जयन्ती मनाई जा रही थी। सावरकर ने स्कूलों, कालेजों में स्वर्ण जयन्ती मनाने का कड़ा विरोध किया। "देश को गुलामी के शिकंजों में जकड़ने वाली सत्ता की स्वर्ण जयन्ती स्वराज्य प्रेमियों के लिए अति लज्जा की बात है।" दैनिक समाचारपत्रों में सावरकर के ओजस्वी भाषण प्रमुख रूप से प्रकाशित हुए। सरकारी खेमे में खलबली मच गई। सावरकर के सम्बन्ध में लोकमान्य की प्रतिक्रिया कालान्तर में कितनी सत्य सिद्ध हुई। "लगता है कि महाराष्ट्र में शिवाजी ने पुनः जन्म लिया है।" १८९९ में पिता भी प्लेग से चल बसे। परिवार के भरण-पोषण का दायित्व बड़े भाई गणेश (बाबा सावरकर) के कन्धों पर आया। उन्होंने अपनी पत्नी यशोदा और कनिष्ठ भाई नारायण को स्थायी रूप से नासिक बुला लिया।

विनायक ने १९०१ में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर पूना के फर्ग्युसन कालेज में प्रवेश किया। पूना में प्लेग फैल गया। अंग्रेज सरकार उसे रोकने का प्रबन्ध करना तो दूर रहा, उलटा जनता पर अमानुषिक जुल्म ढहाने लगी। उसके लिए जिम्मेदार मि० रैण्डसन सहित दो अंग्रेज उच्चाधिकारियों को चापेकर बंधुओं ने गोलियों से भून दिया। उन्हें फांसी दे दी गई। सावरकर का मन विद्रोह कर उठा। बड़े भाई पहले से ही क्रान्तिकारी थे। इस घटना ने उनके जीवन की दिशा को भी सशस्त्र क्रांति की ओर मोड़ दिया। सावरकर बन्धुओं ने सम्पूर्ण महाराष्ट्र से २०० प्रतिनिधियों की एक गुप्त सभा में "अभिनव भारत" की नींव डाली। ऊपरी तौर पर जन-जागरण और आन्तरिक रूप से क्रान्तिकारी संगठन का रूप अभिनव भारत ने ले लिया।

वंग-भंग और स्वदेशी प्रचार आन्दोलन ने जोर पकड़ा। तिलक की अध्यक्षता में बनी "विदेशी वस्त्र जलाओ" आन्दोलन के सूत्रधार श्री सावरकर बने। पूना में मैनचेस्टर के विदेशी कपड़ों की स्थान-स्थान पर होलियां जलाई गई। लोकमान्य तिलक सावरकर की विलक्षण संगठन क्षमता से प्रभावित हो आश्चर्यचकित-से रह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गये। तिलक के उद्गार थे--"सावरकर ने जो आग लगाई है वह विदेशी साम्राज्य को इसी प्रकार भस्म करके दम लेगी।" सरकार के दबाव पर उन्हें कालेज से निष्कासित कर दिया गया। अनेक प्रयासों के बाद बम्बई विश्वविद्यालय से अनुमति ले १९०५ में उन्होंने बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की।

अंग्रेज सरकार हाथ धोकर उनके पीछे पड़ गई। सरकार उन्हें उसी समय पकड़कर बन्द करना चाहती थी। तिलक ने श्यामजी कृष्ण वर्मा की छात्रवृत्ति प्रदान करवा बैरिस्टरी का अध्ययन करने उन्हें इंग्लैण्ड भिजवाया, ताकि इंग्लैण्ड में उनकी दिशा बदल जाये। सरकार ने कण्टक कटा समझ सन्तोष की सांस ली। उनका विवाह श्री भाऊराव चिपलूणकर की सुपुत्री यमुनाबाई से इसके पूर्व ही हो गया था। बड़े भाई गणेश पर अभिनव भारत का उत्तरदायित्व सौंप वे ९ जून १९०६ को परशिया बोट से इंग्लैण्ड रवाना हो गए।

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी संन्यासी अगम्य गुरु सम्पूर्ण देश और विदेश में धार्मिक प्रचार की ओट में घूम-घूमकर ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह की आग सुलगा रहे थे। उन्होंने इंग्लैण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन के प्रयास "इंडिया हाउस" की सम्पूर्ण गतिविधि की विस्तृत जानकारी अगम्य गुरु से प्राप्त की।

इंग्लैण्ड पहुंचते ही उन्होंने वहां भी कानून की शिक्षा के साथ-साथ अभिनव भारत की शाखा प्रारम्भ कर दी। इण्डिया हाउस उसका अड्डा बन गया। उन्होंने वहां मैजिनी का "जीवन चरित्र" लिखा। उसे छपवाकर क्रांतिकारियों में वितरित करवाया। श्री सावरकर प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने १८५७ का प्रथम भारतीय स्वातन्त्र्य युद्ध लिखा। आश्चर्य कि छपने से पहले ही वह पुस्तक ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर ली गई। यह पुस्तक अंग्रेजी में अनूदित हो किसी प्रकार आयरलैण्ड में छपी। पुस्तक पर किसी धार्मिक तथा अन्य पुस्तकों के टाइटिल लगवा-कर गुप्त रूप से क्रान्तिकारियों में वितरित की गई। यह पुस्तक क्रान्तिकारियों की गीता बन गई। इंग्लैंड में १८५७ की अर्द्धशताब्दी उन्होंने १० मई १९०७ को मनाई। उस दिन वहां के कालेजों-विश्वविद्यालयों में प्रवासी भारतीय बहुत बड़ी संख्या में १८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम के बैज बड़े गर्व से अपने सीने पर लगाकर गये। इण्डिया हाउस में स्वातन्त्र्य समर नाटक का मंचन भी किया गया।

प्रवासी भारतीयों ने अभिनव भारत का जाल फैलाकर आक्सफोर्ड डिक्शनरी में गुप्त रूप से छिपाकर इंग्लैंड से अनेक शस्त्रास्त्र भारत में क्रान्तिकारियों को उपलब्ध करवाये। देश में भी क्रान्तिकारी गतिविधियों ने जोर पकड़ा। उन्होंने इंग्लैंड से महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के एक-एक क्रान्तिकारी युवक को बम बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त करने फ्रांस भेजा। श्यामजी कृष्ण वर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को तो मानो वे आंखों के रूप में ही मिल गये। भारत में तहलका मच गया। उनके बड़े भाई गणेश (बाबा साहब) सावरकर को आजन्म कारावास का दण्ड दे अण्डमान भेज दिया गया। छोटा भाई नारायण भी पकड़ा गया किन्तु वे देश-धर्म से किंचित् भी विचलित नहीं हुए।

अन्ततः उन पर ब्रिटिश सत्ता का तख्ता पलटने और क्रान्तिकारियों को प्रेरणा देने का आरोप लगा बन्दी बनाकर १० जुलाई १९१० को मोरिया जहाज से संगीनों के पहरे में भारत लाया गया। धन्य है वह महावीर। मार्सेलिस बंदरगाह के समीप पहरेदारों को चकमा दे जहाज के संडास से कूद कर समुद्र में तैर फ्रांस की धरती पर पहुंच गये। पुनः पकड़कर लाये गये दो जन्मों का आजन्म कारा-वास का दण्ड मिला और वे अण्डमान भेज दिए गए।

अण्डमान में भीषण यातनाएं। कोल्हू में जुतते; पत्थर और नारियल की रस्सी बंटते, हाथ लहूलुहान हो जाते। ऊपर से हथकड़ी और बेड़ियां। लोग नर-भक्षी कबीलों और जंगली पशुओं के भोजन बन जाते। उन्होंने काला पानी की जो कहानी लिखी है, उसे स्मरण कर शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मच्छर, बिच्छू, दलदल से भरे इस द्वीप में भी क्या वे झुके? वहां भी उन्होंने कैदियों में देशभक्ति की भावना जाग्रत की। कागज-कलम के अभाव में दीवारों पर कांटों-कीलों से कविताओं के दस हजार पद लिखे। कंठस्थ किये और करवाये, जो बाहर बाद में "कमला", "गोमान्तक", "महासागर" काव्यग्रन्थ के रूप में लिपिबद्ध किये गये। हिन्दू समाज परम्परागत कुरूढ़ियों का शिकार था। अण्डमान में मुसलमान कैदी हिन्दू कैदियों का बर्तन जूठा कर, भोजन छू रूढ़ियों के कुसंस्कारों का नाजायज लाभ उठाकर उन्हें धर्मान्तरित करते। अंग्रेज अफसर मुसलमानों का पक्ष लेते। उन्होंने इसके विरोध में वहां सत्याग्रह कर भेदभाव को नष्ट किया। वहीं पर कैदी अवस्था में उनकी बड़े भाई से भी भेंट हुई।

१९२४ में वहां उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। देश-विदेश के दबाव के कारण उन्हें १९२४-३७ तक रत्नगिरि जिले में स्थानबद्ध कर दिया गया। सावरकर ने वहां १५ वर्ष में अस्पृश्यता विरोधी और सामाजिक समता आन्दोलन चलाया। भाकरी झुनका, ज्वार की रोटी और बेसन बनाकर हरिजनों और सवर्णों का परस्पर सम्मिलित सहभोज आयोजित किया। हरिजनों को मन्दिर में समता के आधार पर प्रवेश करवाया और उनके लिए पतित पावन मन्दिर बनाकर शंकरा-चार्य द्वारा उद्घाटन करवाया। यहीं पर अस्पृश्यता विरोधी "उःशाप" नाटक और "मोपला" उपन्यास की रचना की, जिसमें छुआछूत, ऊंच-नीच और रूढ़िगत कुसंस्कारों पर कटु प्रहार किया गया है।

श्री सावरकर ने हिन्दुत्व की युगानुकूल व्याख्या की। मनसा वाचा कर्मणा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो भारत को मातृभूमि मानता है, वह हिन्दू है। "हिन्दुत्व" पुस्तक लिखी। उन्होंने ललकार कर कहा कि भारत हिन्दू राष्ट्र है।

१६३७ में जब कांग्रेस की स्वायत्त सरकार बनी उस समय वे पूर्ण रूप से मुक्त कर दिये गए। श्री सावरकर अतिदूरदर्शी थे। कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति उन्हें पसन्द नहीं थी। इसके अन्दर देश के विभाजन के बीज छिपे हैं, वे सदैव कहा करते थे। अत: कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण न कर वे १६३७ में हिन्दू महासभा के अध्यक्ष बने।

दूरदर्शिता और परिस्थिति का कैसा सही आकलन था कि जागतिक स्थिति ऐसी बनेगी कि विश्वयुद्ध होगा। ब्रिटिश साम्राज्य संकट में फंसेगा। उसका लाभ उठाकर देश को आजाद कराया जा सकेगा। उन्होंने सम्पूर्ण देश में घूमकर युवकों को सेना में प्रवेश का आह्वान किया। सुभाष बाबू को प्रेरित किया कि किसी प्रकार यहां से निकल विदेश में जाकर ब्रिटिश सेना में भारतीयों के अन्दर देश-भक्ति जगा उनको संगठित कर अंग्रेजों के शत्रु देशों की सहायता से देश को मुक्त कराएं। वे अन्दर तैयारी में जुटे। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के कारण अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा, किन्तु उनकी वाणी सत्य हुई। देश का विभाजन हो गया। भारत विभाजन से उन्हें कितनी पीड़ा थी? इसका अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब उनके आत्मार्पण के समय लोग उनसे अन्न-जल ग्रहण करने का आग्रह करते तो उनकी अन्तिम इच्छा थी कि "रावी तट पर तिरंगा लहराओ तो मैं २५ वर्ष और जीवित रह सकता हूं।" अखण्ड भारत उनकी तमन्ना थी। भारत विभाजन से उन्हें काफी गहरा धक्का लगा। अंग्रेज समझता था कि सावरकर भारत-विभाजन के विरुद्ध विद्रोह कर देंगे किन्तु उन्होंने १५ अगस्त १६४७ को अपने घर पर तिरंगा लहराकर अंग्रेजों की कुटिल नीति को असफल कर दिया।

दुर्भाग्य से उस महापुरुष पर राजनैतिक कारणों से गांधीजी की नृशंस हत्या का झूठा आरोप लगाकर स्वतन्त्र भारत में मुकद्दमा चलाया गया किन्तु वे उसमें से कंचन समान निष्कलंक चमक कर निकले। उनका स्वास्थ्य गिर गया था। अत: १६५२ में अभिनव भारत तथा अनुशीलन समिति का पूना में एक समारोह में समापन कर वे राजनीति से लगभग पूर्णत: मुक्त हो गये। श्री गुरुजी भी उस समारोह में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अब उनकी कोई प्रयोजनीयता नहीं रह गई थी।

उन्होंने अपने जीवन के शेष काल में देश की एक धरोहर के रूप में "इतिहास के छ: स्वर्णिम पृष्ठ" नाम से भारत का इतिहास लिखा। १८५७ की शताब्दी का समारोह भी उनकी ही अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। यह संयोग ही था कि अर्द्ध-शताब्दी भी इंग्लैण्ड में उनके द्वारा आयोजित हुई थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने जीवन का कार्य समाप्त हो गया है, यह जान उन्होंने अन्न-जल त्याग २६ फरवरी १९६६ को काल को आत्मार्पण कर दिया। उनके हृदय में कैसी उत्कट देशभक्ति थी, इसे भाइयों के कारावास पर भाभी को सांत्वना हेतु लिखे उनके पत्र से सरलता से समझा जा सकता है—"भाभी! कई प्रकार के फूल खिलते हैं। यथा-तथा जीवित रहकर कहीं भी गिरकर सूख जाते हैं परन्तु उनकी गिनती या महत्ता किसी ने क्या अपने पास रखी है? किन्तु गजेन्द्र ने अपनी सूंड से उठाकर श्रीहरि के चरणों में जो समर्पित कर दिया वही कमल पुष्प अपने जीवन में पावन बना। कितना अभिमान है कि हमारे वंश के सभा पुष्प माता के चरणों में अर्पित हो गये।"

श्री सावरकर का काव्यमय जीवन अपने में स्वयं इतिहास का एक और स्वर्णिम पृष्ठ है।

स्वाभिमानी बालक

केटक स्कूल में यूरोपियन लोग अधिक पड़ते थे। कुछ बंगाली लोग भी वहां पढ़ा करते थे। उन दिनों भारतवर्ष पराधीन था। अंग्रेज बच्चे कहा करते थे—'बंगाली लोग बड़े खराब होते हैं; मैं जहां देखता हूं थप्पड़ जमा देता हूं।'

प्रतिदिन ये बातें हुआ करती थीं। एक बार उस स्कूल के मैदान में कुछ बंगाली और यूरोपियन बच्चे घूम रहे थे। इतने में वही बात पुनः दोहराई गई कि बंगाली लड़के बड़े खराब होते हैं; मैं जहां देखता हूं थप्पड़ जड़ देता हूं। इस पर एक अच्छे स्वास्थ्य वाला, सुन्दर, गोरा-सा बंगाली लड़का आया और बोला कि मैं बंगाली हूं; कहिए क्या कहते हैं? इस पर उस अंग्रेज ने उस बालक के उभरे हुए गाल पर तमाचा जड़ दिया। इस पर उस बंगाली लड़के ने उस अंग्रेज लड़के से यह कहकर कि 'आप उन्हें जब देखते हैं, थप्पड़ मार देते हैं' उस अंग्रेज लड़के की खूब पिटाई की। सारे अंग्रेज बच्चों में हलचल मच गई। इधर वह स्वाभिमानी बालक मजे से मैदान में घूम रहा था उधर अध्यापक वर्ग बेचैन था।

यह बंगाली बहादुर और कोई नहीं वीर सुभाषचन्द्र बोस था जो आज हमसे रूठकर न जाने कहां चला गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—आचार्य दिवाकर

आध्यात्मिक चिकित्सा : विकास की एक दिशा

आजकल देश-विदेश में ऐसे रोग बहुत बढ़ रहे हैं, जो किसी विषैले वातावरण, जीवाणु या आनुवंशिक खामियों से पैदा नहीं हुए, बल्कि उनकी जड़ें मन के दबाव तथा तद्जन्य तनाव में खोजी जा सकती हैं। मनः-शास्त्रियों और परामनोवैज्ञानिकों की खोजों ने यह सिद्ध कर दिया है कि ९५ प्रतिशत तक रोग मानव के मन-मस्तिष्क से ही उपजते हैं और उन्हीं की चिकित्सा से उनका उपचार किया जा सकता है। प्राचीन काल में भी आधि-व्याधियों का मूल मस्तिष्क के साथ-साथ अन्तःकरण (आत्मा) में जाना-माना जाता था जिनकी चिकित्सा मंत्रों द्वारा करने का उल्लेख वैदिक साहित्य में (विशेष रूप से अथर्ववेद में) मिलता है।

असाध्य रोगों की चिकित्सा

मंत्रों के जप या उच्चारण से किसी रोगी या रोग की चिकित्सा हो सकती है या नहीं, यह विवाद या परीक्षण व प्रयोग का विषय हो सकता है। परन्तु इस समय मधुमेह (डायबिटीज) और गण्डमाला (कैंसर) दो रोग ऐसे बढ़ रहे हैं कि देश में दो प्रतिशत लोगों को किसी न किसी रूप में मधुमेह अवश्य मिल जायेगा और यदि उन २० प्रमेहों के रूप में खोज की जाय जिनमें मधुमेह शामिल है और जिनका आयुर्वेद में उल्लेख है तो लगभग ५५ प्रतिशत लोग रोगी मिलेंगे। प्राचीन काल में यह रोग (मधुमेह) सामान्यजन को नहीं होता था। इसलिए इसे राज-रोग की ही गिनती में रखा गया था परन्तु अब तो इस रोग की चपेट में सामान्य-जन आने लगे हैं। इसके अतिरिक्त कैंसर (गण्डमाला) भी बढ़ रहा है तथा हृदय रोगों से तो अब सामान्य ग्रामीणों तक की मृत्यु होने लगी है। मानसिक रोगों को अगर न रोका गया तो बम्बई, मद्रास, कलकत्ता में ही नहीं, दिल्ली और कान-पुर सरीखे महानगरों में भी सड़कों में पागलों की भीड़ खड़ी हो जायेगी।

प्रचलित एवं परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों में अनेक रोगों को असाध्य माना जाता है। अब भी मधुमेह का नियंत्रण सम्भव और उपचार असम्भव है,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु हमारा दावा है कि आध्यात्मिक चिकित्सा पद्धति से इस रोग को जड़मूल से खोदा जा सकता है।

आध्यात्मिक चिकित्सा पद्धति का स्वरूप

आध्यात्मिक चिकित्सा करने या अपनाने से पूर्व कुछ बातें स्पष्ट रूप से समझने की आवश्यकता है। यह पद्धति एकांगी नहीं है बल्कि इसका स्वरूप सर्वांगीण विकास का है। जिस प्रकार सेल विश्वविद्यालय (अमेरिका) ने "विहेवियरल मेडिसिन" चिकित्सा पद्धति के विकास के लिए एन्थ्रोपोलोजी, सोशियोलोजी, एपिडिनियोलाजी, साइकॉलोजी, साइकिएट्री, मैडिसिन तथा प्रारम्भिक जीवविज्ञान जैसे अनेक विषयों का अध्ययन सम्मिलित किया है, उसी प्रकार आध्यात्मिक चिकित्सा पद्धति में भी औषधि (भेषज), ज्योतिष, पौरोहित्य, ऋतु, काया, माया, मन-मस्तिष्क, समाजशास्त्र, जीवशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र आदि का प्रारम्भिक अध्ययन भी शामिल करना होगा। इस पद्धति की आधारभूत मान्यता यह होनी चाहिए कि रोग-शोक, दुःख आदि सभी का जन्म आत्मा (अन्तःकरण) में होता है, इसलिए उसी के उपचार या विकास से उन्हें दूर किया जा सकता है। इस अध्ययन में व्यक्ति, परिवार (वातावरण) और उसके समाज के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन शामिल होना चाहिए।

भौतिक या पदार्थ विज्ञान जिस प्रकार वस्तुओं, घटनाओं और परिस्थितियों के बारे में क्या, कैसे, कब, कहां और कौन आदि अनेक प्रश्नों या गुत्थियों का क्रमबद्ध उत्तर देता है और उन्हें सुलझाता है, उसी प्रकार अध्यात्म "क्यों" की जिज्ञासा को शान्त करने का प्रशस्त मार्ग प्रस्तुत करता है और किसी भी बन्धन या सीमा को नहीं मानता। अध्यात्म का न कोई मजहब (रिलीजन) या वाद है और न कोई गढ़ा-गढ़ाया फार्मूला या नुस्खा। बस, उसका एक ही कहना है कि कोई भी कार्य बिना कारण नहीं होता। तर्क की कसौटी पर कसे बिना वह ब्रह्म को भी सत्य मानने के लिए तैयार नहीं होता। इसलिए किसी रोग की चिकित्सा से पूर्व उसके कारण की गहनतम व सर्वांगीण मीमांसा जिस पद्धति में की जाये, उसे हम आध्यात्मिक चिकित्सापद्धति कह सकते हैं।

आत्म-वैज्ञानिकों को यह भी समझकर चलना चाहिए कि भले ही हम बात आत्मा-परमात्मा की करते हों, हम सब शरीर के तल पर जीवित रहते हैं। मन या अन्तर्मन, अन्तःकरण या आत्मा की अनुभूति भी शरीर में ही होती है। इसलिए मनोविकारों और अन्तर्द्वन्द्वों का प्रभाव भी शरीर पर ही पड़ता है। काम या क्रोध का जन्म कब, कहां और कैसे होता है, यह विवाद या शोध का विषय हो सकता है, परन्तु इनका सीधा प्रभाव और तद्जन्य रोग के चिह्न शरीर पर देखे जा सकते हैं। च्यवनप्राश अवलेह से लेकर सिद्ध मकरध्वज तक अनेक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

औषधियों के प्रयोग या विटामिनों व मल्टीविटामिनों के इस्तेमाल से भी इन रोगों से मुक्ति नहीं मिल सकी, परन्तु आध्यात्मिक चिकित्सा पद्धति अपनाकर हम इन रोगों से छुटकारा पा सकते हैं। भले ही कायाकल्प अक्षरशः सत्य न हो सके परन्तु उसकी यथार्थ भूमिका पूरी-पूरी निभ सकती है अर्थात् मनुष्य मृत्यु-पर्यन्त स्वस्थ रह सकता है।

कैंसर क्यों ?

रोचेस्टर विश्वविद्यालय द्वारा किए गए अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि किसी व्यक्ति का जीवन के प्रति अतिशय निराशाजनक चिन्तन कैंसर रोग को जन्म दे सकता है। इंग्लैंड की वक्ष कैंसर से पीड़ित एक महिला की कहानी इस तथ्य को उजागर करती है कि यदि जीवन के प्रति निराशाजनक दृष्टि को आशा या उत्साह में परिणत किया जा सके तो कैंसर की चिकित्सा सम्भव है। अध्यात्म में पुनर्जन्म का निर्धारण या अमरता का सन्देश जीवन को आशा, उत्साह और उमंग से भर सकता है। परमार्थ व परोपकार की भावनाओं से प्रेरित होने से ही इस रोग का निदान सम्भव है।

रोगी क्या करे ?

आध्यात्मिक चिकित्सा में रोग का नहीं, रोगी का इलाज किया जाना चाहिए। इसलिए केवल कैंसर या मधुमेह के रोगी ही नहीं बल्कि इस पद्धति को प्रत्येक रोग के उपचार के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए। रोगी की प्रकृति और स्थिति के अनुसार इसमें फेर-बदल किया जा सकता है। सामान्यतः ब्राह्ममुहूर्त में (सूर्योदय से एक घण्टा पूर्व) उठकर नित्य क्रियाओं से निवृत्त हो, प्रथम चरण में रोगी स्वस्थ रहने या होने का संकल्प करे और उसे यह भावना करनी चाहिए कि उसका मन शान्त, सन्तुलित और स्वस्थ हो रहा है। इसके लिए वह स्वयं हास्य का भी प्रयोग कर सकता है।

दूसरे चरण में रोगग्रस्त स्थान पर ध्यान करना चाहिए और यह प्रबल भावना आरोपित करनी चाहिए कि श्वेत कण सौर ऊर्जा व प्राणवायु (श्वास) के साथ मिलकर रोगग्रस्त स्थान पर एकत्र हो रहे हैं और रुग्ण कोशिकाओं व विषैले तत्त्वों को अपानवायु (उच्छ्वास) के साथ बाहर निकाला जा रहा है। यह क्रिया रोगी की स्थिति के अनुसार एक कमरे या मैदान में लेटकर, बैठकर या उठकर करायी जा सकती है।

हमने कुछ प्रयोग-परीक्षण किए हैं और रोगों के उपचार में सफलता प्राप्त की है। परन्तु इस पद्धति में अभी अनेक प्रयोगों की आवश्यकता है। दिशा व मार्ग सही होते हुए भी जब तक उस पर चलकर लक्ष्य तक न पहुंचा जाय तब तक हम उसे विकास की एक दिशा ही कह सकते हैं। आशा है कि समानधर्मी बन्धु अपने प्रयोग-परीक्षणों द्वारा इस पद्धति को विकसित करने में मदद करेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आरण्यक ग्रन्थ और उनके प्रतिपादित विषय

—कु० मधुरानी
एम० फिल० (संस्कृत), दिल्ली विश्वविद्यालय

अरण्ये भवमिति आरण्यकम् अर्थात् अरण्य में रहकर यज्ञों के रहस्य को बताने वाली जिस विद्या का पाठ किया जाता था, वह विद्या जिन ग्रन्थों में सुरक्षित है, उन्हें आरण्यक कहते हैं। ऐतरेयारण्यक की भूमिका में सायणाचार्य ने कहा है, 'अरण्य एव पाठ्यत्वादारण्यकमितीर्यते'। तैत्तिरीयारण्यक की भूमिका में सायण ने लिखा है—'अरण्याध्ययनादेतदारण्यक मितीर्यते, अरण्ये तदधीयेतेत्येवं वाक्यं प्रवक्ष्यते। पुनश्च एतदारण्यकं सर्वं नाव्रती श्रोतुमर्हति'। एकान्त जनशून्य स्थान में ब्रह्मचर्य में निमग्न होकर ऋषियों ने जिस गंभीर एवं चिन्तनपूर्ण विद्या का पाठ किया, उसका नाम आरण्यक है। अरण्य शब्द से भव (होने वाला) अर्थ में वुञ् प्रत्यय लगाकर आरण्यक शब्द बनता है।

वैदिक वाङ्मय में आरण्यक वाङ्मय का विशेष स्थान है। वैदिक संहिताओं की रचना के बाद उनमें उपदिष्ट अध्यात्म, दर्शन, धर्म, समाज, कर्मकाण्ड, लौकिक सदाचार आदि के सम्बन्ध में नीति-नियमों और व्यवस्थाओं का विस्तार से निरूपण करने के लिए ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् साहित्य की रचना हुई। आरण्यक वाङ्मय विविध, विशाल तथा परमोपयोगी सामग्री से परिपूर्ण एक बृहत्कोष है। इसमें एक ओर जहां ब्राह्मण ग्रन्थों की यज्ञीय प्रक्रिया का सरलीकृत एवं आध्यात्मिक रूप दिया गया है, वहां दूसरी ओर ब्रह्मविद्या एवं आत्मतत्त्व का उपदेश भी है। आरण्यक ग्रन्थ वस्तुतः उन तपस्वियों और मुनियों की साधनाओं के परिणामस्वरूप रचित हुए, जिन्होंने इस लोक के सुखों और विषय-वासनाओं का परित्याग करके मानव जाति को आत्मचिन्तन के लिए प्रेरित किया। आरण्यक ग्रन्थों में यज्ञ की विशेष प्रकार से व्याख्या की गई है। आरण्यकों में सांसारिक कामनाओं को त्यागकर संन्यास लेकर भिक्षाचरण करने का उपदेश है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्तमान समय में सात आरण्यक उपलब्ध हैं—

ऋग्वेद—ऐतरेय और शांखायन आरण्यक।

शुक्ल यजुर्वेद—माध्यन्दिन और काण्व बृहदारण्यक।

कृष्ण यजुर्वेद—तैत्तिरीय और मैत्रायणी आरण्यक।

सामवेद—जैमिनीयोपनिषद् आरण्यक।

अथर्ववेद का कोई आरण्यक उपलब्ध नहीं।

ऐतरेयारण्यक में पांच आरण्यक हैं। प्रथम आरण्यक में पांच अध्याय हैं तथा इसमें महाव्रत के प्रातः, माध्यन्दिन तथा सायं सवनों का वर्णन है। द्वितीयारण्यक में सात अध्याय हैं। इस आरण्यक में उक्थ, प्राणविद्या, संहितापाठ, पदपाठ, क्रमपाठ, स्वर, निष्कैवल्य शस्त्र तथा महानाम्नी ऋचाओं का संकलन है। ऋग्वेद का दूसरा उपलब्ध आरण्यक ग्रन्थ शांखायन है। इससे कौषीतकि आरण्यक भी कहा जाता है। इस आरण्यक में पन्द्रह अध्याय हैं। इसमें महाव्रत आदि का वर्णन किया गया है। शांखायन आरण्यक के ३, ४, ५, ६ अध्याय कौषीतकि उपनिषद् कहलाते हैं। इसके तेरहवें अध्याय में उपनिषदों से अनेक उद्धरण दिये गये हैं।

माध्यन्दिन, काण्व बृहदारण्यक शुक्ल यजुर्वेद से सम्बन्धित हैं। वस्तुतः ये आरण्यक शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण के ही अंश हैं। शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम ६ अध्यायों को बृहदारण्यक कहा जाता है। इसमें आत्मतत्त्व की विवेचना की गयी है। इस आरण्यक में आलंकारिक रूप से यज्ञ के रहस्य का थोड़ा-सा वर्णन करके अधिकांश में आत्मज्ञान के तत्त्वों का ही उपदेश किया गया है। इसी आरण्यक में संन्यास का स्पष्ट शब्दों में विधान किया गया है।

तैत्तिरीयारण्यक दस प्रपाठकों में विभक्त है और इन दस प्रपाठकों में १७० अनुवाक हैं। प्रत्येक प्रपाठक का विषय के अनुसार नाम रखा गया है। प्रथम प्रपाठक का नाम भद्र प्रपाठक है। इसमें अरुणकेतुक नामक अग्नि की उपासना बतायी गई है। द्वितीय प्रपाठक को सहव की संज्ञा दी गयी है। इस प्रपाठक में स्वाध्याय और पञ्चमहायज्ञों का वर्णन है। इसमें गंगा-यमुना के मध्य के देशों को बताया गया है तथा उसे परम पवित्र मुनियों का स्थान कहा गया है। चित्ति नामक तृतीय प्रपाठक में चातुर्होत्र चित्ति के उपयोगी मन्त्र हैं। युञ्जते नामक प्रपाठक में प्रवर्ग्य के उपयोगी मन्त्र हैं। देववै प्रपाठक में यज्ञीय संकेत हैं। परे नामक प्रपाठक में पितृमेध सम्बन्धी मन्त्र हैं। विद्या, ब्रह्मविद्या और भृगु प्रपाठक इन तीनों को मिलाकर तैत्तिरीयोपनिषद् कहा गया है। नारायणीय प्रपाठक को नारायणीयोपनिषद् कहते हैं। मैत्रायणी आरण्यक कृष्ण यजुर्वेद की मैत्रायणी संहिता से सम्बन्धित है। इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों भाग मिले हुए हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह आरण्यक सात प्रपाठकों में विभक्त है। इस आरण्यक के कई भाग बहुत नवीन प्रतीत होते हैं। इसमें ब्रह्म को अनेक नामों से स्मरण किया गया है।

जैमिनीयोपनिषद् आरण्यक सामवेद से सम्बन्धित है। इसमें चार अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय अनुवाकों में और अनुवाक खण्डों में विभक्त है। चौथे अध्याय के दशम अनुवाक में प्रसिद्ध केन उपनिषद् है। इस आरण्यक में अनेक मन्त्रों की बड़ी सुन्दर व्याख्या पायी जाती है। इसमें अनेक सामों का वर्णन है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आरण्यक ग्रन्थों में सरल यज्ञीय कर्मकाण्डों का विधान करने के साथ ही यज्ञों के आध्यात्मिक स्वरूप का विवेचन किया गया है और ब्रह्म एवं आत्मा के तत्त्वज्ञान का उपदेश किया गया है। इस प्रकार ये आरण्यक ब्राह्मण ग्रन्थों के कर्मकाण्डों और उपनिषदों की ब्रह्मविद्या के मध्य की कड़ी बने हुए हैं। आरण्यक ग्रन्थ वैदिक साहित्य के अमूल्य तथा अभिन्न अंग हैं और इनके महत्त्व की दृष्टि से महाभारत का यह श्लोक अक्षरशः सार्थक सिद्ध होता है—

नवनीतं यथा दध्नो मलयाच्चन्दनं यथा।
आरण्यकं च वेदेभ्य ओषधिभ्योऽमृतं यथा॥

इस्लाम : लालच

ऊंची तनख्वाह तथा सुविधाओं का लालच देकर सऊदी अरब भेजे जाने वाले लोगों के साथ कितना अमानवीय व्यवहार किया जाता है, इसका रहस्योद्घाटन वहां से लौटे एक व्यक्ति ने किया है।

रघुवीर नगर (दिल्ली) निवासी श्री ललित कुमार ने यहां डिफेंस कालोनी पुलिस में दर्ज कराई रिपोर्ट में यह रहस्योद्घाटन किया है।

उन्होंने आरोप लगाया कि मस्जिद मोठ स्थित 'इण्टर लिंक इण्टरनेशनल' के एक व्यक्ति ने 'उससे ग्यारह हजार रुपए लेकर इसी वर्ष पहली जून को पेंटर की नौकरी बताकर सऊदी अरब भेज दिया। एग्रीमेंट में तीन हजार रुपया मासिक वेतन कहा गया था। वहां पहुंचने पर एक कृषि फार्म पर काम करने को कहा गया।

श्री ललित कुमार ने आरोप लगाया है कि वहां उसे तथा अन्य भारतीय मजदूरों को गुलामी की तरह रखा जाता था तथा कड़ा काम लिया जाता था। फार्म के सुपरवाइजर ने उसे धर्म-परिवर्तन कर मुसलमान बन जाने के लिए दबाव डाला तथा मना करने पर उसकी बुरी तरह पिटाई की गई।

श्री ललित कुमार किसी प्रकार पुलिस तक पहुंच गये तथा २ अगस्त को भारत वापस आने में सफल हो सके।

उन्होंने आरोप लगाया कि 'इंटरनेशनल संस्था' इसी प्रकार भारत के लोगों को ऊंची तनख्वाह का लालच देकर सऊदी अरब भेज रही है तथा वहां उनका बुरी तरह उत्पीड़न व शोषण किया जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत में भारतीयों का राज्य है या अल्पसंख्यकों का ?

—आनन्दप्रिय पंडित,

स्वराज्य प्राप्ति के साथ देश का विभाजन हुआ था—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रूप में। परन्तु हमारा संविधान जब तैयार हो गया और छब्बीस जनवरी सन् १९५० को लागू हो गया, तब हमारा देश हिन्दुस्तान न रहा। संविधान के अनुसार इसका नाम खिचड़ीस्तान उपयुक्त है।

विभाजन के समय ईसाई मिशन अपना बोरिया-बिस्तर बांधकर चलने की तैयारी में थे और मुसलमान भी भयभीत थे परन्तु हमारी साम्प्रदायिक सरकार ने उन्हें आश्वासन दिया कि तुम भारत में हिन्दुओं के समान नागरिक हो—अपना काम आनन्दपूर्वक करते रहो।

विभाजन के पश्चात् जो मुसलमान पाकिस्तान नहीं गये, वे भारत के नागरिक के रूप में रहे। परन्तु हमारी कांग्रेसी सरकार ने जिसने महात्मा गांधी जी से मुस्लिम तुष्टीकरण नीति को अपनाया था, अल्पसंख्यकों के रूप में उनका स्वतन्त्र अस्तित्व स्वीकार किया।

भारत में चुनाव में संयुक्त मताधिकार है और चुनाव में जिस पक्ष को जीतना हो, उसे मुस्लिमों के संगठित मत प्राप्त करने के लिये उनके हितों की रक्षा करने का वचन देना पड़ता है। स्वाभाविकतया चुनाव के पश्चात् जो भी सरकारें बनीं वे मुस्लिमों के हितों की रक्षा करने के लिये वचनबद्ध थीं। हमारी सरकार भी अपनी सत्ता की रक्षा के लिये मुस्लिम संगठनों के आंदोलनों से झुक जाती है।

अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में इस समय कुरान के आधार पर मुस्लिमों का एक नया संगठन खड़ा हुआ है, जिसका प्रभाव भारत के मुसलमानों पर भी पड़ा है। बंबई के इलस्ट्रेटिड वीकली के अनुसार भारतके अधिकतर मुसलमान स्पष्ट रूप से कह रहे हैं कि हम पहले मुसलमान हैं फिर भारतीय। यदि भारत के सब नागरिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय बन जाते—तो अल्पसंख्यकों की समस्या ही उत्पन्न नहीं होती। मुस्लिमों को राजी करने के लिये हमारी सरकार हिन्दू संस्थाओं को साम्प्रदायिक कहती है और जब कभी हिन्दू-मुस्लिम दंगे होते हैं, सरकारी हिन्दू कर्मचारी भी दोष हिन्दू संस्थाओं को देते हैं। परिणामस्वरूप अपने आपको राष्ट्रवादी मानने वाला हिन्दू अपने आपको हिन्दू कहलाने में शर्म अनुभव करता है।

भारत सरकार ने अल्पसंख्यक आयोग का गठन किया है जिसमें मुसलमान के साथ हरिजन को भी सम्मिलित किया गया है। कुछ दिन पूर्व अहमदाबाद में इस अल्पसंख्यक आयोग का सम्मेलन हुआ था। इसके स्वागताध्यक्ष तथा अध्यक्ष दोनों मुसलमान थे। सम्मेलन से एक दिन पूर्व कुछ हरिजन नेताओं को बुलाकर कुछ मुसलमान नेताओं ने कहा कि हिन्दुओं के साथ रहकर कब तक आप अपमानित होते रहोगे? सम्मेलन ने अल्पसंख्यक आयोग के मुसलमानों को आदेश दिया कि किसी भी स्थल पर हिन्दुओं द्वारा हरिजनों पर अत्याचार हो तो प्रत्येक मुस्लिम का कर्तव्य है उनकी सहायता को दौड़ा जाये और हरिजनों की सहानुभूति प्राप्त करे। मेरी अल्पमति में सबल मुस्लिम संगठन के साथ हरिजनों का गठबंधन देश के लिये बड़ा विघातक सिद्ध होगा और हरिजनों में तथा हिन्दुओं के संबंधों में विघातक सिद्ध होगा। मेरी अल्पमति में अल्पसंख्यक आयोग का गठन करके सरकार ने हिमालय जैसी भारी भूल की है।

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात् पाकिस्तान और बंगलादेश में हिन्दू नामशेष हो रहे हैं। उसके लिये भारत सरकार किसी स्वतन्त्र राष्ट्र की आंतरिक बातों में दखल नहीं दे सकती ऐसा कहती है। भारत की कोई हिन्दू संस्था उनकी सहायता करने को वहां नहीं जा सकती। परन्तु गुटनिरपेक्ष देशों के सम्मेलन में पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री जियालुहक्क आये थे। उन्होंने कराची में जाकर एक पत्रकार से कहा कि भारत में बसने वाले मुसलमान अरक्षित हैं और उनकी दशा देखकर हमें चिन्ता होती है। भारत के विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तान को अपना विरोध प्रदर्शित किया है। पर भारत की बात सुनता कौन है?

विभाजन के पश्चात् दोनों देशों में प्रेममय संबंध बने रहें, इसके लिये लियाकत अली-नेहरू संधि हुई थी और कोई भी पत्रकार इस संधि की लक्ष्मण-रेखा भंग करे तो उसकी ताड़ना की जाती है परन्तु पाकिस्तान के पत्र भारत के विरुद्ध विषवमन करते ही रहते हैं। इसका कोई इलाज नहीं। देश के बहुसंख्यक हिन्दू होने पर भी हिन्दुओं की आवाज भारत के किसी भी क्षेत्र में सुनाई नहीं देती। आज असम पाकिस्तान न बने, इस निमित्त जो चालीस लाख बंगाली मुसलमान बंगलादेश से असम में घुस आये हैं, उनकी रक्षा करना हमारी सरकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपना पवित्र कर्तव्य समझती है और छात्रों का जो असम में देश की रक्षा करने के लिये आंदोलन कर रहे हैं, दमन करती है।

इस परिस्थित में यदि देश के हिन्दू जाग्रत नहीं हुए और सोते रहे तो हमारी दशा वही होगी जब महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरी ने देश पर आक्रमण किया तो हिन्दू गंभीरता नहीं समझ पाये और एक हजार वर्षों तक मुसममानों का राज हो गया। इस देश में हमारी संस्कृति जब कीड़े-मकौड़ों को भी संभालती है तो किसी अल्पसंख्यक के प्रति अन्याय, अत्याचार करेगी इस भ्रम से हमारी सरकार बाहर आ जाये तो अच्छा है।

इस्लामी देशों में गैर-मुस्लिमों के साथ अत्याचार

दिल्ली से प्रकाशित होने वाले दैनिक टाइम्स आफ इण्डिया के ११ जुलाई के अंक में यू० एन० आई० के हवाले से प्रकाशित एक समाचार के अनुसार रमजान के महीने में सऊदी अरब सरकार ने उपवास के समय में पानी पीने या खाना खाने वाले गैर-मुस्लिमों को ४०-४० कोड़े लगाने की सजा दी थी, जबकि सऊदी अरब क शाह फहद ने विश्व के मुसलमानों से कुरान की परम्पराओं एवं व्याख्याओं में समयानुसार संशोधन पर विचार के लिए समस्त मुस्लिम देशों एवं धर्माचार्यों से अपील की है। भारत में भी श्री रफीक जकारिया, श्री बरकत अहमद आदि ने भी इस सम्बन्ध में समाचारपत्रों में अनेक लेख लिखे हैं। हिन्दुस्तान टाइम्स ने भी सम्पादकीय लेख में इस्लाम एवं मुस्लिम पर्सनल लॉ में संधि पर जोर दिया है। परन्तु अधिकतर यहां तक कि ९५ प्रतिशत मुसलमान आज भी अपने आपको विदेशी (अरबी) और तर्कविरुद्ध बातों से जोड़े चले जा रहे हैं। देश के राजनैतिक नेता व दल वोट संग्रह के लालच में इन अंधविश्वासों को दूर करने के लिए और उनकी भारतीय विरासत की पहचान अपनाने में संकोच करते हैं।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिए

१. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	६० पैसे
२. भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु:	५० पैसे
३. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	५० पैसे
४. हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	५० पैसे
५. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	५ रु०
६. हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	५० पैसे
७. पोस्टर—दो प्रकार के	८० पैसे
८. इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	५० पैसे
९. शुद्धि का मंत्र—कुंवर चांदकरण शारदा	८० पैसे
१०. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	५० पैसे
११. हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	५० पैसे
१२. इस्लाम—एक परिचय	५० पैसे
१३. Bible in the Balance	६० पैसे
१४. A Challenge to the Christian Faith	२५ पैसे
१५. पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	५० पैसे
१६. पादरियों को चुनौती	५० पैसे
१७. बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी	५० पैसे
१८. क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	५० पैसे
१९. और पादरी भाग गया	५० पैसे
२०. Christianity Unmasked	१.०० रु०
२१. The Clarion Call	४० पैसे
२२. जन-ज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	६ रु०
२३. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	५० पैसे
२४. क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	५० पैसे
२५. तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	६० पैसे
२६. जन-ज्ञान का महान् हिन्दू विशेषांक	६)

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत कमीशन

५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन

प्रत्येक आदेश के साथ १/४ धन अगाऊ भेजें।

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली–५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होमलैंड की मांग : समस्या का एकमात्र हल

—सुव्रत चटर्जी, महामन्त्री, बंगला मुक्ति मोर्चा

३ जून १९४७ को ब्रिटिश सरकार ने भारत के विभाजन की घोषणा कर दी। पंजाब और बंगाल दोनों ही दो-दो भागों में बंट गए। बंगाल का पूर्वी भाग और पंजाब का पश्चिमी भाग पाकिस्तान में चला गया। पूर्वी पाकिस्तान वाद में बंगलादेश के रूप में उभर आया। विभाजन के परिणामस्वरूप जो भीषण हत्याकांड हुआ, उससे बाध्य होकर लाखों हिन्दुओं को अपना घरवार छोड़कर भारत में शरण लेनी पड़ी। लाखों हिन्दू और बौद्ध शरणार्थी बनकर भारत के शरणार्थी शिविरों में आ गए। जिस समय विभाजन हुआ उस समय पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दू और बौद्ध कुल जनसंख्या के ३० प्रतिशत थे।

विभाजनकालीन समझौते का उल्लंघन

विभाजन के समय जो समझौता हुआ था उसमें यह निश्चित हो गया था कि सम्बद्ध क्षेत्रों में अल्पसंख्यकों के पूरे अधिकार होंगे और उनको पूरासंरक्षण प्रदान किया जायेगा। भारत ने इस समझौते का पूरी तरह आदर किया। यहां रहने वाले मुस्लिम अल्पसंख्यकों को पूरी तरह संरक्षण प्रदान किया गया। इस तथ्य का ज्वलंत सबूत यह है कि भारत में रहने वाले मुसलमानों की जनसंख्या तीन गुणा हो गई है। पाकिस्तान का व्यवहार इसके नितान्त विपरीत था। उसने अपने यहां के हिन्दू अल्पसंख्यकों को संरक्षण देने के स्थान पर तंग करना आरम्भ कर दिया। उनका प्रत्येक प्रकार से दमन किया गया। वह तो यही चाहता था कि या तो उन्हें मुसलमान बना लिया जाय अथवा मार डाला जाए। यदि दोनों ही बातें सम्भव न हों तो उनको पाकिस्तान से निकाल बाहर किया जाये। पाकिस्तान की इस नीति के अनुसार पश्चिमी पाकिस्तान के ९९ प्रतिशत हिन्दुओं और सिखों को या तो मार डाला गया अथवा मार-पीट कर भारत भेज दिया गया। काफी संख्या में लोगों को मुसलमान बना लिया गया। परन्तु पूर्वी पाकिस्तान, जो अब बंगला-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश बन गया है, वहां यह क्रम अभी भी जारी है। विभाजन के बाद से लेकर अब तक बंगलादेश की जनसंख्या में तीन गुणा वृद्धि हो चुकी है। उस हिसाब से वहां की हिन्दू-बौद्ध जनसंख्या ४ करोड़ होनी चाहिए थी, मगर वह कम होकर केवल १.५ करोड़ ही रह गई है। बाकी को मार डाला गया, मुसलमान बना लिया गया अथवा जबरदस्ती मार-पीट कर, शरणार्थी बनाकर भारत भेज दिया गया।

घुसपैठियों और शरणार्थियों में अन्तर

लगभग एक करोड़ हिन्दू और बौद्ध बंगलादेश से भारत आ गए। ये लोग बंगलादेश के साथ लगे सीमावर्ती राज्यों में फैल गए, जिनमें पश्चिमी बंगाल, असम और त्रिपुरा प्रमुख हैं। इन राज्यों की जनसंख्या पहले ही बहुत अधिक है। कुछ हिन्दू शरणार्थी असम में भी आए, जिसके परिणामस्वरूप वहां की स्थिति की गंभीरता में वृद्धि हो गई। वहां की प्रमुख समस्या बंगलादेश से हो रही मुसलमानों की घुसपैठ थी। ये लोग काफी संख्या में बंगलादेश को छोड़कर असम में आ रहे थे। इस घुसपैठ का वास्तविक उद्देश्य यह था कि असम को मुस्लिमबहुल राज्य बनाया जाए और बाद में राजनीतिक दबाव द्वारा उसे बंगलादेश में मिलाने का रास्ता निकाला जाए।

मानवीय अधिकारों का प्रश्न

इस समय बंगलादेश में लगभग १.५ करोड़ हिन्दू और बौद्ध रह रहे हैं। उन्हें न तो कोई राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं और न ही उनके मानवीय अधिकार कायम हैं। उनकी हत्या का दौर प्रायः चलता रहता है। जो मुसलमान इनकी हत्या करते हैं, उन्हें सरकार का पूर्ण समर्थन प्राप्त रहता है। उनकी जीवन-रक्षा का प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आज भारत में फिलस्तीनी मुक्ति मोर्चे के शरणार्थियों की हत्या पर तो शोर मच जाता है। यदि दक्षिण अफ्रीका के काले लोगों को कुछ कष्ट होता है, तो सब जगह आवाज उठने लगती है, मगर पूर्वी पाकिस्तान अथवा बंगलादेश के हिन्दुओं और बौद्धों की नृशंस हत्या कर दी जाती है और किसी के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती।

होमलैंड की माँग का औचित्य

यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानवीय समस्या है। 'यदि बंगलादेश में रहने वाले अल्पसंख्यकों को बचाना हो, तो उसका एक ही तरीका है कि उनका तबादला बंगलादेश, त्रिपुरा और असम के मुसलमानों से कर लिया जाय। जहां-जहां से मुसलमानों को बंगलादेश में भेजा जाए वहां-वहां हिन्दू शरणार्थियों को बसा दिया जाय। इन्हें बसाने के लिए बंगलादेश से क्षेत्र भी मांगा जा सकता है। यह क्षेत्र बंगलादेश के हिन्दू और बौद्ध शरणार्थियों का देश बन जायेगा। बंगलादेश से क्षेत्र की मांग स्वर्गीय सरदार पटेल ने भी की थी, जब वे भारत सरकार के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गृहमन्त्री और उपप्रधानमन्त्री थे। इसके अतिरिक्त एक अन्य विकल्प भी है, जो बहुत ही अधिक व्यावहारिक और उपयुक्त प्रतीत होता है। बंगलादेश के हिन्दुओं का बंगलादेश की भूमि पर ३० प्रतिशत हक है। इसलिए भी कि समझौते के अनुसार बंगलादेश की सरकार हिन्दुओं को किसी प्रकार का संरक्षण प्रदान नहीं कर सकी। अतः उन्हें यह हक है कि वे बंगलादेश की भूमि का ३० प्रतिशत मांगें। इस क्षेत्र पर वे शांति और प्रतिष्ठा से अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

बंगलादेश के हिन्दुओं और बौद्धों की होमलैंड की मांग उतनी ही उचित और आवश्यक है जितनी फिलस्तीनियों की है। वे भी इस्राईल से "होमलैंड" ही तो मांग रहे हैं। फिलस्तीनी शरणार्थियों की संख्या लगभग १० लाख है। आज ऐसे इस्लामी अरब राष्ट्रों की संख्या इतनी है कि जो अपनी धरती पर बड़ी आसानी से उनका पुनर्वास कर सकते हैं। तेल के कारण ये देश बहुत समृद्ध भी हो चुके हैं, अतः उनके हितों की हर प्रकार से रक्षा कर सकते हैं। लेकिन हिन्दू और बौद्ध शरणार्थियों का और कोई स्थान नहीं। वे केवल भारत में ही आ सकते हैं। यह भी ठोस तथ्य है कि उन लोगों ने अपनी मातृभूमि के विभाजन का घोर विरोध किया था और उन्हें पाकिस्तान और बंगलादेश के मुस्लिम लोगों की धर्मान्धता के आगे उनकी इच्छा के विरुद्ध झोंक दिया गया। उसके कारण उन्होंने अनगिनत कष्ट और यातनाएं सहन की हैं। उन्हें भारत सरकार का नैतिक और कानूनी समर्थन प्राप्त होना चाहिए।

भारत फिलस्तीनी शरणार्थियों की "होमलैंड' की मांग का बड़ा प्रबल समर्थक है। उन लोगों को भारत में कूटनीतिक मान्यता भी दी गई है। सभी अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर अनेक अरब और मुस्लिम राष्ट्र उनका हर प्रकार से समर्थन करते हैं। उन्हें सभी प्रकार की सहायता भी प्राप्त होती है। इन परिस्थितियों में यह बड़ी तर्कसंगत बात है कि भारत बंगलादेश के गैर-मुस्लिम शरणार्थियों द्वारा की जा रही "होमलैंड" की मांग का अपनी पूरी शक्ति से समर्थन करे, ठीक उसी तरह जिस तरह वह फिलस्तीनी शरणार्थियों की मांग का समर्थन करता आया है। हमें दोहरे मापदंड नहीं अपनाने चाहिए। यदि दस लाख फिलस्तीनियों को "होमलैंड" चाहिए तो बंगलादेश के १.५ करोड़ गैर-मुस्लिमों को भी "होमलैंड" मिलना चाहिए। हम दक्षिण अफ्रीका और दक्षिण-पूर्वी अफ्रीका के लोगों के लिए तो मानवीय अधिकारों की मांग करते रहें, मगर बंगलादेश के हिन्दुओं और बौद्धों के जाति संहार पर मौन साधे बैठे रहें—इस प्रकार की उपेक्षावृत्ति अक्षम्य ही कही जायेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—रामस्वरूप

मूर्त्तिपूजक रक्षा के अधिकारी

भारत में बहुसंख्यक मूर्त्तिपूजक (सनातनी, जैन, बौद्ध आदि) हैं। इस देश में सबको अपने-अपने तरीके से उपासना-पूजा-आराधना-अर्चना-साधना आदि करने का अधिकार है। शर्त इतनी है कि पूजा के लिए किसी के प्राण व सम्मान आदि की हानि न हो। अधिकतर मुस्लिम देशों में ऐसी स्वतन्त्रता नहीं। वहां सब प्रकार के हिन्दू, यहूदी ईसाई आदि मन्दिर, गुरुद्वारा, गिरजाघर आदि नहीं बना सकते। भारत देश की यह उदारता है कि अधिसंख्य मूर्त्तिपूजक हैं फिर भी मूर्त्तिपूजक होना अनिवार्य नहीं है। विदेशों से आये पारसी-ईसाई, मुसलमान आदि को भी अपनी-अपनी रीति से उपासना करने की छूट है।

परन्तु पिछले जून के तीसरे हफ्ते में राजधानी दिल्ली में लोगों ने पोस्टर देखे जिनमें कुरान का हवाला देतेहुए यह कहा गया कि मूर्त्तिपूजकों के प्राणों का नाश करना ही चाहिए। खेद है कि भारत सरकार पता नहीं कर सकी कि यह वाचिक हिंसा किसने की। अधिक खेदजनक बात यह है कि जो मूर्त्तिपूजक (सनातनी-जैन-बौद्ध आदि) जन प्रतिनिधि (विधायक-सांसद) जिला प्रमुख-प्रखण्ड प्रधान (नगर पालिकाध्यक्ष) हैं वे सबके सब ज्ञापन क्यों नहीं तैयार कर सके तथा भारत सरकार को सचेत क्यों नहीं कर सके? जो लोग मूर्त्तिरक्षक (सिख, आर्य आदि) हैं वे लोग भी जन प्रतिनिधि हैं ही। अतः मूर्त्तिरक्षक जन प्रतिनिधि संगठित करें मूर्त्तिपूजक जन प्रतिनिधियों को। भारत व राज्यों की सरकारों का दायित्व है सबके प्राण-सम्मान की रक्षा का। उसके लिए मूर्त्तिभंजक व मूर्त्तिपूजक दोनों ही रक्षणीय हैं। विदेशी मुस्लिमों ने भारत पर आक्रमण किए व बाद में शासन किया तब मूर्त्तिपूजकों के प्राण व मूर्त्तिपूजकों की महिलाओं के सम्मान की हानि होती रही। अब भारत स्वतन्त्र है। विदेशी मुस्लिमों के षड्यन्त्र की सफलता से पाकिस्तान बना तथा मूर्त्तिभंजन का दुराग्रह रखने वाले वहां चले गए। भारत में वे मुसलमान रह गए जो मूर्त्तिपूजकों से अपनत्व रखते हैं, जैसे कश्मीर के मुसलमान। उन्होंने गोहत्या बंदी कर रखी है। ऐसे ही अन्य राज्यों में भी उदार मुसलमान हैं।

जनवरी १६८० से विदेशी मुस्लिम संगठनों की सक्रियता बढ़ी है। ये बार-बार दंगे कराते हैं। अगस्त,'८० में जब तेजी से दंगे हुए तो तत्कालीन गृहमन्त्री (ज्ञानी जैलसिंह जी) ने आशंका प्रकट की थी कि विदेशी मुस्लिमों के बहकावे में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो अतिअल्प भारतीय मुस्लिम हैं वे भी दंगे करते हैं—उत्तेजक पोस्टर लगाते हैं—घृणित प्रचार करते हैं। सुना है कि मस्जिदों में हथियार इकट्ठे करते हैं—पुलों के पास मजार बनाते हैं। अतः सब स्थानों पर मूर्त्तिपूजक जनप्रतिनिधि मिलकर ज्ञापन दें तथा सरकार का मनोबल इतना बढ़ावें कि सरकार ऐसे मूर्त्तिभंजक लोगों को देशनिकाला दे सके। साथ ही विदेशी मुस्लिम षड्यन्त्र के शिकार जो यानी भारत के मूर्त्तिभंजक हैं उनमें दंगे करने--उत्तेजना फैलाने--हथियार जमा करने—पुलों के पास मस्जिद आदि बनाने की वृत्ति न रहे, यह प्रयास सफलता से भारत सरकार करे। मूर्त्तिपूजक जन-प्रतिनिधि भारत सरकार से प्रश्न करें कि जब पुलों के पास कोई गिरजाघर-मंदिर गुरुद्वारा नहीं बनता तो मजार क्यों ? क्या युद्धकाल में सब पुलों को उड़ाने का यह विदेशी षड्यन्त्र है ? विश्वास है कि मूर्त्तिपूजक जन-प्रतिनिधि कायरता व नपुंसकता से अपने को मुक्त करेंगे व भारत सरकार को समर्थ बनाएंगे।

अधिसंख्य भारतीय मुसलमान गांवों में रहते हैं। वे मूर्त्तिभंजन के दुराग्रह से मुक्त हैं, वे आक्रमण नहीं करते। शहरी मुसलमानों में भी प्रायः ऐसे उदार हैं। अति-अल्पसंख्य मुसलमान जो मूर्त्तिभंजक हैं उन पर नियंत्रण हो जाना चाहिए भारत भक्त मुसलमानों का। सब समझदार मुसलमान मिलें तथा विदेशी मुस्लिम षड्यन्त्र ग्रस्त मुसलमानों को दुराग्रह, हिंसा आदि से मुक्त करा दें। विदेशियों के बहकावे में आने वाले लोग चाहे कुछ भी करें, भारत के और टुकड़े नहीं हो सकेंगे। पाकिस्तान की जनता जग रही है। वह सैनिक शासन को उखाड़ देगी तथा वहां ऐसा लोकप्रिय शासन होगा जो भारतप्रेमी होगा।

डा० युद्धवीरसिंह नहीं रहे

दिल्ली। दिल्ली के कर्मठ व मानवताप्रेमी वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता डा० युद्धवीर सिंह का ८६ वर्ष की अवस्था में १८ जून १९८३ को निधन हो गया। डा० युद्धवीर सिंह बचपन से ही स्वामी दयानन्द से प्रभावित थे और उन्होंने आर्यसमाज के उद्देश्यों व नियमों का अपने जीवन में भरसक परिपालन किया। स्वदेश प्रेम में अटूट श्रद्धा रखते हुए वे समाज सेवा करते रहे। वे प्रातः हवन व सन्ध्या किए बिना जल भी ग्रहण नहीं करते थे। वे गांधीजी के स्वदेशी और रचनात्मक कार्यों के पूर्ण समर्थक थे। दिल्ली में चर्खा क्लब की नींव रखकर, आंधी हो या तूफान, वे नियमित रूप से टाउन हाल में गांधीजी की प्रतिमा के नीचे बैठकर चर्खा काता करते थे। १९७६ में समाज सेवी डा० युद्धवीर सिंह को भारत सरकार ने पद्मविभूषण से अलंकृत किया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

—निशाकान्त मिश्र

पिता का प्रेम

किसी गांव में एक बूढ़ा आदमी रहा करता था। उसकी कोई सन्तान न थी। वृद्धावस्था में उसके एक लड़का हुआ। लड़का धीरे-धीरे बढ़ने लगा। बड़े होने पर उसने मकान बनाने वाले कारीगर का काम सीख लिया।

उसी गांव में एक धनी सेठ रहा करता था। उसके एक लड़की थी। सेठ ने लड़की के विवाह का आयोजन किया।

विवाह के पूर्व उसने अपना घर ईंट का बनवाना चाहा।

कारीगर के रूप में बूढ़े का लड़का नियुक्त हुआ। जब दो मंजिलें बन चुकी तो सेठ ने कहा— "तीसरी अन्तिम मंजिल शीघ्र बन जानी चाहिए—बेटी के विवाह वाला दिन समीप है। अतः दोपहर भी काम जारी रहता तो अच्छा था—इसके लिए दो गुनी मजदूरी मिलेगी।"

गर्मी का मौसम तो था ही। सूर्य अपनी किरणों से पूरी पृथ्वी को जला रहा था।

बूढ़े ने देखा—काफी देर हो गयी है, अभी भी उसका लड़का काम करके नहीं आया—तो वह उसके पास गया। उसने बड़े ही मीठे स्वर में आवाज दी—

"बेटे! चला आ—काफी देर हो गई—अभी तक तू काम कर रहा है।"

लड़के ने नीचे खड़े पिता की ओर देखकर जवाब दिया—"पिताजी! सेठ की लड़की की शादी नजदीक है अतः सेठ ने कहा है कि दोपहर को भी यदि काम जारी रहता तो अच्छा था।" लड़के ने आगे कहा—"इसलिए आ नहीं सकता।"

बूढ़े पिता ने कहा—बड़ा हठ किया कि वह काम न करे। किन्तु लड़के ने कोई ध्यान नहीं दिया। बूढ़ा चुप-चाप घर चला गया।

जब बूढ़ा वापस पुनः लड़के के पास आया तो उसकी गोद में छह महीने का एक नन्हा शिशु था।

लड़के ने जब अपने बच्चे को धूप में लेकर पिता को खड़े देखा तो आग बबूला हो उठा। उसने कहा—"पिता जी! आप इतने मूर्ख हैं कि इस छोटे से बच्चे को धूप में लेकर खड़े हैं।"

बूढ़े ने जवाब में कह दिया—"मैं नहीं जाऊंगा।"

लड़का उत्तेजित हो उठा और उसने कहा—"क्यों नहीं जाओगे? देख नहीं रहे कि इसे कितनी गर्म धूप लग रही है?"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बूढ़े ने कहा—"जब मेरा लड़का धूप में है, तो तेरा भी धूप में रहेगा।" यह कहकर बूढ़ा चुप हो गया।

पिता की बात सुनकर लड़का प्रेम विह्वल हो उठा। उसने पिता की बात समझ ली थी। मन में सोचने लगा— "जिस प्रकार मुझे अपने बच्चे को धूप में देखकर दुःख हो रहा है—उसी प्रकार पिता जी को मुझे धूप में काम करते देख कर दुःख हो रहा है...।"

उसने काम करने का सारा सामान फेंक दिया।

तीसरी मंजिल से लड़खड़ाता नीचे आया और पिता के चरणों में गिर पड़ा।

बूढ़े ने उठाकर उसे छाती से लगा लिया—दोनों का चेहरा आंसुओं से भीग गया।

शहीद बिस्मिल : मां और भारत माता

—डा० नागेश्वर सिंह 'शशींद्र'

भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास वीरों के अनुपम बलिदान की ही कहानी है, किन्तु मैं जिस वीर मां और उसके अमर शहीद वीर बेटे की कहानी सुना रहा हूं, वह बड़ी ही प्रेरक है।

प्रसिद्ध काकोरी कांड के सिलसिले में पंडित रामप्रसाद बिस्मिल को फांसी की सजा सुना दी गयी थी। फांसी पर चढ़ने से एक दिन पूर्व उनकी बूढ़ी मां जेल में मिलने के लिए गयीं। मां को देखते ही बिस्मिल बच्चे की तरह फूट-फूट कर रोने लगे। परन्तु उनकी मां उनसे कुछ कम वीर नहीं थीं। मां ने अपने बेटे के आंसू पोंछते हुए कहा, "बेटा रामू, इतने दिनों तक तुम भारतमाता की आजादी के लिए आंसू बहाते रहे और अंतिम समय में जब कल फांसी के तख्ते पर चढ़ने जा रहे हो, तो मेरे लिए रो रहे हो, तुम्हारा शरीर और आत्मा भारत माता के ही हैं और वे दोनों भारतमाता की बेड़ी को काटने में काम आ रहे है।"

अपनी माता के इन शब्दों का उत्तर देते हुए वीर पुत्र ने कहा, "मां, मुझे मरने का दुःख नहीं है। जो इस दुनिया में जन्म लेता है, उसको एक-न एक दिन मरना ही होता है, पर जिस प्रकार अग्नि के पास रहकर घी पिघले बिना नहीं रहता, उसी प्रकार मां को सामने देखकर बेटे का हृदय पिघल गया। तुम विश्वास करो कि तुम्हारा बेटा एक वीर की तरह फांसी पर चढ़ेगा।"

फांसी के तख्ते पर चढ़ते हुए बिस्मिल ने बड़े साहस के साथ कहा था, "वन्दे मातरम, जय हे भारतमाता!"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गांधी ने कहा था—

देश के विभाजन से पहले मेरे शरीर के दो टुकड़े होंगे

मैं अहिंसा का पुजारी होने के नाते प्रस्तावित विभाजन का बलपूर्वक विरोध नहीं कर सकता, यदि भारत के मुसलमान वास्तव में चाहें। परन्तु मैं भारत के विभाजन के कार्य में स्वेच्छा से भाग नहीं ले सकता। मैं उसका विरोध करने में प्रत्येक अहिंसात्मक उपाय का इस्तेमाल करूंगा। विभाजन एक मिथ्यावाद है। मेरी आत्मा इसके खिलाफ बगावत करने लगती है कि हिन्दुत्व और इस्लाम दो विरोधी संस्कृतियां और सिद्धांत हैं। मैं इस विचार के खिलाफ हूं कि लाखों भारतीयों ने, जो कल तक हिन्दू थे, आज सिर्फ इस्लाम ग्रहण कर लेने से अपनी राष्ट्रीयता को भी बदल दिया है।

(हरिजन, १३ अप्रैल १९४०)

एम्बिट कार्पोरेशन

एटलांटा बिल्डिंग, बम्बई

के सौजन्य से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—एक समीक्षक की लेखनी से

कुरान को जब्त करो ! ! !

कुरान भले ही एक बहुत बड़े जनसमूह की धर्मपुस्तक हो, किन्तु इस पुस्तक की शिक्षाएं, अपने विचार न मानने वालों को जीने का अधिकार नहीं देतीं। भारत में पिछले १०० वर्ष में लाखों व्यक्तियों की हत्या का दायित्व इस पुस्तक पर है। इसलिए भारत सरकार से हमारी मांग है कि कुरान को जब्त करो। —सम्पादक

विश्व शान्ति का प्रहरी भारतवर्ष प्राचीनकाल से मानवतावादी सिद्धान्तों के संरक्षण हेतु व्यावहारिक पग उठाता आ रहा है। सत्य और विवेक के प्रत्यक्ष द्रष्टा ऋषि-महर्षियों की चिन्तन परम्परा ने इन सिद्धान्तों की रक्षा में और भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। किन्तु खेद कि भारत में ईसाकाल के आसपास विदेशी संस्कृतियों के आगमन से महाभारत युद्ध के बाद की शान्ति पुनः अशान्ति में परिवर्तित होने लगी। भारत का बेचैन जन-मानस महाभारत के कारण पहले ही दुःखमग्न बैठा था। तब अचानक शयनावस्था को प्राप्त हुई शान्ति के भंग होने से भारतीय मानस उद्वेलित हो उठा और राष्ट्र के कर्णधार भारतीय राजाओं का मनमस्तिष्क भी दोलायमान हो चिन्तित हो उठा। विदेशी संस्कृतियों के आगमन से राष्ट्रीय व सांस्कृतिक परम्पराओं को गहरा आघात लगा। इन परम्पराओं पर आघात करने वाली शक्तियों में एक शक्ति इस्लाम है, जिसने तर्क और प्रमाण को खूंटी पर टांगकर भारतीय जन-समुदाय में अपने मस्तिष्क की दुर्गन्ध

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिखेरी। आज इस अभिशाप के प्रबल रूप लेने पर देश और वर्तमान समाज को अभिशापग्रस्त देखते हुए कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर विचार करना अपेक्षित है, क्योंकि यदि शीघ्र ही शान्ति, सुरक्षा को नष्ट करने वाले तत्त्वों पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया तो ऐसा समय निकट ही है, जब शान्ति के प्रहरी भारत को अराजकता के कारण पुन: गुलामी का चोगा पहनना पड़े। अत: राष्ट्र के भविष्य निर्माण हेतु यह आवश्यक है कि वैमनस्य के लिए दोषी कुरआन मजीद जैसे ग्रन्थों पर प्रतिबन्ध लगाकर उन्हें जब्त किया जाये। यदि देश के कर्णधारों ने केवल साम्प्रदायिक विद्वेष समझकर प्रस्तुत तथ्य को अनदेखा कर दिया तो इसका परिणाम पूरे राष्ट्र को भुगतना पड़ेगा।

जब हम प्रेम और सौहार्द को गौण रखकर चलने वाले तत्त्वों का विचार करते हैं तो मुसलमानों के ग्रंथ कुरान मजीद को दोषी पाते हैं। पूर्व के विद्वान् मनीषियों ने कुरान के विषय में यही निष्कर्ष निकाला है। महर्षि दयानन्द ने भी कुरान के विषय में यही निर्णय दिया है। किन्तु पाठक इसका अर्थ यह न समझें कि यहां स्वामी दयानन्द के तर्कों के आधार पर ही कुछ लिखा जा रहा है। राष्ट्र-अहित और साम्प्रदायिक तनाव की बढ़ती विभीषिका को देखकर यह मांग उठायी जानी स्वाभाविक है। वर्तमान स्थिति को देखते हुए कुरान जैसे ग्रंथ देश के लिए अभिशाप बने हुए हैं।

कुछ मुस्लिम विद्वानों का कहना है कि एक गैरमुस्लिम व्यक्ति तो कुरान की शिक्षा से परिचय प्राप्त करने का कष्ट ही नहीं करता। वास्तविकता यह है कि कुरान वैमनस्य फैलाने के लिए सर्वाधिक दोषी है। कुरान को एक सांझी आध्यात्मिक पूंजी ठहराने वाले लोग यह जानते ही नहीं कि आध्यात्मिक सम्पत्ति किसे कहते हैं ? किसे अध्यात्म कहा जाता है ? क्या राष्ट्र या विश्व में द्रोह और अविश्वास फैलाना आध्यात्मिकता है या फिर आत्मीयता व सद्भाव का सत्यानाश करना अध्यात्म है ?

मुस्लिम विद्वान् कहते हैं कि कुरान एक क्रान्तिकारी ग्रन्थ है और यह देखते ही देखते विश्व का पथप्रदर्शक बन गया। ऐसा कहना भ्रान्तिमात्र है। सम्भवत: वे यह नहीं जानते कि कोई महामारी कितनी जल्दी फैलती है। इसी प्रकार कुरान का दोष सर्वत्र फैलता गया। किन्तु इसके विपरीत सद्गुणों के फैलाने के लिए स्वामी दयानन्द जैसे महापुरुष प्रयत्न करते रहे, तब भी आज तक वह प्रचार जन-सामान्य में पूर्णरूपेण नहीं हुआ, क्योंकि यह जगत् की प्रकृति है कि सद्गुण देर में और दुर्गुण शीघ्रता से फैलता है। कुरान के स्वर्ग का वर्णन सुनकर कौन इसकी ओर नहीं जाना चाहेगा ? ऐसे स्वर्ग की तो फिर सब कामना करेंगे। जब ऐसा काम-संसार ही धर्म का लक्ष्य हो तो इसका अर्थ यह है कि कुरान भूत-चरित्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की अपेक्षा रखता है। यही नहीं, जो ईश्वर स्वयं मुश्रिकों को कत्ल करने का आदेश दे रहा हो, उसकी पुस्तक कभी धर्मपुस्तक क्या हो सकती है ? यथा—

फिर, जब हराम महीने "अर्थात् वे चार महीने जिनकी मुहलत "मुश्रिकों" को दी गई है।" बीत जायें, तो "मुश्रिकों" को जहां-कहीं पाओ कत्ल करो, और उन्हें पकड़ो, और उन्हें घेरो, और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे "तोबा" कर लें और "नमाज" कायम करें और "जकात" दें तो उनका मार्ग छोड़ दो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

लगता है कि इस्लाम किसी विषय पर विवेक से काम लेना जानता ही नहीं। वहां तर्क, प्रमाणादि का ध्यान ही नहीं रखा जाता। शिक्षा और समाज पर कुरान के विचारों का दुष्प्रभाव पड़ रहा है। परधर्मियों या हिन्दुओं पर वह साम्प्रदायिकता और पक्षपात का आरोप लगाता है। इस्लाम के मारकाट के सिद्धान्त से ही आज भयंकर स्थिति फैल चुकी है। अतः जो धर्म के नाम पर युद्ध और पारस्परिक द्वेष की भावना का आदेश देकर अशान्ति फैला रहे हों, उन्हें खुली छूट देना स्वयं अपनी गर्दन पर तलवार चलाना है। यही नहीं, मुसलमान बन्धुओं को उनके मदरसों में इसकी कुशिक्षा तो और भी विषवमन कर रही है। अल्लाह (ईश्वर) का कोई भी उपदेश भले ही एक शब्द भी हो, वह मानवता के विरुद्ध नहीं हो सकता। जहां इस पर प्रत्याघात हो रहा है वहां उसके ईश्वरीय होने का भ्रम और राष्ट्रद्रोह करने का परिचय मिलता है। ऐसे ग्रंथ का जो आदर करे, वह खुदा का बंदा और जो विरोध करे वह काफिर ? इससे बड़ा मूर्ख और कौन होगा, जो गुणी व्यक्ति को काफिर कहे। इतने पर भी इस्लाम की शिक्षा जबरदस्ती मुश्रिकों (हिन्दुओं) पर थोप दो—

और यदि "मुश्रिकों" में से कोई व्यक्ति तुमसे शरण का इच्छुक हो, तो उसे शरण दे दो, यहां तक कि वह अल्लाह का कलाम सुन ले, फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दो। यह इसलिए कि ये ऐसे लोग हैं जो जानते नहीं इसलिए इन्हें "इस्लाम" के बारे में सोचने-समझने की पूरी मुहलत मिलनी चाहिए।"

यानी जो इस्लाम को नहीं मानता उसे मार डालो या फिर जो शरण में आया है उसे इस्लाम पढ़ाओ। इसका अर्थ है कि इस्लाम विश्व में सरेआम बवंडर फैलाने की शिक्षा देता है। उसका मैत्री और भ्रातृत्व से कोई सम्बन्ध नहीं। ऐसा उपदेश देने वाला ग्रंथ अवश्य ही संदेहजनक है। जैसे कुरान की आयत—

और यदि अपने वचन देने के बाद ये अपनी कसमों को तोड़ डालें और तुम्हारे "दीन"—"धर्म" पर चोट करने लगें, तो "कुफ्र" के नेताओं से युद्ध करो —निश्चय ही उनकी कसमें कुछ नहीं—कदाचित् वे बाज आ जायें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या तुम ऐसे लोगों से ही लड़ोगे, जिन्होंने अपनी कसमों को तोड़ा, और "रसूल" को निकाल देने की फिक्र की और उन्होंने तुमसे पहले छेड़ भी की? क्या तुम उनसे डरते हो? यदि तुम "ईमान" वाले हो, तो अल्लाह इस बात का ज्यादा हकदार है कि उससे डरो।

अल्लाह को इस्लाम में कहा गया है कि वह इस्लामियों के गुनाहों को क्षमा कर देगा। क्या कहने हैं ऐसी क्षमाशीलता के? जो सज्जन, परोपकारियों को तो क्षमा नहीं करता और मानवमात्र से द्वेष करने वाले इस्लामियों को भी क्षमा कर देता है। उल्टे ऐसे राक्षसों को मुश्रिकों को मारने में सहायता देता है। यह आपसी द्रोह फैलाने का प्रोत्साहन है। ऐसे ईश्वर को इसीलिए दयानन्द जी ने डाकुओं का सरदार माना है। कुरान की आयत में—

'उनसे लड़ो! अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें यातना देगा और उन्हें रुसवा करेगा और उनके मुकाबले में तुम्हारी सहायता करेगा, और "ईमान" वाले लोगों के दिल ठण्डे करेगा।'

अल्लाह की राह के विषय में तो कुरान पढ़कर आश्चर्य ही होता है। जहां जिहाद करना ही अल्लाह की राह बतायी है। जिहाद का अर्थ कुरान में इस्लाम न मानने वालों का कत्ल करना है। अल्लाह का सबसे प्यारा इसे अपनाता है। क्या कहने हैं ऐसे खुदा की वाणी के? अपना दोष-परीक्षण करने की बजाय कुरान में उल्टे सत्य-चिन्तकों पर ही दोष थोपा गया है—

उन्होंने अल्लाह की "आयतों के बदले थोड़े मूल्य में 'सांसारिक लाभ' का का सौदा किया तो अल्लाह के मार्ग से रोकने लगे। निश्चय ही बुरा काम है जो वे करते हैं।' एक धर्म का ग्रन्थ होते हुए भी जिसमें ऐसी अनर्गल बातों का समाहार है, उसे संदेह से परे कैसे माना जा सकता है? कौन ऐसा समालोचक होगा जो इन बातों को सही मानेगा? यह सच्चे भारतीय का ही चरित्र है जो कुरान की ऐसी वाणी को भी सहन करता आ रहा है। किन्तु हर बात की एक सीमा होती है।

यदि कुरान में सत्यादि को स्थान होता तो वहां सत्यादि के ही बल पर इस्लाम फैलाने की शिक्षा दी जाती। किन्तु वहां इसका कोई समाहार नहीं। यही कारण है कि आज विश्व में मारकाट, युद्ध-विभीषिका फैलती जा रही है। मुस्लिम राष्ट्रों का यही हाल है। क्योंकि जिस ग्रंथ की शिक्षा ही ऐसी हो, वहां और क्या होगा? अब भारत में भी पुनः यह शक्ति अपना पैर जमाने में लगी हुई है। इसी कारण कवि को कहना पड़ा कि 'कोतवाल पीछे चले डंडा लेकर चोर।' यही हाल आज इस्लाम के पुजारियों का है। स्पष्ट देखिए, अपने दोष को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे किस प्रकार दूसरों पर मढ़ते हैं—

इन मुश्रिकों के लिए अल्लाह और उसके "रसूल" के नजदीक कोई संधि कैसे हो सकती है सिवाय उन लोगों के जिनसे तुमने "मस्जिद हराम" "कावा" के पास सन्धि की थी ? तो जब तक वे तुम्हारे साथ सीधे रहें, तुम भी उनके साथ सीधे रहो। निस्सन्देह अल्लाह उन लोगोंसे प्रेम करता है जो डरने वाले हैं।

वे यह समझने की कोशिश ही नहीं करते कि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के उद्-घोषक किसी से शत्रुता नहीं कर सकते। जब उन्हें अध्यात्म का ही पता नहीं तो संधि को क्या जानेंगे ? भारतीय मानस का सिद्धान्त ही भ्रातृत्व का आदर करना है। हिन्दुओं के तो विकृत पुराण आदि ग्रंथ भी मैत्री और बन्धुत्व को लेकर चलते हैं। किन्तु वैदिक ग्रन्थ तो न केवल राष्ट्र के अपितु सम्पूर्ण विश्व के हित की कामना को लक्ष्य कर रचे गए हैं। आदेश-लक्ष्य का यही रूप यहां सर्वत्र मिलता है। किन्तु इस्लाम के ग्रन्थ विश्व स्तर तो दूर, राज्य स्तर पर भी वैमनस्य लेकर चलते हैं। ऐसे ग्रन्थों पर तो पूर्ण प्रतिबन्ध की अपेक्षा है।

स्पष्टतः कुरान धर्म या मानवता के विरुद्ध द्वेष या नफरत की हवा फूंक रहा है। राष्ट्र में शान्ति और सद्भाव को विनष्ट कर सर्वत्र अराजकता फैलाने का जितना उत्तरदायित्व शासन का है, उससे सैकड़ों गुना अधिक कुरान का है। यदि ऐसे लोग इसी को ईमान कहते हैं, तो बेईमान किसे कहेंगे, पर कुरान की एक आयत बेईमान का भी पता बता देती है। वहां बेईमान से तात्पर्य गैर-मुस्लिमों से है। सीमा से आगे बढ़ने वाला यही हिन्दू बेईमान की मुहर लगाए हुए है। ऐसी पुस्तक धर्म-पुस्तक नहीं, अपितु बवण्डर फैलाने की पुस्तक है। यह है कुरान की वाणी—

"किसी ईमान वाले के बारे में वे न नाते-रिश्ते की परवाह करते हैं और न किसी प्रतिज्ञा की। यही लोग हैं जो सीमा से आगे बढ़ जाते हैं।"

धर्म की सत्ता या स्वरूप का निर्णय करने वाली किसी भी पुस्तक को किसी व्यक्ति, धर्म या समाज-विशेष की निन्दा करने का अधिकार नहीं। यह तो उचित है कि सद्भावनादि के आदर्श वहां असत्यादि के खण्डनपूर्वक दर्शाये गए हों। फिर क्यों इस्लाम की चर्चा करने वाली यह पुस्तक स्वतन्त्ररूपेण समाज के लिए अभिशाप बनी है। हिन्दुओं के धर्म, भाषा और अस्तित्व पर प्रहार होने से स्वतः मुसलमानों के हृदय में हिन्दुओं से द्वेष का प्रादुर्भाव होता है। कुरान में गैर-मुस्लिमों को सरेआम काफिर आदि निंदापरक शब्दों से पुकारा गया है—

कैसे "यह हो सकता है ? अर्थात् इनके सिवा दूसरे "मुश्रिकों" से तुम्हारा समझौता कैसे हो सकता है ?" जबकि यदि उन्हें तुम पर अधिकार प्राप्त हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाये तो न वे तुम्हारे बारे में किसी नाते-रिश्ते की परवाह करें और न किसी प्रतिज्ञा की ? वे अपने मुंह से तो तुम्हें राजी करते हैं परन्तु उनके दिल इन्कार करते हैं और उनमें अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं।

इस्लाम का सिद्धान्त है—सब पर इस्लाम थोपना।

जो इस्लाम को नहीं मानता वह मुसलमानों का भाई नहीं।

कुरान की आयत में ही—

तो यदि ये "तोबा" कर लें और "जमाज" कायम करें और "जकात" दें तो तुम्हारे दीनी भाई हैं और जानने वालों के लिए हम अपनी "आयते" खोल-खोल कर बयान करते हैं।

और जो ऐसे लोग हैं वे इस्लाम में कत्ल करने योग्य कहे गए हैं। इससे भी सिद्ध हुआ कि कुरान राष्ट्रद्रोह की शिक्षा का ग्रन्थ होने से भारत जैसे शान्तिप्रिय राष्ट्र के लिए उपयोगी नहीं। जो पुस्तक राष्ट्रीय अस्तित्व को ही दांव पर लगा कर चलती हो, उस पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगना चाहिए। (यहां राष्ट्र और सत्य दोनों का प्रश्न उपस्थित हो गया है।)

इस प्रकार मुसलमान बन्धुओं के हृदय में ऐसी पुस्तक द्वारा जो हवा फूंकी जा रही है वह सभी स्थितियों में विनाशकारी है। यदि सरकार ने शीघ्र ही इसे जब्त नहीं किया तो इसका भयंकर परिणाम राष्ट्र को भुगतना होगा। यही नहीं, अनेक पृथक्तावादी शक्तियां विध्वंसात्मक कार्यों में लगी हुई हैं, जिनमें अलीगढ़ जैसे मुस्लिम विश्वविद्यालय महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। धर्म या भाषा के आधार पर देश की अखंडता की चुनौती के समय भारत को शान्ति-चिन्तन छोड़-कर विवेक-चिन्तन की आवश्यकता है। इस प्रकार का दोष हिन्दू संगठनों पर थोप देने से पृथक्तावादी शक्तियां और प्रोत्साहित हो रही हैं।

खेद है कि इस्लामी विद्वान् अभी भी धर्मादि के चिन्तन में पिछड़े हुए हैं। अतः देश की सुरक्षा को देखते हुए इस दिशा में सभी शम-चिन्तकों का कुछ कर्तव्य है। यदि देश में लोकतन्त्र, समाजवाद, और धर्मनिरपेक्षता के अस्तित्व की रक्षा करनी है तो शीघ्रातिशीघ्र कुरान मजीद पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। इसी में भारत राष्ट्र, भारतीय संस्कृति तथा विश्वशान्ति की अक्षुण्णता निहित है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीपक जलाओ

—हरिमोहनसिंह कोठिया

अँधेरे को कोसने में, समय ना गंवाओ तुम।
आगे बढ़ो और दीपक जलाओ तुम ॥

अँधेरे उजाले की लम्बी कहानी है।
इस पर बहस करना, अब तो बेमानी है ॥
क्रन्दन को छोड़, शक्ति के गान गाओ तुम ॥
आगे बढ़ो और दीपक जलाओ तुम ॥

अँधेरे को कोसने में समय न गँवाओ तुम ॥

○ ○ ○ ○

सृजन के विधाता को सुन्दरता भाती है।
निरन्तर लगन, मन को सुन्दर बनाती है ॥
पतझड़ तो होगा ही उसके हित रोना क्या ?
साहस से फूलों की बगिया सजाओ तुम ॥
आगे बढ़ो और दीपक जलाओ तुम ॥

अँधेरे को कोसने में समय ना गंवाओ तुम ॥

○ ○ ○ ○

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋतुओं में परिवर्तन होता ही रहता है।
पिछड़ता वही है जो सोता ही रहता है।।
अणुओं के खंडन, विखंडन से पीड़ित क्यों ?
परमाणु बनकर, जग को दिखाओ तुम।।
आगे बढ़ो और दीपक जलाओ तुम।।
अँधेरे को कोसने में समय ना गँवाओ तुम।।

o o o o

राहों के पत्थर भी 'दिशा-बोध' देते हैं।
समझदार राही को "नया शोध" देते हैं।।
भटकन के डर से, उदासी की धड़कन क्यों ?
मंजिल मिलेगी, दृढ़ कदम तो उठाओ तुम।।
आगे बढ़ो और दीपक जलाओ तुम।।
अँधेरे को कोसने में समय ना गंवाओ तुम।।

o o o o

"निर्माण का स्वर" ही सृष्टि की परिभाषा।
सृजन के पथिक तुम हो धरती की नव आशा।।
कमजोर भावों को मन में न लाओ तुम।
आगे बढ़ो और दीपक जलाओ तुम।।
अँधेरे को कोसने में, समय ना गंवाओ तुम।।

o o o o

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वस्थ जीवन चाहने वालों के लिए आवश्यक बातें

१—प्रतिदिन तीन बार से अधिक भोजन नहीं करना चाहिए और आखिरी भोजन सायंकाल तक समाप्त हो जाए।

२—आपके आहार में पके हुए ताजा फल, सलाद और उबली हुई सब्जियां अवश्य हों।

३—मांस, मछली नहीं खाना चाहिए। इनके स्थान पर अखरोट, मूंग-फली, मटर, सेम, पनीर और दूध का सेवन करें। पशु के मांस के स्थान पर मक्खन, हरी सब्जियां, ओलिव (जैतून), मूंगफली के तेल आदि का व्यवहार करें।

४—जहां तक सम्भव हो, कच्चे या बिना उबाले हुए पदार्थ ग्रहण करें, क्योंकि पकाने पर उनके विटामिन खत्म हो जाते हैं और भोजन का सन्तुलन बिगड़ जाता है। आलू और दाल को कच्चा नहीं खाएं। आग में भूने हुए छिलके सहित आलू को इसके अधिक गुणों के कारण अवश्य खाना चाहिए। सावधानी रखें कि छिलके जल न जाएं।

५—प्रतिदिन भोजन में पर्याप्त मात्रा में सलाद का इस्तेमाल करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इनमें जड़ों वाली और रसदार सब्जियां होनी चाहिएं जैसे गाजर, चुकन्दर, मूली, प्याज, लेटूस, बन्दगोभी, गांठगोभी, टमाटर, धनिया, पुदीना आदि। साथ ही साथ आलिव आयल या नींबू का रस, सेब का रस स्वादिष्ट बनाने में अद्वितीय होते हैं।

६—हमेशा फलों का सेवन करें। सब्जियां हरी एवं ताजी हों और उन्हें अच्छी तरह धोकर भोजन करने के कुछ ही समय पूर्व तैयार करें। अधिक काटने, रगड़ने और मलने से इनके बहुत-से पोषक अंश नष्ट हो जाते हैं। जहां तक हो, कम्पोस्ट से तैयार किये हुए पदार्थ का ही सेवन करें। कृत्रिम एवं रासायनिक खादों से उत्पन्न पदार्थों का सेवन हानिकर माना जाता है। अगर आपका उद्यान हो तो फलों एवं सब्जियों में रासायनिक खाद न डालें।

७—जहां तक सम्भव हो, नमक का सेवन न करें। अभ्यास करने से इसके सेवन की आदत से छुटकारा मिल जाता है।

८—सब्जियां पकाने का उत्तम तरीका यह है कि उन्हें काटकर खौलते हुए थोड़े जल में डाल दें। जल्दी से पकाकर बिना देर किये ही उन्हें खा-जाएं। तरल द्रव का व्यवहार सूप के तौर पर किया जा सकता है। सूप को अधिक देर तक मत पकाइए। इसके भीतर थोड़ा मक्खन और कटे हुए प्याज भी स्वाद के लिए डाल सकते हैं।

९—सावधानीपूर्वक निश्चय कर लें कि कभी भी अल्मूनियम के बर्तनों में अपना भोजन न पकाएं।

१०—चाय और काफी से बचें। इनका सेवन स्वास्थ्य के लिए हानि-कर है। इनके स्थान पर फलों एवं सब्जियों के रस या सूप का उपयोग करें।

११—भोजन खूब चबा-चबा कर करें।

१२—शराब और धूम्रपान से बचें।

१३—ठंडे दिमाग से भोजन करें। भोजन करते समय अच्छी और मधुर बातें ही बोलें। उदर विकार में या भोजन की अनिच्छा में उपवास कर लेना बुद्धिमत्ता है।

१४—मैदे का सेवन न करें। सफेद चीनी से परहेज करें। इनके स्थान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर चोकर सहित आटे की रोटियां, मधु (शहद) और लाल चीनी का उपयोग कर सकते हैं।

१५—ऐलोपैथिक औषधियों का इस्तेमाल मत कीजि । इनसे रोगों को दबाया जाता है, अतः इनसे रोगों का जड़ से नाश होना असम्भव है।

१६—गाजर का रस स्वास्थ्य के लिए अति उत्तम है। कुछ गाजरों को लेकर सुन्दर ग्रेटर में रखें और पल्ला दबाकर उनसे रस निकालें। इसे तुरन्त पी जाएं। प्रतिदिन एक कप रस का पान करें। इसमें सेब या अन्य फलों के रस को मिला सकते हैं। फल निचोड़ने वाले यंत्र से रस निकालने में मदद ले सकते हैं।

१७—अत्यधिक गरम जल से स्नान न करें। प्रतिदिन तौलिए से रगड़ कुनकुने पानी से स्नान किया करें या ठंडे जल से स्नान करें।

१८—अधिक हवादार कमरे में रात को कम से कम ६ से ८ घण्टे तक सोना चाहिए। जितना हो सके, पतले तकिए का व्यवहार करें।

योग्य वर की आवश्यकता

आर्यसमाज काकड़वाड़ी, बम्बई द्वारा पालित एवं संरक्षित, कन्या गुरुकुल बड़ोदा से १०वीं कक्षा तक पढ़ी, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, कद-पांच फुट, १९ वर्षीया कन्या के लिए स्वावलम्बी, निर्व्यसनी और आर्य। योग्य इच्छुक व्यक्ति निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें।

राजेन्द्रनाथ पांडेय
मंत्री
आर्यसमाज बम्बई
काकड़वाड़ी, विट्ठलभाई पटेल मार्ग
बम्बई-४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्व० पंडित हरिशरण

बाइबिल के पैगम्बर चोर !

चोरों से सावधान !

झूठ, पाखंड और जालबाजी के आधार पर आज ईसाई 'विश्व-विजय, करना चाह रहे हैं, पर पहले वे अपने को तो टटोलें कि वे क्या हैं ? क्या संसार को अपने जैसा बनाकर सभी कुछ नष्ट कर देना ही उनका लक्ष्य है ?

आप ही सोचिए कि क्या आप चोरी का उपदेश देने वालों का साथ देना पसन्द करेंगे।

—संपादक

उपर्युक्त शीर्षक को पढ़ कर पाठकगण चौंक पड़ेंगे। लेकिन यह शीर्षक मेरा नहीं अपितु स्वयं बाइबिल का बताया हुआ है। बाइबिल एक ऐसी पुस्तक है ईसाई जिसके ईश्वर प्रेरित पुस्तक होने का दावा करते हैं। ईसाइयों को विश्वास है कि इसके प्रत्येक वाक्य में सत्यता कूट-कूट कर भरी हुई है। ईसाइयों ने इसके प्रचार में कोई कसर नहीं उठा रक्खी। इसकी लाखों प्रतियां बिना मूल्य बांटकर जनता में यह मिथ्या विचार प्रसारित किया जा रहा है कि ईसा पर विश्वास लाये बिना मोक्ष प्राप्ति असम्भव है। आज ईसाई मिशन भारतीयों को ईसाई बनाने में जितना धन व्यय कर रहे हैं, यदि उसका हिसाब लगाया जाय तो प्रत्येक भारतीय पर सहस्रों रुपया बैठता है। मैंने भी यह सोचकर कि जब ये ईसा को ईश्वर पुत्र और बाइबिल को ईश्वर प्रेरित मानते हैं तो क्यों न मैं भी सत्यासत्य का निर्णय करूं। इन भावनाओं से प्रेरित होकर मैंने इलाहाबाद से प्रकाशित हिन्दी बाइबिल का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अध्ययन प्रारम्भ किया। सच कहता हूं कि मैंने इस ग्रन्थ में एक नहीं, अनेकों जगह ऐसी-ऐसी बातें पाईं, जिसे मूर्ख, गंवार से भी गंवार व्यक्ति व ईश्वर-कृत तो दूर रहा अनुष्यकृत भी न मान सके। फिर भी जब मैं पढ़ते हुए 'यूहन्ना रचित सुसमाचार' पर्व १० पद ६ पर पहुंचा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वहां पर लिखा था कि 'जितने मेरे आगे (पहले) आए सब चोर और डाकू थे' आजकल की छपी पुस्तक में इस प्रकार है 'जितने मुझसे पहले आये वे सब चोर डाकू हैं। ये वचन उस ईसा के हैं जिस पर आज सारा ईसाई जगत् अभिमान करता है। इस वाक्य से ईसा के पूर्व के लाखों मनुष्य चार और डाकू तो ठहरे ही पर ईसा की मां मरियम, ईसा का बाप यूसुफ, ईसा का गुरु युहन्ना, इब्राहिम के वंशज इस्राइल, दाउद आदि तथा ईसा से पूर्व आनेवाले सभी भविष्यवक्ता एवं पुराने धर्मशास्त्र के ३६ लेखक सारे चोर और डाकू सिद्ध हुए।

ऐसे चोरों और डाकुओं की लिखी पुस्तक को ईसाई ईश्वरकृत या प्रामाणिक मान सकते हैं ! हमने 'सच्चा मसीही धर्म क्या है? नामक ट्रैक्ट (मिशन की ओर से प्रकाशित) में पढ़ा था कि लेखक को जब किसी प्रश्न का उत्तर न आया तो उसने ऊपर स्वर्ग की तरह मुंह करके उत्तर दिया। हम उन सभी पादरियों से पूछना चाहते हैं कि क्या ईसा के पहले आये हुए मूसा आदि पैगम्बर चोर नहीं थे ? यदि थे तो वे पुराने नियम क्यों प्रामाणिक मानते हैं ? और वे चोर थे तो कैसे चोर थे ? यदि चोर डाकू नहीं थे तो क्यों ऐसे वाक्यों को बाइबिल से नहीं निकालते ? क्या इसका उत्तर स्वर्ग की तरफ मुंह करके भी दे सकते हैं ?

अरे ईसाइयों के ईश्वर ईसा ! क्या तेरा हृदय न पसीजा ? क्या तेरे दिल में दर्द न हुआ जो तूने अपने मां-बाप यहां तक कि बपतिस्मा देने वाले गुरु एवं बाइबिल के पूर्व भाग की रचना करने वाले जिसमें नबी मूसा भी था उन सबको तूने चोर और डाकू बतलाया। यही तो कारण है कि तुझे फांसी पर चढ़ाया गया।

वास्तव में बात यह है कि 'पीलिया के रोगी को सारा संसार पीला ही पीला नजर आता है' और इसी तरह 'सावन के अन्धे को सारा संसार हरा ही हरा दिखता है, । आप कहोगे कि क्या ईसा को भी यही रोग था ? तो मैं कहता हूं कि था और वास्तव में था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गास्पेल लिटरेचर सोसाइटी बम्बई द्वारा प्रकाशित 'सच्चा मसीह' धर्म पुस्तिका में ईसा मसीह को सच्चा और निष्कलंक प्रेरित ईश्वर का पुत्र बताकर हिन्दू धर्मावलम्बियों व हिन्दुओं को अपने पापों से, दुष्कर्मों से, बुराइयों से मुक्ति पाने के लिए ईसाई बनने पर बल दिया गया है। किन्तु ईसाइयों का यह दावा उनके अपने ग्रन्थ बाइबिल द्वारा ही झूठ बताया गया है और उनकी पैगम्बर परम्परा में भी मनुष्य थे। समय-समय पर उन्होंने भी चोरी जैसे पापकर्म किए और करवाए। इसका अध्ययनपूर्वक मण्डन स्व० आर्य विद्वान् पं० हरिशरण आर्य बाइबिलाचार्य ने किया है। यह 'सच्चे मसीह, पुस्तक का मुंहतोड़ उत्तर है। पाठक पढ़ कर स्वयं कर्तव्य का विचार करें।

मैं ही नहीं सारा संसार यह मानता और जानता है कि किसी वस्तु को उसके स्वामी की आज्ञा के बिना उठाना चोरी कहलाती है। यही तो चोरी की परिभाषा है। हमारे ऋषि-मुनियों ने कितने स्पष्ट शब्दों में चोरी की व्याख्या की। अब बाइबिल और ईसाइयों के ईश्वर, ईश्वर के पुत्र ईसा-मसीह को इस कसौटी पर परखिए और वह चोर था या नहीं इस बात की परीक्षा कीजिए। परीक्षा करने के उपरांत आपको ज्ञात होगा कि वह चोर ही नहीं, चोरों का सरदार था। स्वयं चोरी करता था और अपने शिष्यों से चोरी करवाता था।

शिष्यों को चोरी करने का आदेश

'हे शिष्यों, जाओ और सामने जो नगर है उसमें से एक गदही के बच्चे को बांध कर ले आओ' (लूका १९३०) यहां पर ईसा अपने शिष्यों को गदही बांध लाने को कहता है। क्या यह चोरी नहीं? समझिए, यदि मैं आप से कहूं कि जाओ शहर में से एक रिक्शा खींच लाओ, तो मैं आपको चोरी का आदेश दे रहा हूं—क्या यह न समझा जाएगा? अवश्य समझा जायेगा। ठीक इसी तरह ईसा ने अपने शिष्यों को चोरी का आदेश दिया है। आप गदहे की चोरी को मामूली न समझें। जिस तरह बूढ़े का सहारा उसके टेकने की लाठी होती है ठीक उसी तरह कुम्हार का गधा उसकी जिंदगी का सहारा है। बूढ़े की लकड़ी को छिनवाना जिस तरह मनुष्यता (इन्सानियत) नहीं है वैसे ही कुम्हार के गदहे को बंधवाकर मंगा लेना मनुष्यता नहीं है। और देखिए कि महायुद्ध के समय अंग्रेज (ईसाई) भारतीय मनुष्य का मूल्य जहां २५ रु० देते थे वहां एक गदहा ६० रु० से भी अधिक में बिकता था। यह तो हुई महा युद्ध के समय की बात। ईसा के जमाने में गदहा मोटर के स्थान पर काम आता था। आज जैसे मोटर महंगी होती है वैसे उस जमाने में गदहा महंगा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होता था। वाइबिल में लिखा है कि उस जमाने में केवल गदहे का सिर ६० रुपये में बिकता था, देखिए राजाओं की पुस्तक नं० २ अ० ६ प० २५। आप सारे ईसा के जीवन चरित्र को देख जाइये, कहीं पर भी गदहे के सिवाय किसी की सवारी ईसा ने की हो ऐसा न पायेंगे। उस समय गदहे की चोरी आज-कल की मोटर की चोरी के समान है। इस चोरी की घटना के तीनों सुसमाचार साक्षी हैं (१) लूका १९.३०, (२) मति २१.२ (३) मार्क ११.२, तो क्या इन गदहों को चुराने वाले चोर और चुराने वाला चोरों का सरदार न कहलायेगा? इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि ईसा स्वयं चोरों का सरदार था और उसके चेले चोर थे।

ईसा की मौत का कारण

फिर वे यरूशलम में आये, 'और वह मन्दिर में गया और वहां जो लेन-देन कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा और शरीफों के फट्टे और कबूतर बेचने वालों की चौकियां उलट दीं। और मन्दिर में से होकर किसी को बरतन लेकर आने जाने न दिया। (मरकुस ११.१५,१६)।

यह मन्दिर में डाका डाला जिससे सामान हाथ लगा। जब वहां सर्राफ थे तो धन की कमी कैसे रह सकती है। कोई सामान कोई लेकर बाहर न जाय इस आदेश से साफ पता चलता है कि यह दिनदहाड़े जैसे डाके पड़ते हैं इसी तरह खुले बाजार में ईसा ने अपने शिष्यों के साथ हमला करके लूट लिया। आगे वर्णन मिलता है कि लोग उससे डरते थे अतः किसी नेकुछ न कहा लेकिन उसके नाश का अवसर ढूंढ़ते रहे। आज भी संसार में लोग डाकू तथा उसके सरदार से भयभीत होते हैं। उसी तरह उस समय ईसा से डरते थे। अतः इस लूट में कोई कुछ न बोल सका।

ईसा के शिष्यों का चोरी करना

अब लीजिए, ईसा के सामने ईसा के शिष्य चोरी करते हैं और ईसा मना नहीं करता—'सब्त के दिन ईसा खेतों में से जा रहा था। उसके शिष्य भूखे होकर बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे, (लूक ६-१-२), (मति १२-१-२) (मार्क २-२३-२४) अब आप ही सोचिए एक गरीब किसान गर्मी-सर्दी की परवाह न करता हुआ अपना खून पसीना एक करके खेत में गेहूं बोता है और ईसा के शिष्य जो सत्तर-सत्तर की संख्या में थे (लूक १०-१-२) उस खेत के बाल (गेहूं) के यदि प्रत्येक सेर भर भी खाये तो बताएं कि कितना अन्न उस किसान का खराब हुआ होगा। सेर भर तो खाया होगा और जो बिखेरा कितना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होगा, वह अलग रहा। क्या इस तरह से बिना पूछे दूसरों के खेतों से अन्न खाना चोरी नहीं? जब किसान ने अपने खेत की हालत देखी होगी तो सिर पटक कर रोया होगा। दूर से तो उसे मालूम भी न पड़ा होगा कि खेत किसी पशु ने उजाड़ा है या मनुष्यों ने। पास में जाने के बाद देखा होगा कि इस तरह तो मनुष्य ही खा सकते हैं। पशु तो ऐसे नहीं खाते। यदि उसे पता चल जाता तो ईसा और ईसा के चेलों को मार-मार कर उनका भुर्ता बना डालता। आज भी यदि स्कूल के छात्र अपने अध्यापकों के साथ घूमने जाते हैं तब यदि किसी के खेत में छात्र घुस जायें तो अध्यापक दंड देता है। पर यदि अध्यापक ही चटोरा हो तो मना करना तो दूर रहा अपने खाने के लिए भी मंगाता है। ईसा ऐसा ही अपने चेलों का गुरु था। गुरु नहीं अपितु चोर और चोरों का सरदार था। मैं पादरियों से पूछना चाहता हूं कि जिस ईसा के चमत्कारों का वर्णन करते हुए तुम लोग आकाश में हवाई किले बांधते हो और भोलीभाली जनता की आँखों में धूल झोंकते हो तथा इस चमत्कार का बड़े अभिमान के साथ वर्णन करते हो कि ईसा ने ५ रोटियों और २ मछलियों से ५ हजार मनुष्यों को पेट भर भोजन कराया और अन्त में बारह रोटियां बचीं रही (लूका रचित सुसमाचार ११-६-१७) जब तुम्हारा ईसा इतना जादूगर था तो क्यों न यहां अपने शिष्यों को भोजन खिलाया? जो शिष्य भूखे होकर बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे! या ईसा यहां जादू का पिटारा भूल गया था? जिस ईसा ने अंधों को आंखें दीं, बहरों को सुनने की शक्ति दी, लूलों को हाथ दिए, लंगडों को पैर दिए, कोढ़ी आदि प्रत्येक प्रकार के व्यक्तियों को हाथ लगाने मात्र से चंगा कर दिया, समुद्र के हिलोरों को धमका कर थमा दिया। यहां तक कि मुर्दों को स्पर्शमात्र से जिला दिया, ऐसे बड़े भारी चमत्कार दिखाने वाले का चमत्कार इस समय आकाश में सैर कर रहा था या पाताल में चला गया था अथवा फिर समुद्र में गोते खा रहा था मानो भांग के नशे के चूर था! वास्तव में ये करामात कपोल कल्पित हैं। ये सब असम्भव बातें हैं लेकिन ऐसे चोरों के सरदार के लिए तो सर्वथा सम्भव हैं।

ईसा के शिष्य का दान दी हुई चीजों को चुराना

ईसा ने जब अपने शिष्यों को दूसरों की चीज चुराना सिखाया तब क्या ये अपने साथियों की चीजें न चुराते? ईसा का एक शिष्य था जिसका नाम यहूदा इस्करियोती था, जिसने ईसा को पकड़वाया था। वह चन्दे की थैली रखा करता था और उस थैली में भक्तजन जो डालते, सो उठा लेता था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसका सर्वदा का यही काम था । इस बात को स्वयं ईसा ने स्वीकार किया है । देखिये (यूहन्ना १२-६) दान दी हुई भक्तजनों की सम्पत्ति को चुराना क्या कम अपराध है ?

ईसा का गधे को चुराना

जैसे गुरु वैसे शिष्य-यह कहावत झूठी नहीं है । जब स्वयं ईसा चोरी करता था तब शिष्य क्यों न चोरी करें ? ईसा एक चरते हुए गधी के बच्चे को पकड़ कर उस पर चढ़ बैठा । (यूहन्ना १२.१४) क्यों महाराज चरते हुए किसी गरीब के गधे के बच्चे को पकड़ कर उस पर बैठ कर जाना क्या धर्मात्मा का काम है ? दुनिया तो देख कर कह रही है कि राजा गधे पर बैठ कर आ रहे हैं (यूहन्ना १२।१५) उन्हें क्या मालूम कि यह राजा नहीं यह तो चोर है । धन्य है ईसा, चोरी करके गधे की सवारी करना और जनता की आंखों में धूल झोंककर अपने को राजा कहलवाना चाहता है । यह सर्वथा असम्भव है । किसी कवि ने कहा है—

सचाई छिप नहीं सकती कभी झूठे उसूलों से ।
खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से ॥

चाहे पादरी लोग कितना भी ईसा के पाप पर पर्दा डालना चाहें पर सत्यता कभी छिप नहीं सकती । कहां इनके पूर्वजों ने उपदेश दिया था कि अपने पड़ोसी की स्त्री, दास-दासी, उनके बैल और उनके गधे और किसी वस्तु जो तेरे पड़ोसी की है, लालच मत कर (विवाद की पुस्तक पर्व ५ आयत २१) और कहां उनको चोर बतलाकर स्वयं चोरी करने वाले ईसा हजरत ये हैं । ईसा का इतिहास जिस पर पर्दा डाल कर ईसाई लोग भोलीभाली जनता को बहका रहे हैं । मैं ईसाई पादरियों को चैलेन्ज (चुनौती) देना चाहता हूं कि यदि वे सचमुच ईसा को धर्मात्मा मानते हैं तो इसका उत्तर देने का कष्ट करें ।

खैर, अब तक तो ईसा की ही चोरी आपने पढ़ी । अब आप यह भी पढ़ेंगे कि ईसाइयों का खुदा (ईश्वर) भी चोरी करने की आज्ञा देता है । 'जब तुम निकलोगे तब छूछे हाथ निकलोगे वरन तुम्हारी एक-एक स्त्री अपनी-अपनी पड़ोसिन और अपने-अपने घर की पाहुनी से सोने-चांदी के गहने और वस्त्र मांग लेगी और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहिराना; इस प्रकार तुम मिस्त्रियों को लूटोगे । (निर्गमन ३.२१-२२) आप पूरे प्रकरण को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पढ़ें तो आप को ज्ञात हो जायेगा कि खुदा स्वयं चोरी करने की आज्ञा देता है। जब स्वयं ईश्वर आज्ञा दे तो उसके बेटे व उपासक क्यों चोरी न करेंगे ! और इनके खुदा (ईश्वर) का बेटा जब आता है। (मति २४.४२,४३) जब ईश्वर (खुदा) सर्वव्यापक हैं तो आता कहां से है ? और जो आता है वह भी किसी विशेष जगह में रहता है ! और चोरों की तरह वह आता है जिसे किसी का डर हो ! बताओ खुदा को किसका डर है ? कृपया पादरी लोग इसका उत्तर देने का कष्ट करें। ★

एक दिन उपवास रख कर

भी वेद मन्दिर निर्माण

व

प्रेस लगाने के लिए

अपनी अधिक से अधिक आहुति भेजें।

यह जीवन-मरण का प्रश्न है।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बड़ा कौन है ?

विजय-दर्पोन्मत्त सिकंदर महान् अपनी विशाल चतुरंगिणी के साथ ईरान की सड़कों पर से गुजर रहा था। भयभीत नागरिक झुक-झुक कर अभिवादन कर रहे थे। गर्व-मिश्रित मुस्कान सिकन्दर के चेहरे पर उत्तरोत्तर प्रखर होती जा रही थी। पर उसके अभिमान की गगनचुम्बी इमारत सहसा ढह गई। सामने से संतों की एक टोली गुजर रही थी। सिकन्दर के आक्रोश का ठिकाना न रहा जब उनमें से किसी ने आंख उठाकर भी उसकी ओर देखा !

क्रोध से कांपते हुए सिकन्दर ने उन संतों को रुकवाया—"तुम लोगों की इतनी जुरंत ! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मैं सिकन्दर महान् हूं ?"

टोली के वयोवृद्ध तेजस्वी संत के चेहरे पर एक आश्चर्य-मिश्रित मुस्कान खेल गई—"राजन् ! तू किस भ्रम में भटक रहा है ? तू नहीं जानता, तेरे ये सब राजसी ठाठ एक तृण से अधिक महत्त्व नहीं रखते।

दो बंदारा मन कि हिर्स ओ आनन्द, वर तो हमारोज सर फरजंद।

जिस लोभ और तृष्णा के वशीभूत होकर तू दिन रात उनकी चाकरी बजा रहा है, वे दोनों तो मेरे पैरों पर लोटने वाले परम आज्ञाकारी सेवक हैं। अतः तू तो मेरे दासों का भी दास है।" ★

नेपोलियन बोनापार्ट और एक वृद्धा

नेपोलियन अपनी सेना को लेकर क़िले से बाहर निकला। सामने गगन-चुम्बी आल्प्स पर्वत सिर ऊँचा किए खड़ा था। मानो घोषणा कर रहा था—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज तक कोई मुझे पार न कर सका। केवल आकाश ही मुझ से ऊपर है। किसी मनुष्य की क्या ताक़त कि मेरे सिर पर अपना पग रख सके। नेपोलियन ने अपनी सेना को आज्ञा दी—"ऊपर चढ़ जाओ।" एक वृद्धा अपनी झोंपड़ी के आंगन में बैठी लकड़ियां काट रही थी। नेपोलियन की आज्ञा सुनकर कहने लगी—"व्यर्थ जान क्यों गंवाते हो? तुम्हारे जैसे सैकड़ों व्यक्ति यहां आए और मुंह की खाकर वापस चले गए। उनकी सेनाएँ और उनके घोड़े मेरे देखते-देखते विनाश के गर्भ में समा गए। उनकी अस्थियां तक आज कहीं शेष नहीं मिलतीं।"

नेपोलियन ने हीरों का एक हार वृद्धा को भेंट किया और कहा—"मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं। तुमने मेरे उत्साह में नवीन जीवन का संचार किया है। मैं पर्वत की ऊँचाई देखकर घबरा रहा था, परन्तु तुम्हारी बातों ने अब मेरा साहस बढ़ा दिया है। मैं भी दूसरों की तरह मर जाना चाहता हूं। यदि जीवित दूसरी ओर चला गया तो मेरे नाम का डंका बजाना तुम्हारा कर्त्तव्य होगा।"

वृद्धा ने कहा—"तुम प्रथम व्यक्ति हो जिसने मेरी बात सुनकर वापस जाने से इनकार किया। मुझे निश्चय है कि तुम अवश्य सफल होगे।" और नेपोलियन वास्तव में सफल हुआ।

पं० नेहरू ने कहा था

हम काहिलों को नहीं चाहते। हम ढिलाई से काम करने वालों को नहीं चाहते, जो हमेशा अपनी नौकरी की दशा, तबादले आदि के बारे में शिकायत किया करते हैं। नौकरी की दशा, वेतन तथा दर्जे का महत्त्व हो सकता है। किन्तु मैं चाहता हूं काम और काम। मैं उपलब्धि चाहता हूं। मैं ऐसे आदमी चाहता हूं जो धर्म युद्ध की-सी भावना के साथ काम करें, जो सही बात के लिए लड़ सकें और गलत बात के सामने झुकें नहीं। मैं चाहता हूं कि आप बड़े-बड़े काम करें। भारत का निर्माण करें। क्या आप देश के पुनर्निर्माण से भी किसी चीज को अधिक बड़ा समझते हैं?

मैं बच्चों को इसलिए प्यार करता हूं क्योंकि मैं उनकी आंखों में भारत के भविष्य को देखता हूं। मैं चाहता हूं कि पूरी संभाल के साथ उनका लालन-पालन किया जाये तथा उन्हें विकास के लिए पूरे अवसर प्रदान किये जायें।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी जेबें भरने की फिक्र न होती तो आज राष्ट्र की तसवीर कुछ और होती

१५ अगस्त के दिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के इन ३६ वर्षों की गतिविधियों का चित्र भी सम्मुख आ जाता है जो वैसा उज्ज्वल नहीं, जैसी कि स्वराज्य एवं गांधी जी के रामराज्य की कल्पना थी, जिसका मुख्य कारण राष्ट्र-प्रेम में गतिरोध प्रतीत होता है। आज वह उत्साह, राष्ट्रीय भावनाओं का उद्वेग, देश के उत्कर्ष की लगन का अभाव प्रतीत होता है। मुनफाखोरी, भ्रष्टाचार, अराजकता का ही चारों ओर बोलबाला दिखाई देता है। यह लक्षण देश के लिए कल्याणकारी प्रतीत नहीं होता।

हमारे देश में लोकतन्त्र है। प्रजातन्त्र में प्रत्येक विषय में जितनी जिम्मेदारी लोकतंत्रीय सरकार की होती है, उतनी ही जिम्मेदारी प्रजा की होती है। किन्तु इस बात को हमारे देशवासी समझ नहीं पा रहे।

भारत एक गरीब देश है। हमारी आर्थिक स्थिति विषम है। जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही है और खाने का अभाव है। देश की प्रगति के लिए सरकार ने बड़ी-बड़ी पंचवर्षीय योजनायें बनाईं जिसके फलस्वरूप हम विदेशों के कर्जदार हो गये। पंचवर्षीय योजनायें पूर्णतः सफल होतीं, यदि जितना धन-खर्च किया गया, वह ईमानदारी और किफायत से खर्च किया गया होता। सरकारी कर्मचारियों और ठेकेदारों में भी यह दर्द होता कि यह देश की उन्नति का कार्य है। धन का उपयोग सही अर्थ में हो। किफायतशारी का ध्यान रक्खा जाता, अपनी जेबें भरने की फिक्र न होती तो आज देश की तसवीर दूसरी होती। परिवर्तन और प्रगति के चिह्न स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होते और विवश होकर अपनी मुद्रा का जो हमें अवमूल्यन करना पड़ा, वह न करना पड़ता। किन्तु अवमूल्यन से भी लाभ हो सकता है यदि देशवासी प्राण-प्रण से अपना उत्पादन बढ़ा लें। दफ्तरों में, कारखानों में, खेतों में तथा अन्य उद्योगधन्धों में काम करने वालों का यदि दृष्टिकोण बदल जाए, वे समझें अपनी जीविका कमाने के अतिरिक्त वे अपने अथक परिश्रम से देश की प्रगति में भी योग दे रहे हैं तो देश का नक्शा बदल सकता है। प्रगति हमारे कदम चूमती प्रतीत होगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंहगाई बढ़ी है। इसे मुनाफाखोरी की लिप्सा के अतिरिक्त और क्या कहा जाए? इसके साथ ही प्रदर्शन, हड़तालें, राष्ट्रीय सम्पत्ति का विनाश, तोड़-फोड़ की की प्रवृत्ति उत्पन्न करके अपने ही देश का एक वर्ग देश की प्रगति में रोड़े अटका रहा है। देश का उत्कर्ष, देश की संपूर्ण जनता की प्रगति का नाम है, किन्तु दुःख है कि यह विशाल दृष्टिकोण पनप नहीं रहा। गांधी जी का बताया रास्ता हम भूल गए हैं।

देश के उत्कर्ष के लिए हमें उन भावनाओं को जगाना होगा। सादगी, शान्ति, अहिंसा, स्वदेशी भावनाओं को फिर से अपनाना होगा। इसी में देश का उत्कर्ष निहित है। प्रत्येक क्षण हमें याद रखना चाहिए कि हमारा देश गरीब है। हमारा रहन-सहन देश के अनुकूल होना चाहिए। चटक-मटक वैभव, अंग्रेजियत, भाषा की गुलामी हमारे लिए शोभनीय नहीं है। समाज और सरकार दोनों ही के लिए गांधी जी के सिद्धान्त अनुकरणीय हैं।

—कमला चौधरी

चरित्र और अनुशासन को महत्त्व दें

आज के दिनों में देश के प्रत्येक कोने में अनुशासनहीनता का वाहुल्य देखने में आता है—विशेषकर विद्यार्थियों में। वैसे तो जनता को अपनी राय के प्रकट करने तथा अपनी अप्रसन्नता दर्शाने के लिए प्रदर्शन करने को जनतंत्र में बुरा नहीं कहा जा सकता, पर देशव्यापी समस्याओं का राजनैतिक लाभ के लिए प्रयोग विशेषतः हिंसा द्वारा सर्वथा अवांछनीय है। इससे न केवल देश का ही वातावरण दूषित होता है बल्कि विदेशों में भी लोग हमारा मजाक उड़ाते हैं तथा इसका लाभ उठाकर हमें कमजोर करने की कोशिश करते हैं। पाकिस्तान का भारत पर आक्रमण भी इसी कारण से हुआ था। चीन भी इस अनुशासनहीनता के कारण देश पर आक्रमण करने की हिम्मत कर सका।

यदि हमें अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करनी है तो हमें अपने राजनैतिक जीवन में अनुशासन बनाये रखना होगा। प्रत्येक कार्य योजनाबद्ध करना होगा। अपने पर पूरा काबू रख कर अपने हितों से देश व राष्ट्र के हितों को ऊपर रहना होगा। हमें त्याग की भावना अपने हृदय में जगानी होगी। राष्ट्र के हितों के लिए सर्वस्व त्याग के लिए प्रस्तुत रहना होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस सबके लिए हमें अपने चरित्र को बनाना होगा। देखने में आता है कि देशवासी चरित्र को बिल्कुल महत्त्व नहीं देते। कम से कम आने वाली पीढ़ी तो जिन्से कल देश का भार उठाना है, चरित्र के प्रति बिल्कुल लापरवाह है। जिस राष्ट्र का चरित्र गया उसका उत्थान असम्भव है। आज देश में चारों ओर कोई न कोई मुसीबत खड़ी रहती है। यदि ध्यान से देखा जाए तो उसका मूल कारण चरित्र का पतन ही है।

यदि हमें देश को एवं राष्ट्र को उन्नत करना है तो हमें अपना चरित्र अच्छा बनाना होगा। अनुशासनबद्ध रहना होगा। राष्ट्र के हितों के लिए अपने अथवा वर्ग विशेष के हितों को बलिदान करना होगा।

—स्वामी रामानन्द शास्त्री

आदर्श निर्भीक निर्णय

लखनऊ नगर के जुडीशियल मैजिस्ट्रेट श्री एस० पी० शुक्ल ने एक निर्भीक निर्णय दिया है कि बकरीद के अवसर पर भैंसे या किसी पशु की हत्या कुरान शरीफ के विरुद्ध है।

लखनऊ जनपद में सहलामऊ ग्राम में आज से चार वर्ष पूर्व वहां मुसलमानों ने बकरीद के अवसर पर सार्वजनिक रूप से भैंसे के वध की योजना बनाई। वहां के ग्राम प्रधान तथा कुछ जागरूक व्यक्तियों ने जुडीशियल मैजिस्ट्रेट ने यहां इसके विरोध में अभियोग प्रस्तुत किया। मुकद्दमा चार वर्ष तक चलता रहा। कासगंज के प्रसिद्ध आर्य विचारक श्रीराम आर्य वादियों की ओर से प्रस्तुत हुए और उन्होंने कुरान शरीफ की आयतों से सिद्ध किया कि कुरान में कहीं भी पशु वध की आज्ञा नहीं। प्रतिवादी कोई सार्थक उत्तर न दे सके! अतः विद्वान न्यायकर्ता ने स्पष्ट लिखा कि नैतिकता, पवित्रता और दूसरे की भावना को ठेस पहुंचाते हुए कोई भी धार्मिक कार्य नहीं किया जा सकता। भैंसे के वध से गन्दगी फैलेगी, रक्त बहेगा और ग्राम निवासियों की भावना को चोट लगेगी। अतः धर्म के नाम पर पशुवध अपराध है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी सिखाने वाले अपराधी !

—महात्मा गांधी

"अंग्रेजी के प्रति हमारे (इस) मोह के कारण देश की कितनी शक्ति और कितना श्रम बरबाद होता है ? इसका पूरा हिसाब तो हमें तभी मिल सकता है जब गणित का कोई विद्वान् इसमें दिलचस्पी ले ।

मैं अपने देश के बच्चों के लिए यह जरूरी नहीं समझता कि वे अपनी बुद्धि के विकास के लिए एक विदेशी भाषा का बोझ अपने सिर पर ढोयें और अपनी उगती हुई शक्तियों का ह्रास होने दें। आज जिस अस्वाभाविक परिस्थिति में रहकर हमें अपनी शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है, उस परिस्थिति का निर्माण करने वालों को मैं जरूर गुनाहगार मानता हूं । दुनिया में और कहीं ऐसा नहीं होता । इसके कारण देश का जो नुकसान हुआ है, उसकी तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते, क्योंकि हम खुद उस सर्वनाश से घिरे हुए हैं । मैं उसकी भयंकरता का अन्दाजा लगा सकता हूं, क्योंकि मैं निरन्तर देश के करोड़ों मूक, दलित और पीड़ित लोगों के सम्पर्क में आता रहता हूं ।"

आइये हंसें :—

"रामू, हथौड़े से ठोकापीटी का खेल नहीं। रख इसे वहीं, नहीं तो तेरी अंगुलियां कुचली जाएंगीं ।।'

"मेरी अंगुलियों की फिक्र मत करो मां, मैं केवल हथौड़ा मारूंगा, कील तो श्यामू पकड़ेगा ।"

× × × ×

पुरानी वस्तुओं के विक्रेता एक कबाड़ी की दुकान में भुलक्कड़ की नजर एक फूलदान पर पड़ी जो उलटा रखा था । उसे एक हाथ में उठा कर दूसरा उस पर फेरते हुए बड़े आश्चर्य से बोला, "ताज्जुब है, यह किस काम आता होगा । इसमें मुंह तो है ही नहीं !"

फेरते-फेरते जब उसका हाथ नीचे पहुंचा तो वे एक दम चौंक उठे, "हद हो गयी, अरे भई इसकी तो तली भी गायब है ।" □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अरब देशों का भारत के साम्प्रदायिक मुसलमानों को प्रोत्साहन

—दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

कांग्रेस (इ) सरकार की विशेषत: श्रीमतीं इन्दिरा गांधी की—मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के फलस्वरूप असम में जो चुनाव हुए, वहां प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी केवल मुस्लिमबहुल क्षेत्रों में ही गयीं । वहां सार्वजनिक सभाओं में अधिकतर श्रोता मुसलमान ही थे । इन्दिरा गांधी इन सभाओं में "खुदा हाफिज" का ही नारा लगाते हुए जनता को सम्बोधित करती रहीं । "असम में भयंकर मुस्लिम हत्याकांड हुआ"—यह नारा भी इन्दिरा गांधी के सार्वजनिक भाषणों और वक्तयों से ही विश्व के सब देशों में गूंजा । अमेरिका और ब्रिटेन के भारतविरोधी तत्वों ने इसे खूब उछाला । यहां तक कि इन विदेशी शक्तियों ने भारत के आंतरिक मामलों में खुल्लम खुल्ला हस्तक्षेप किया । इसी सिलसिले में साऊदी अरब और खाड़ी के देशों ने विशेषत: तथा पश्चिम एशिया के अन्य इस्लामी देशों ने खुल्लम-खुल्ला भारत को मुस्लिम विरोधी',, "मुस्लिम हत्यारा इत्तादि शब्दों से पुकारने तक का "साहस किया । इन मुस्लिम देशों में जहां अभी तक कत्ले आम, शियासुन्नियों के दंगे और बहाई मुस्लिम-कादियानी मुस्लिम इत्यादि सम्प्रदायों को गैर-इस्लामी घोषित करते हुए गैर-नागरिक तक घोषित कर दिया गया है—किस मुंह से भारत के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप का साहस हुआ, जबकि यहां प्रत्येक वयस्क को जन्म, धर्म, जात-पात इत्यादि के भेदभाव के बिना न केवल मताधिकार है, अपितु राष्ट्र के सर्वोच्च पद तक पहुंचने का अधिकार है । भारत ने आज तक कभी किसी इस्लामी और अरब देश के भीतरी मामलों में कभी हस्तक्षेप नहीं किया, जब कि किसी इस्लामी व अरब देशों में गैर-मुस्लिम—विशेषत: हिन्दू धर्म मतावलम्बी को नागरिकता तो क्या सामान्य निजी रूप में पूजा-पाठ, वेश भूषा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर्दान करने इत्यादि के मौलिक अधिकारों की भी अनुमति नहीं है। इतनी विषम स्थिति और सामान्य अन्तर-राष्ट्रीय नियम, कानून, व्यवस्था इत्यादि के होते हुए भी जब साऊदी अरब, खाड़ी के तथा अन्य इस्लामी देशों ने भारत पर "असम में मुस्लिम कत्ले आम" का दोष लगाया, तब हमारे सामान्य पाठक भी यह सुनकर सन्न रह जाएंगे कि प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी ने तनिक भी प्रतिवाद व विरोध प्रकट करने के बदले इन मुस्लिम देशों से क्षमा मांग कर भारत के सम्मान को कूड़े दान में फेंक दिया।

विदेशी नागरिकों पर भी इस्लामी कानून

दिल्ली के एक अंग्रेजी दैनिक के २ दिसम्बर १९८२ के अंक में एक विदेशी लेखक ने लन्दन से साऊदी अरब "महल और मस्जिद" (मोनार्की एण्ड मास्कू) के परस्पर उभर रहे गहरे संघर्ष की ओर संकेत करते हुए लिखा है—"बादशाहत और कट्टरपंथियों के बीच बढ़ रहे तनाव के बारे में बादशाह फाहद, शेख मुहम्मद बिन बख्श तथा अन्य प्रमुख मजहबी नेताओं से इस मामले में बढ़ रहे मतभेदों के बारे में बातचीत की गई। मौलवी-मुल्लाओं की सबसे बड़ी शिकायत यह थी कि राज्य में बस रहे सैकड़ों-हजारों विदेशियों पर सब मुस्लिमों पर लागू होने वाला कानून क्यों लागू नहीं होता ?" मुल्लाओं की शिकायत थी कि इसका मुस्लिमों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, क्योंकि ये इन विदेशियों की नकल कर रहे हैं, जैसे शराब पीना, निषिद्ध भोजन करना। सबसे अधिक बुरा प्रभाव औरतों के चरित्र पर पड़ रहा है।

पर अरब के प्रशासकों के लिए इन कट्टरपंथियों और आधुनिकता के बीच संघर्ष रोकने की समस्या काफी गंभीर है, क्योंकि साऊदी अरब के विकास के लिए बड़ी संख्या में विदेशी विशेषज्ञों और तकनीशियनों का सहयोग अनिवार्य है। फिर भी शाह फाहद ने शेख मुहम्मद की यह बात मान ली है कि विदेशियों पर भी मुस्लिम कानून "नैतिक मुस्लिम सेना" द्वारा लागू करवाया जाए। मुस्लिम उच्च वर्ग के आधीन इस प्रकार की सेना पहले से ही मौजूद है। साऊदी अरब में यह पुलिस जनता पर अपनी गुप्त नजर रखने की दिशा में बड़ी सशक्त है, यहां तक कि शाही घराना भी इससे मुक्त नहीं पर इसके साथ ही साऊदी अरब के शासकों को यह भय भी है कि कहीं उसके प्रबल शत्रु दो पड़ोसी राज्य ईरान और लीबिया कट्टरपंथियों को जासूस के रूप में अरब में घुसपैठ करा राज्यविरोधी प्रवृत्तियों को प्रोत्सा-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हित न करें, जैसा १९७९ में मक्का की विश्वविख्यात मस्जिद में दंगे द्वारा हुआ था।

रमजान में खाने-पीने पर गैर-मुस्लिमों को दंड

साऊदी अरब की कट्टर नीति के फलस्वरूप वहां काम कर रहे गैर-मुस्लिमों के साथ किस प्रकार का व्यवहार होता है, इसका एक उदाहरण हाल ही के रमजान महीने की कुछ घटनाओं से मिलता है। साऊदी अरब की राजधानी रियाज का समाचार है कि विदेशी ठेके के १०० श्रमिकों अधिकतर एशियाइयों, को ४०-४० कोड़े मारे जाने की सजा इस अपराध के लिए दी गयी कि वे साऊदी अरब के रमजान के कड़े कानून भूखे रहने को तोड़ रहे थे। इमारत का काम करने वाले ये श्रमिक ऐसी जगह बैठकर खा-पी रहे थे, जहां मुस्लिम इन्हें देख सकते थे। रमजान शुरू होने से पहले साऊदी अरब में रहने वाले विदेशियों को चेतावनी दी गयी थी कि अगर वे रमजान का कानून तोड़ेंगे तो उन्हें देश निकाले का दंड दिया जाएगा। रमजान शुरू होने से कुछ दिन पहले वहां के अखबारों में यह बहस चल रही थी कि क्या मुसलमान सूर्य उदय और सूर्य अस्त होने के बीच पानी पी सकते हैं, जिस पर मौलवियों का फैसला यह था कि ऐसा करने वालों को शरीअत के अनुसार सजा भुगतनी पड़ेगी।

(टाइम्स आफ इंडिया, दिल्ली, ११-७-८३)

कुवैत में एक भारतीय की पत्थरवर्षा से हत्या

भारतीयों की काफी बडी संख्या खाड़ी के मुस्लिम देशों—कुवैत आदि में श्रमिकों के रूप में काम करती है। वहां भी इनके साथ अत्यन्त पक्ष-पात और बहुधा अत्याचारपूर्ण व्यवहार किया जाता है। कुछ समय पूर्व यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि एक भारतीय मुसलमान का वहां की एक लड़की से प्रेम और यौन सम्बन्ध हो गया। पता चल जाने पर भारतीय मुसलमान को खुलेआम नंगा कर पत्थरों से मार दिया गया और लड़की को जेल में ठूंस दिया गया। इस संगसारी के कुछ चित्र समाचारपत्रों में भी प्रकाशित हुए थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बा अदब बा मुलाहिजा होशियार : ये हैं अरब के शेख

इन अरब देशों में भारतीयों—विशेषतः गैर-मुस्लिमों—के साथ जो व्यवहार होता है, उसका एक चित्र हमने ऊपर पेश किया। अरब देशों के इन शेखों के साथ भारत में क्या सलूक होता है और ये किस भावना से इस देश में आते रहते हैं, जरा यह भी सुनिए—

बा अदब बा मुलाहिजा होशियार हो जाओ! जरा गौर से देखो, ये कौन हैं? कोट-पतलून पहने और सिर पर हैट रखे ये यात्री यूरोप-अमेरिका के गोरे नहीं, अपितु एशिया के ही—इस शताब्दी के लगभग तीन प्रथम दशकों तक सूखे रेगिस्तान की रेत फांकने, ऊंट-ऊंटनियों की सवारी करने और दूध पीने, अधिकतः खजूर खाने और फटे-पुराने तम्बू-छोलदारियों में ही जिन्दगी गुजारने, कई बीलों में बंटे और सदा आपसी ऊंच-नीच की लड़ाई में उलझे पर अब अनन्त अपार काले सोने (पैट्रो-डालर) के मालिक हर दम मोटर गाड़ियों व हवाई जहाजों पर दुनिया भर में सैर-सपाटे करने वाले और अपनी जेबों में डालर भरे, सिर से दोनों कंधों के नीचे तक लटकते सफेद तौलियानुमा वस्त्र को एक काले बड़े रूमाल से बांधे, (इनकी पहचान की वेशभूषा) आज दुनिया की बेहिसाब धन-दौलत के मालिक हैं। भारत के साथ इन अरबों के कई शताब्दियों पुराने और गहरे सम्बन्ध हैं। पहले-पहल मशहूर अरबी घोड़ों पर एक हाथ में तलवार और दूसरे में कुरान पकड़े अफगानिस्तान के रास्ते खैबर के दर्रे से इस "सोने की चिड़िया" भारत की लूट पाट के लिए आते थे। पिछली शताब्दियों में इन लुटेरे शेखों की आज की पीढ़ियां बम्बई और दिल्ली के हवाई अड्डों पर अपने चोगों को हल्के से उठाये उतर रही हैं। इन महानगरी के पांच सितारे वाले होटलों के दलाल इन्हीं की भाषा में आँखें बिछाये इनके स्वागत के लिए करबद्ध खड़े हैं। इनकी भीतर की चोर-जेबों में डालर ठुंसे हुए हैं। पूरी रेगिस्तानी प्यास और दिल में छिपी हविस को पूरा करने के लिए गंगा-यमुना की इस धरती पर उतर रहे हैं। एअर इंडिया का महाराजा भारत की "डेमोक्रेटिक सेक्युलर" सरकार के वफादार प्रतिनिधि के रूप में समाजवादी इरादों को गांधीवादी सपनों में लपेटे इनके सामने बाअदब झुक रहा है। पहले इन शेखों के लिए तीर्थस्थान बम्बई और हैदराबाद ही होते थे, पर अब तो सारा भारत ललचाई आंखों से इनकी पाकेटों में भरे "फारिन एक्सचेंज" की ओर देख रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अरब शेख की भारत यात्रा

अरब के इन शेखों की यह भारत यात्रा "मल्टी-पर्पज" लिये है। इनका सर्वाधिक लगाव तो "हरम" के साथ है। वह शेख क्या, जिसका हरम औरतों का गोदाम न हो। इतिहास साक्षी है कि भारत के मुस्लिम बादशाह जब लड़ाई की मुहिम पर जाते थे तो साथ में औरतों के भरे छकड़े भी जरूर चलते थे। गोरे देशों की कितनी ही युवतियां अपने भरपूर सैक्स के बदले जेवरों शानदार पोशाकों और अन्य चमकीली सुविधाओं ही हविस को पूरा करने के लिए शेखों के साथ गयीं, पर लौट कर नहीं आयीं अथवा अस्पतालों के बिस्तरों की गुलाम हो गयीं। भारत में आने वाला यह शेख, जैसा हम पहले कह आये है—"मल्टी-पर्पज" के लिए आता है। बम्बई, हैदराबाद, मुरादाबाद, अलीगढ़ इत्यादि मुस्लिमबहुल व अन्य बड़े नगरों में गरीब मुस्लिम व हरिजन लड़कियों से निकाह कर कुछ महीने मौज-बहार कर फिर तलाक देकर अगले शहरों में चला जाता है। मुस्लिम कानून के मुताबिक शौहर तीन बार "तलाक" शब्द कह चुटकी में शादी तोड़ सकता है, जब कि औरत के लिए इस्लामी शरीअत में कोई हक नहीं। गरीब मां-बाप धन के लालच से पहले लड़की की शादी कर देते हैं, फिर वे तलाक के बाद विदेशों में छोटी-मोटी नौकरी करने को बाध्य हो जाती हैं। एक प्रकार से इन लड़कियों के रिश्ते मां-बाप और कुटुम्ब से हमेशा के लिए टूट जाते हैं।

एक पड़ताल के अनुसार आंध्रप्रदेश से १७५ लड़कियां प्रतिमास और केवल हैदराबाद से करीब दो हजार लड़कियां प्रतिवर्ष अरब देशों के हरमों में पहुंचती हैं। हैदराबाद से खाड़ी के देशों में रोजगार पर जाने वाले मर्दों की तादाद घटती जा रही है और औरतों की तादाद बढ़ती जा रही है।

मस्जिदों का निर्माण और दंगे

भारत में आये ये अरब दूसरा काम "मजहबी खिदमत" का करते हैं। पूणे में कुछ शेखों ने शहर की सारी मस्जिदों पर "लाउड स्पीकर" लगवा दिये हैं। सुबह चार बजे से ही मुल्ला की बांग के साथ इन्होंने आयतें उगलनी शुरू कर दी हैं। कानूनन बिना सरकारी लाइसेंस के "लाउड स्पीकर" नहीं लगाया जा सकता। परिणामः जनता द्वारा विरोध, भयंकर साम्प्रदायिक दंगे, लूटमार, अशान्ति—कई दिन तक अशान्ति बिहार में कुछ शेखों ने अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धन के बल पर राज्य के समस्त नगरों की मस्जिदों की मरम्मत, सफेदी, के अतिरिक्त गांवों में जहां मस्जिदें न थीं वहां भी रातों-रात मस्जिदें खड़ी करवाई।

शेखों का तीसरा काम : हथियारों के कारखाने

अरब देशों के ये शेख देश के विभिन्न राज्यों के मुस्लिमबहुल नगरों में गोला-बारूद, बम, बन्दूक, पिस्तौल, तलवार, खंजर, छुरे, चाकू इत्यादि घातक हथियारों के निर्माण और कच्चा सामान मुहय्या कराने में, चोरी छिपे, लेकिन उदारता से सहायता दे रहे हैं।

अलीगढ़ में हिन्दू-मुस्लिम दंगे प्रायः होते रहते हैं। मई १९८१ में हुए दंगों के बारे में मुस्लिम विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद् के सदस्य और अध्यापक डा० के० पी० सिंह के अनुसार अलीगढ़ के उपद्रवों के लिए अरब देशों से भारी मात्रा में धनराशि प्राप्त हो रही है और जमायते इस्लामी का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय के करीब आधा दर्जन आध्यापकों को अरब देशों से लाखों रुपये प्राप्त होते है, कुवैत सरकार और साऊदी अरब के दो मुख्य अधिकारियों के कार्यालय अलीगढ़ में हैं। इन्हें लाखों रुपये मुसलमान छात्रों में बांटने के लिए मिलते हैं। इसी प्रकार लीबिया, अलजीरिया और संयुक्त अरब अमीरात से मोटी रकमें प्राप्त होती हैं। श्री के० पी० सिंह ने यह भी बताया कि केन्द्र इस विश्वविद्यालय को १२ करोड़ रुपये वार्षिक अनुदान देता है, पर कभी इसका ब्यौरा जानने की परवाह नहीं की।

हिन्दुओ ! क्या अब भी आप नहीं जागेंगे और होश में नहीं आयेंगे ? कब तक सोते रहेंगे ? ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुस्तक परिचय

क्रिश्चियनिटी इज कृष्णनीति

—प्रह्लादराय पचेरिया

भारतीय इतिहास पुनर्लेखन संस्था (एन १२८ ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली-११००४८) के अध्यक्ष श्री पी० एन० ओक ने न केवल हमें पढ़ाये जाने वाले मुगलकालीन असत्य इतिहास के बारे में अनेकों पुस्तकें भारत में मुस्लिम सुल्तान ताजमहल मन्दिर भवन है, भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें, कौन कहता है अकबर महान् था, आगरे का लाल किला हिंदू भवन है, लाल किला हिंदू लालकोट है, फतेहपुर सीकरी एक हिन्दू नगर इत्यादि लिखकर न केवल एक प्रशंसनीय कार्य किया है। अपितु सारे विश्व में हिन्दू या वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार था, यह अपनी मराठी भाषा की पुस्तक "हिंदू विश्व राष्ट्रा चा इतिहास" में सप्रमाण सिद्ध किया है। साथ ही एक पुस्तक अंग्रेजी भाषा में "क्रिश्चियनिटी इज कृष्ण नीति" लिखकर पाश्चात्य जगत् के इतिहासकारों द्वारा लिखे गये ग्रन्थों के आधार पर कथित ईसाई मत के प्रवर्तक "जीसस क्राइस्ट" का कभी किसी काल में अस्तित्व ही नहीं था, ऐसा सप्रमाण सिद्ध किया है। हिंदू धर्म में दृढ़ आस्था और विश्वास रखने वालों को यह ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिये। कदम-कदम पर पश्चिमी संस्कृति के ही गुण-गौरव का गान करने वालों और उसे श्रेष्ठ मानने वालों को तो अवश्य ही पढ़ना चाहिये। (पुस्तक का मूल्य १५ रुपये है।) क्राइस्ट नाम के किसी व्यक्ति का अस्तित्व न होते हुए भी उसके सम्पूर्ण जीवन चरित्र की उपलब्धि न होते हुए भी क्रिश्चियनिटी का जन्म कैसे हुआ, यह सवाल पश्चिमी विद्वानों के लिए एक गुत्थी बना हुआ है जो किसी तरह सुलझता ही नहीं। उन गुत्थियों का—उलझनों का समाधान श्री ओक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने खोजकर संसार के सामने प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ का परिचय पाठकों को उद्बोधक और मार्गदर्शक होगा।

आज संसार में जिसके सबसे अधिक अनुयायी हैं (संख्या में) ऐसा यदि कोई सम्प्रदाय है तो वह ईसाई सम्प्रदाय है। संसार में सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक इसी सम्प्रदाय की बाइबिल है। इस सम्प्रदाय के पास अपार धन-दौलत अच्छी तरह संगठित मिशनरियों का अभेद्य जाल भी है। इस सम्प्रदाय के प्रचारक स्कूल-कालेज चलाते हैं, अस्पताल चलाते हैं, सेवाश्रम चलाते हैं और लोभ-लालच, जोर-जबरदस्ती द्वारा येन केन प्रकारेण अपने सम्प्रदाय के अनुयायियों की संख्या बढ़ाने में प्रयत्नशील हैं। इस सम्प्रदाय की पीठ पर आज संसार के कितने ही सम्पन्न और बलवान् (अमेरिका जैसे) राष्ट्र हैं जो ईसा की भेड़ों की संख्या में वृद्धि करने के लिए पानी की तरह पैसा बहाते हैं।

परन्तु संसार में बहुत ही बलवान्, व्यापक और अग्रगण्य समझे जाने वाले इस सम्प्रदाय का विशाल भवन क्या किसी ठोस तत्त्वज्ञान, सांस्कृतिक परम्परा और सुसंस्कृत इतिहास की सुदृढ़ नींव पर खड़ा है ? इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक भी हो सकता है, इसकी तो शायद कल्पना भी नहीं की जा सकती। परन्तु ऐसा ही हुआ है। राम और कृष्ण के अस्तित्व से भी इनकार करने वाले, वेदों को गडरियों के गीत बताने वाले और वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति की आलोचना करने वाले इन पाश्चात्य विद्वानों ने भी एक बार अन्तर्मुख होकर अपने अन्दर झांककर देखने का प्रयत्न किया और इसका ही यह फल हुआ कि वे क्राइस्ट के अस्तित्व और उसकी ऐतिहासिकता को ही अस्वीकार करने की सीमा तक पहुंच गए। इन्हीं पाश्चात्य विद्वानों के संशोधनों में इतिहास की खोज करते-करते जो सिद्धांत उपलब्ध हुआ, वही श्री ओक ने अपनी पुस्तक "क्रिश्चियनिटी इज कृष्णनीति" में प्रस्तुत किया है। जीसस क्राइस्ट नाम का कोई व्यक्ति किसी काल में कहीं अस्तित्व में नहीं था, इसलिए क्रिश्चियनिटी भी नहीं हो सकती। इसी सिद्धान्त का सुस्पष्ट और युक्तियुक्त प्रमाणों के आधार पर इस पुस्तक में प्रतिपादन किया गया है। क्राइस्ट कृष्ण शब्द का अपभ्रंश है। बंगाल में कृष्ण का उच्चारण क्रिष्टो या ख्रिस्तो किया जाता है। क्राइस्ट ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं था, इस बात का प्रतिपादन इस पुस्तक में पुनः-पुनः किया गया है।

ईसामसीह के अस्तित्व के सम्बन्ध में शंका करने का साहसिक कार्य नेपोलियन बोनापार्ट के समय से हुआ। नेपोलियन इस शंका का प्रथम जन्म-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाता था। इसके बाद इस शंका की पुष्टि और संशोधन करने वाले विद्वानों की एक परम्परा ही शुरू हो गई—ऐसा कहा जा सकता है। इसके सबसे अग्रणी नेता थे प्रसिद्ध इतिहासकार स्वर्गीय विल डयूरांट "उन्होंने अपने ग्रन्थ "The story of civilization" में अपने संशोधनों का सार सिद्धांत रूप में प्रस्तुत किया है। इसके बाद और भी विद्वानों का नाम आता है। बुलिंग ब्रूक, वालटेयर, वोलनी वेल्स, ट्रिलिग इत्यादि। दो शताब्दियों से क्राइस्ट की दंतकथा की असत्यता का और भी कितने ही विद्वानों ने शोध प्रबन्ध लिखकर भंडाफोड़ किया है।

पाश्चात्य विद्वानों के "क्राइस्ट का अस्तित्व ही नहीं था", इस सिद्धांत पर न रुकते हुए श्री ओक और आगे बढ़ गये हैं और ईसा के जीवन की ऐतिहासिक कड़ियां जो पश्चिमी विद्वानों को लुप्त दिखाई देती थीं व नहीं मल रही थीं वे श्री ओक को मिल गई हैं, ऐसा दावा पुस्तक में किया गया है। क्रिश्चियनिटी का सिद्धान्त प्राचीन हिंदू कृष्ण सम्प्रदाय का यूरोप और पश्चिमी एशियाई देशों द्वारा विकृत रूप है और बाइबिल धर्म ग्रन्थ होने की अपेक्षा ग्रन्थ शलम और केरिथ स्थित कृष्ण मन्दिर के नियत्रण सम्बन्धी आपसी विवाद की कथा है अंशतः ग्रन्थीकृत भाग है और सेंटपाल को ही जीसस क्राइस्ट के रूप में प्रस्तुत किया गया प्रतीत होता है। क्राइस्ट का जीवन चरित्र कृष्ण के जीवन चरित्र का ही मनमाने ढंग से अस्तव्यस्त और विकृत किया हुआ रूप है। श्री ओक द्वारा किए गए संशोधनों से यह भी प्रकट होता है यरूशसम और कोरिंथ अपार सम्पत्तिशाली संयुक्त कृष्ण मन्दिर और बेथलहम स्थित उनकी शाखाओं में संचित सम्पत्ति पर किसका अधिकार हो, किसका नियंत्रण हो और किसका नेतृत्व हो, इसी सम्बन्ध में टंटे-बखेड़े शुरू हुए और दो गुटों में युद्ध और संघर्ष आरम्भ हुआ। ओल्ड टेस्टामेंट (पुराना नियम) का गुट हिब्रू भाषी यहूदी लोगों का था। ग्रीक भाषी यहूदी लोगों के गुट को कोरिंथ स्थित कृष्ण मन्दिर की व्यवस्था पर अधिकार करने में सफलता नहीं मिली, इसलिए आगे के कार्यक्रम की रूप रेखा निर्धारित करने के लिए वे जहां इकट्ठे होते थे, उसमें जो विचार किया जाता था, उसे संस्कृत भाषा में "चर्चा" कहते हैं और यही 'चर्च' शब्द का उद्‌गम है। इसी विद्रोही गुट ने जिसका उच्चारण क्राइस्ट किया जाता था, उस कृष्ण के आसपास एक खिचड़ीनुमा धर्म का तानाबाना बुना और अपने अनुयायी बनाना आरम्भ किया। इसी अनुयायी बनाने की क्रिया को ही "बपतिस्मा" कहते हैं। यही धर्मांतरण कराने की विधि भी कही जातीहै।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री ओक ने अपने सिद्धान्त को भली-भांति सिद्ध करने के लिए पाश्चात्य जगत् के विद्वानों की शोध का खुलकर उपयोग किया है, परन्तु जहां पाश्चात्य विद्वानों की गति और मति दोनों कुण्ठित हो गई हैं, वहां भाषाशास्त्र और कुछ अंशों में पुरातत्त्व के अवशेषों के प्रमाणों का आधार लेकर समस्याओं को स्पष्ट रूप में सुलझाकर दिखा दिया है। ख्रिस्ती रीति-रिवाजों, आचार विचारों, परम्पराओं और विविध त्यौहारों में प्राचीन हिन्दू धर्म कैसे झलकता है, इसका संगति लगाने का श्री ओक ने प्रयत्न किया है।

जीसस क्राइस्ट का अस्तित्व कैसे नहीं था, ख्रिस्ती धर्म का उदय कैसे हुआ, इसका रहस्य पश्चिमी विद्वानों की समझ में नहीं आता। जहां इन विद्वानों की बुद्धि काम नहीं करती, वहां इस पहेली को सुलझाने के लिए श्री ओक ने संस्कृत भाषा का आश्रय लिया है। फिर गड़ी या दबी हुई वस्तुओं के प्रकाश में आने के समान रहस्यों का सारा सुलझा हुआ चित्र आंखों के सामने दिखाई देने लगता है। संशोधन में संस्कृत भाषा का भी कोई महत्त्व हो सकता है इसका विचार इन पाश्चात्य विद्वानों ने कभी नहीं किया और परिणाम सदा निराशाजनक ही रहा हैं। संस्कृत भाषा और हिंदुत्ववाद दूसरे धर्मों (सम्प्रदायों) को समझने के लिए बीज मन्त्र है व जिन लोगों ने संस्कृत और हिंदू परम्परओं की उपेक्षा की वे भटक गए और उन्हें केवल कुछ अस्तव्यस्त, असमाधानकारक और अयुक्ति युक्त खिचड़ीनुमा सिद्धांतों की प्राप्ति के सिवा और कुछ प्राप्त नहीं हुआ।

संस्कृत भाषा के आईने में यदि जीसस क्राइस्ट का चित्र आरपार देखने लगें, तो सारा यूरोप और पश्चिमी एशिया कृष्णमय ही प्रतीत होता है। जीसस यह संस्कृत का ईशस् और क्राइस्ट हो, कृष्ण दिखाई देने लगता है। यरूशलम यह यदु-ईश-आलयम् है, ऐसा जान पड़ता है। बेथलहम यह वत्सलधाम और नाजरेथ का नन्दरथ हो जाता है। इस्राईल का ईश्वरालय, गेलिली का गवालय हो जाता है। हरक्युलिस का हरि-कुल-ईश, मेसाया महेश, जॉन युवन् और पीटर का प्रस्तर में कायापलट हो जाता है। क्रिसमस को कृष्णमास का रूप प्राप्त होता है। संस्कृत भाषा के प्रखर तेज व प्रकाश में ऊपर के सारे रंग फीके पड़कर उड़ जाते हैं और नीचे से असल प्राचीन कृष्ण कथा की सृष्टि देदीप्यमान होकर प्रकट हो जाती है।

अपने प्रतिपादन की पुष्टि में श्री ओक पुरातत्त्व के अवशेषों के प्रमाण देते हैं। यरूशलम की दक्षिण दिशा की ओर माउंट झियान गेट है। इस गेट की कमान पर बिलकुल ऊपर की ओर पत्थर में कमल चक्र खुदा हुआ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिंदू संस्कृति का प्रतीक कमल वहां कैसे पहुँच गया ? इसी तरह जाफा गेट के शिलालेख खुदे हुए तीन कमल चक्र हैं। हिंदुओं में पवित्र कमल की। प्रसिद्धि है। कर कमल, चरण कमल, नेत्र कमल, मुख कमल इत्यादि। शरीर के अंग उपांग कमल के प्रतीक से अलंकृत किये गये हैं। हिंदू योगी ध्यानावस्था में पद्मासन में बैठते हैं। यरूशलम के द्वार पर कमल की आकृतियां यह हिंदू नगरी थी, इसकी साक्षी देती हैं और कृष्ण मन्दिर के चारों तरफ यरूशलम नगर की स्थापना हुई थी। यहूदी, मुस्लिम और क्रिश्चियन लोगों के लिए उनके पूर्वज हिंदू और कृष्ण के उपासक थे, यह मानना बहुत ही असुविधा जनक है। परन्तु भाषाशास्त्र के प्रमाण बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। इन प्रमाणों को आसानी से नष्ट नहीं किया जा सकता।

यरूशलम, बेथलहम और नाजरेथ इत्यादि स्थानों पर खुदाई में पाये जाने वाले मन्दिर के पुरातत्त्व अवशेषों में भगवान् कृष्ण की मूर्ति के टुकड़े अवश्य मिलेंगे, इसमें श्री ओक को किसी भी प्रकार की शंका नहीं है। फिर इन अवशेषों को इस प्रकार छिपाकर गुप्त क्यों रखा गया है ? सीरिया, फिलस्तीन इत्यादि में बिखरी हिंदू मूर्तियों के विषय में जानकारी छिपाकर रखने में सब मूर्ति भंजकों का स्वार्थपूर्ण सम्बन्ध छिपा होना संभव है।

पहले पैगम्बर मुहम्मद ने भी काबा स्थित मन्दिरों की मूर्तियों का विध्वंस किया था। ये मूर्तियां किन-किन देवताओं की थीं, इस सम्बन्ध में पश्चिमी संशोधक मौन हैं। कारण ये मूर्तियां किन देवताओं की थीं, यदि यह भेद प्रकट हो गया तो फिर हिंदू धर्म का वहां प्रचार था, ऐसा मानना ही पड़ेगा। वैटिकन में की गई खुदाई में प्राप्त शिवलिंग इसका जीता जागता प्रमाण है। क्राइस्ट का अस्तित्व न होते हुए भी क्रिश्चियनिटी का उदय कैसे हुआ, यह पाश्चात्य विद्वानों के लिए रहस्य था और इस कथा की जो कड़ियां लुप्त और बिखरी-बिखरी लगती थीं, उन कड़ियों को श्री ओक ने प्रस्तुत किया है। परन्तु जिन परिस्थितियों में ये कड़ियां प्राप्त होती हैं, उन परिस्थितियों का भी श्री ओक ने अध्ययन किया है, ऐसा लगता है। सेंट पाल कौन था ? विद्रोह कैसे हुआ ? किसने किया ? बाइबिल में असंगतियां कौन-सी हैं ? उनके ऊपर कैसे ख्रिस्ती मुलम्मा चढ़ाया गया ? क्राइस्ट के जीवन की जानकारी इतनी अधूरी क्यों है ? क्राइस्ट को क्रॉस पर चढ़ाना, उसे दफन करना और उसका पुनरुत्थान इत्यादि बातें सत्य हैं या एकदम काल्पनिक हैं ? ईसा देखने में कैसा था ? उसके माता-पिता कौन थे ? इन प्रश्नों का जो कठोर अन्वेषण पाश्चात्य लेखकों ने किया, उसका उपयोग श्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओक ने आलोच्य पुस्तक में अपनी विशिष्ट शैली में किया है।

जीसस क्राइस्ट नामक व्यक्ति पूर्ण रूप से काल्पनिक है ऐसा अच्छी तरह जानने के कारण ही शायद मार्क, मेथ्यू जॉन और ल्यूके आदि गास्पल के लेखकों ने और अन्य लोगों ने भी क्राइस्ट की जीवन कथा सत्य है, यह बताने के लिए अनेक युक्तियां दी हैं। बहुत बेपर की उड़ाई हैं—चाल बाजियां की हैं। सत्य का विपर्यास किया है—वस्तु स्थिति की उल्टापल्टी की है। बाइबिल में क्राइस्ट की कितनी ही भविष्यवाणियां असत्य होती दिखाई पड़ती हैं। घटित घटनाओं के समय में फेरफार कर वे क्राइस्ट की भविष्य-वाणी के अनुसार घटित हुई हैं, ऐसा भी दिखाया गया है।

आर्य लोग भारत से सारे संसार में फैले ऐसी वस्तुस्थिति होते हुए भी आर्य लोग बाहर से आये यह शतप्रतिशत सिद्ध झूठा तत्त्व इन ईसाई लोगों ने हमारे गले उतारने का प्रयत्न किया है और हमारे देश के अधिकतर महा-विद्वान् इनके इस झूठ के शिकार हो गए हैं। परन्तु क्राइस्ट की असत्य जीवन कथा भी सच मालूम हो; उसके झूठ होने की शंका भी किसी को न हो, इसलिए खुदाई का बहाना किया जाता है। नई-नई वस्तुओं के प्राप्त होने का झूठा प्रचार किया जाता है और इस सारे उद्योग में अपार धन बटोरा जाता है। इस पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालने का पुरुषार्थ श्री ओक ने अपनी पुस्तक में किया है। पुस्तक के अंत में श्री ओक ने ५१ पाश्चात्य विद्वानों की एक सूची भी दी है, जिनके ग्रन्थों को आधार बनाकर यह पुस्तक लिखी गई है।

हमने "क्रिश्चियनिटी इज कृष्णनीति" इस पुस्तक का स्वरूप कैसा है, यह बताने का प्रयत्न किया है। इस पुस्तक में झूठ क्या और सच क्या है यह पण्डितों और विद्वानों को आधारपूर्वक बताना चाहिए। अंधे होकर उनकी (श्री ओक की) बात स्वीकार करना जितना अनुचित है, उतना ही उनकी पुस्तक की अपेक्षा करना अनुचित होगा।

एक देहाती पहली बार एक बड़े होटल में गया और दूध की मांग की। जब बैरे ने दूध का कप लाकर रखा तो देहाती बिगड़ गया और बोला—"नमूना किसने मांगा था! दूध लेकर आओ।"

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाब में पुनः शान्ति कैसे स्थापित हो ?

—ज्ञानी राजसिंह देहलवी

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी गुरुभक्त सिखों का एक मुख्य संगठन है। सिख गुरुद्वारा अधिनियम १९२५ के अन्तर्गत धारा ६ से ११ तक इस बात को लगभग आठ बार दोहराया गया है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और गुरुद्वारों का धन केवल धार्मिक, शैक्षणिक तथा दान देने के उद्देश्यों के लिए ही प्रयोग में लाया जा सकता है।

सिख गुरुद्वारा अधिनियम का वस्तिविक अभिप्राय यही है कि गुरुद्वारे केवल धार्मिक स्थान होंगे। उनका प्रयोग राजनैतिक उद्देश्यों के लिए नहीं किया जायेगा। गुरुद्वारों के अधिकारी, पाठी, ग्रन्थी और सेवादार सभी अपनी गतिविधियां धार्मिक, शैक्षणिक और दान देने वाले कार्यों तक सीमित रखेंगे।

आज हमें यह बात कहते हुए हार्दिक दुःख होता है कि सिखी का लिबास ओढ़े हुए कुछ तथाकथित सिखों अर्थात् उग्रवादी अकालियों ने अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए गुरुद्वारों की "पवित्रता" तथा उसके उद्देश्यों को मिट्टी में मिलाने का ठेका ले लिया है। आज अमृतसर जैसा शान्ति और प्रेम वाला स्थान वास्तव में मृत्यु तथा भय का कुआं बन कर रह गया है। विदेशियों के इशारे पर नाच रहे देश के गद्दारों ने अमेरिका आदि की सहायता से इसे एक बूचड़खाने का रूप दे दिया है।

इन राजनैतिक लोगों का इसकी पवित्रता की बात करना तो आज हम सभी बुद्धिजीवी राष्ट्रभक्त सिखों को एक कोरा मजाक ही लगता है। एक तरफ गौओं, धार्मिक लोगों तथा देश के रक्षकों और निहत्थे लोगों का खून करके इसमें कातिलों को पनाह दी जा रही है और दूसरी ओर इसकी पवि-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

त्रता का राग आलापा जा रहा है। क्या बम, गोली तथा तलवार मारने वाले गुनाहगारों का घर भी कभी पवित्र कहा जा सकता है?

इसी हरिमन्दिर साहब में यदि एक ओर देश के गद्दारों द्वारा तथा-कथित खालिस्तान का दफ्तर चल रहा है तो दूसरी ओर अनेकों गुरुभक्तों की जान लेने वाला भिण्डरांवाला निवास कर रहा है। इन लोगों ने स्वर्ण-मन्दिर में भय तथा हिंसा का एक ऐसा वातावरण बना दिया है कि अनेक हिन्दू-सिख श्रद्धालुओं ने वहां जाना ही बन्द कर दिया है, जिससे सिखी के प्रचार को जबर्दस्त धक्का लगा है। इतना ही नहीं, अपितु इन उग्रवादी अकालियों द्वारा गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का लाखों रुपया गंदी राजनीति की रस्साकशी में पानी की तरह बहाया जा रहा है। क्या इन लोगों से कभी सिख मत के प्रचार की आशा की जा सकती है? आज ये सब कार्य सिख गुरुद्वारा अधिनियम १९२५ के विरुद्ध हो रहे हैं।

हमें तो ऐसा लगता है कि ये लोग वास्तव में सिख नहीं, अपितु इन्होंने स्वार्थसिद्धि हेतु लोगों को आपस में लड़ाने के लिए सिखों का वेश धारण कर के शिरोमणि गु० प्र० कमेटी पर कब्जा कर रखा है। गत दिनों समाचार-पत्रों में छपी खबरों से यह भी सिद्ध हो गया है कि पाकिस्तान मुसलमानों को नकली सिख बना कर पंजाब में भेज रहा है। इसके १४० निर्वाचित सदस्यों में से १३८ अकाली हैं। जो दो सदस्य निर्दलीय हैं, वे भी अधिकतर अकालियों की ओर झुके रहते हैं। २८ नवम्बर १९८१ को महता चौक स्थित भिंडरांवाला के गुरुद्वारे में एक भीषण बमविस्फोट हुआ था। इसमें जहां गुरुद्वारे के भवन को महती क्षति हुई, वहां गुरु के तीन प्यारे भी चल बसे। क्या यही उपदेश दिया था हमारे गुरुओं ने?

इतना ही नहीं, अपितु २९ दिसम्बर १९८१ को जत्थेदार सन्तोषसिंह को पश्चिमी दिल्ली में एक गुरुद्वारे के बाहर गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के ही सदस्य कहलाने वाले एक व्यक्ति ने गोलियों से भून दिया। यह है धारा १९२५ के विरुद्ध राजनैतिक आचरण का परिणाम।

अभी-अभी पिछले दिनों ४ अप्रैल को इन राजनैतिक अकालियों ने अपनी सीट तथा नेतागिरी के लिए रास्ता रोको आन्दोलन के नाम पर हिंसा को भड़का कर पंजाब में अनेक गुरुभक्तों को बिना मौत मरवा दिया।

ये हिंसावादी अकाली लोग पूरे भारत में बस रहे लाखों सिखों के लिए ही समस्या नहीं बन रहे, अपितु देश के लिए पवित्र बलिदान करने वाले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महान् देशभक्त सिख गुरुओं के नाम का दुरुपयोग करके उनके प्रति लोगों में अश्रद्धा भी पैदा कर रहे हैं।

२५ अप्रैल को प्रातःकाल दरबार-साहिब स्वर्ण मन्दिर अमृतसर से अरदास करके वापस लौट रहे डी. आई. जी. अवतार सिंह अटवाल तथा ग्यारह वर्ष के एक बच्चे की जिस क्रूरता से गुरुद्वारे के बाहर हत्या की गई वह सारे सिख समुदाय के लिए शर्म का विषय है। अत्यन्त दुःख की बात है कि अटवाल साहब गुरुद्वारे में माथा टेकने गए थे पर माथा कटवाकर आये। उनका अन्तिम संस्कार करने के पश्चात् जब उनकी पत्नी को सरदार अटवाल के पिता ने गुरुद्वारे में जाकर माथा टेकने को कहा तो श्रीमती अटवाल ने उत्तर दिया—क्या करूं वहां जाकर, ये वही तो गुरुद्वारे हैं, जिन्हों ने मेरे पति को सदा-सदा के लिए मुझसे छीन लिया है। इस दुर्घटना से प्रभावित होकर लारैंस रोड (अमृतसर) के एक सिख अधिकारी ने कहा कि यदि दरबार साहिब में भी यही कुछ होना है तो घर बैठ कर ही जपजी साहिब पढ़ लेंगे। इसके साथ उसने यह भी कहा कि मैं तो केशधारी सिख हूं पर मेरा एक बेटा बिना केशों के है। तो क्या मैं उसे कभी छोड़ सकता हूं?

सिखी का तथाकथित बाना ओढ़े हुए इन्हीं तथाकथित राजनैतिक सिखों ने १९४२ से १९४७ के पूरे सिख समुदाय को अपनी कुर्सी के लिए बदनाम कर दिया था, जब कि कुछ नामलेवा अकाली सिख नेताओं ने लार्ड माउन्टबेटन तथा जिन्ना के सामने अलग सिख होमलैंड की मांग रखी थी। इन्हीं लोगों ने तब भारत की आजादी की पवित्र वेला में बाधा डालने का असफल प्रयास करते हुए कहा था कि इस आजादी का हमारे लिए कोई महत्त्व नहीं। पर इनकी बात तब भी किसी ने नहीं सुनी थी।

६ जून से ९ जून तक उग्रवादी अकालियों ने अपना एक शिविर आनन्दपुर साहिब में लगाया। इसमें भूतपूर्व मेजर-जनरल जसवन्त सिंह तथा भूतपूर्व कर्नल अमर सिंह ने लोगों को बन्दूक, पिस्तौल तथा स्वचालित शस्त्रों को चलाना सिखाया। शिविर में भाग लेने वालों को भड़काते हुए मेजर-जनरल भुल्लर ने कहा कि अब खालिस्तान की मांग करने का समय आ गया है। अन्य अकली नेताओं तलवंडी, टोहरा, बादल, बरनाला, रजिन्द्रकौर ने भी इस प्रकार से राष्ट्रवाद का खण्डन करते हुए गोली तथा बम के बल से अपनी बात मनवाने की बातें कहीं। इस शिविर से यह साफ-साफ सिद्ध हो गया है कि अकाली दल का अहिंसा की बात करना एक कोरा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बकवास है। इस शिविर से यह सिद्ध हो रहा है कि उग्रवादी अकाली पंजाब में शान्ति नहीं रहने देंगे।

मेरा सभी बुद्धिजीवी गुरुभक्त सिखों से अनुरोध है कि वे एक-जुट होकर ऐसे लोगों से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रवन्धक कमेटी तथा गुरुद्वारों को बचा कर सिखों के व्यर्थ कत्ले-आम को रोकें तथा देश के गद्दारों से गुरुद्वारों को खाली करवा कर इन्हें पवित्र करने का प्रयास करें। आगे से हम उन्हीं बुद्धिजीवी गुरुभक्त सिखों को अपना नेता मानें, जो सिख गुरुद्वारा अधिनियम १९२५ के अन्तर्गत केवल धार्मिक तथा शैक्षणिक प्रचार को ही सिर माथे पर रख कर काम करें और नामधारी, राधास्वामी, निरंकारी, निर्मले, उदासी तथा समूचे हिन्दू वर्ग को प्रेम तथा सेवा से अपनी ओर आकर्षित करके गुरुमत को चारों दिशाओं में फैलाने की प्रतिज्ञा लें। सिखों की सभी समस्याओं का यही समाधान है।

सभी गुरुभक्तों को यह बात ध्यान से विचारनी चाहिए कि आज राधास्वामी मत, का जो हम में से निकला है, चढ़ावा तथा उपस्थिति लाखों तक पहुँच चुकी हैं, जब कि गुरुद्वारों में इन राजनैतिक उग्रवादी तथाकथित सिखों, अकालियोंतथा भिन्डरांवाला और उनके चेलों के भय के कारण परस्पर की फूट से जन तथा धन दोनों ही कम हो रहे हैं। ईश्वर हम पर कृपा करे कि हम फूट डालकर स्वार्थ सिद्ध करने वाले इन राजनैतिक लोगों को सच्चा देश भक्त और गुरु का सिख बनाने में सफल हो सकें। आज पंजाब में पुनः शान्ति स्थापित करने का यही उपाय है।

एक स्टेशन पर, जहां एक्सप्रेस गाड़ी नहीं रुकती थी, एक निहंग ने गाड़ी रोकने का फैसला किया। कृपाण और भाला भांजते हुए और आती ट्रेन को ललकारते हुए वह पटरी के बीच में खड़ा हो गया। सांस रोके भीड़ वहां इस मुकाबले को देखने खड़ी हो गई। इंजन ड्राइवर ने देखा कि निहंग पटरी पर खड़ा है और गाड़ी इतनी जल्दी रुक नहीं सकेगी, तो उसने ताबड़तोड़ सीटी बजानी शुरू कर दी। थोड़ी देर बाद इंजन जैसे ही निहंग के ऊपर आने को हुआ, वह कूदकर पटरी के एक तरफ हो गया। गाड़ी निकल गई।

वहां खड़े लोगों ने पूछा, निहंगजी की होया? तुसी डर गए?

'नई-नई। तुसी वेख्या मैं किस तरां एदियां चीकां कड दित्तियां,' निहंग ने छाती ठोककर कहा, 'रहम चाहन वाले नूं निहंग कदी नईं मारदा।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्व० महात्मा नारायणस्वामी

दुःखों की औषधि और सच्ची शान्ति का सच्चा उपाय

प्रभु की महिमा

बड़े से बड़े दुःख, बड़ी से बड़ी मुसीबत व कष्ट करुणानिधान, करुणाकर, करुणामय प्रभु के स्मरण से कम होते हैं और जाते रहते हैं। वही असहायों का सहाय, निराश्रितों का आश्रय, निरावलम्बों का अवलम्बन है। दुनिया के बड़े-बड़े वैद्य, डाक्टर, राजा-महाराजा और साहूकार प्रसन्न होने पर केवल शारीरिक कल्याण का कारण बन सकते हैं, परन्तु मानसिक व्यथा से व्यथित नर-नारी की शान्ति का कारण तो वही प्रभु है, जो इस हृदय-मन्दिर में विराजमान है; और दुनियां के लोगों की तरह उसका सम्बन्ध मनुष्यों से केवल शारीरिक नहीं, किन्तु मानसिक और आत्मिक भी है। वही है, जो गर्भ में जीवों की रक्षा करता है; वही है, जो वहां कीट-पतंगों की भी रक्षा करता है, जहां मनुष्य की बुद्धि भी नहीं पहुंच सकती। एक पहाड़ का भाग सुरंग से उड़ाया जाता है। पहाड़ के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। एक टुकड़े के भीतर देखते हैं कि एक तुच्छ कीट है, जिसके पास कुछ दाने अन्न के भी पड़े हैं। बुद्धि चकित हो जाती है, तर्क काम नहीं देता, मन के संकल्प-विकल्प थक जाते हैं, यह कैसा चमत्कार है; हम स्वप्न तो नहीं देख रहे? भला इस कठोरहृदय पत्थर के भीतर यह कीट पहुंचा तो पहुंचा कैसे? और उसको वहां ये दाने मिले कैसे? कुछ समझ में नहीं आता। जब मनुष्य का दिमाग थक जाता है और काम नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करता, तो वह आश्चर्य के समुद्र में डुबकियां लेने लगता है। अन्त में तर्क और बुद्धि का हथियार डाल कर मनुष्य बेसुध-सा हो जाता है। अनायास उसका हृदय श्रद्धा और प्रेम से पूरित हो गया। ईश्वर की इस महिमा के सामने सिर झुक पड़ा और हृदय से एक साथ निकल पड़ा कि प्रभु! आप विचित्र हो, आपके कार्य भी विचित्र हैं! आपकी महिमा समझने में बुद्धि निकम्मी और मन निकम्मा बन रहा है। आप ही अन्तिम ध्येय और आश्रय हो। आपके ही आश्रित होने से दुःख नहीं रहते, कष्ट-कष्ट नहीं प्रतीत होते। आपके ही आश्रय में आने से इन नर-नारियों के कष्ट दूर होंगे।

जगत् स्वार्थमय है

जगत् में प्राणियों के वियुक्त होने पर जो दुःख अवशिष्ट परिवार को हुआ करता है, उसका हेतु यह नहीं होता कि वियुक्त प्राणी उन्हें बहुत प्रिय था, बल्कि असली कारण यह होता है कि वियुक्त प्राणियों के साथ अवशिष्ट परिवार के स्वार्थ जुड़े थे, और वियोग स्वार्थसिद्धि में बाधक होता है। बस, असली दुःख इतना ही होता है कि स्वार्थ की हानि हुई। जिसे पुत्र का शोक है, वह केवल इसलिए कि उसने पुत्र को बुढ़ापे की लाठी समझ रक्खा था। पुत्र क्या मरा मानो उससे बुढ़ापे की लाठी छिन गई। अब चिन्ता केवल इस बात की है कि बुढ़ापे में सहारा कौन देगा। जिसे माता-पिता का दुःख है, वह भी अपने ही स्वार्थ के लिए कि अब उसका पालन-पोषण कौन करेगा। जिसे स्त्री का दुःख है, वह भी केवल अपने ही स्वार्थ के लिए जो सुख स्त्री से मिला करता था, वह अब नहीं मिलेगा। अतः यह स्पष्ट है कि जिसे मृत्यु का शोक कहते हैं, वह शोक असल में बन्धु-बान्धवों के लिए नहीं, किन्तु अपने ही स्वार्थ में बाधा पहुंचने से किया जाता है।

याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को यही उपदेश कितने सुन्दर शब्दों में दिया था—

याज्ञवल्क्य का उपदेश

याज्ञवल्क्य— अरे मैत्रेयि! निश्चय पति की कामना के लिए पत्नी को पति प्रिय नहीं होता, किन्तु अपनी कामना के लिए पति प्रिय होता है ॥१॥

निश्चय भार्या की कामना के लिए पति को भार्या प्रिया होती है ॥२॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निश्चय पुत्रों की कामना के लिए (माता-पिता) को पुत्र प्रिय नहीं होते, किन्तु अपनी कामना के लिए ही पुत्र प्रिय होते हैं ॥३॥

निश्चय धन की कामना के लिए (मनुष्य को) धन प्रिय नहीं होता, किन्तु अपनी कामना के लिए धन प्रिय होता है ॥४॥

निश्चय ब्राह्मण की कामना के लिए (मनुष्य को) ब्राह्मण प्रिय नहीं है, किन्तु अपनी कामना के लिए ब्राह्मण प्रिय होता है ॥५॥

निश्चय क्षत्रिय की कामना के लिए (मनुष्य को) क्षत्रिय प्रिय नहीं होता, किन्तु अपनी कामना के लिए क्षत्रिय प्रिय होता है ॥६॥

निश्चय लोकों की कामना के लिए (मनुष्य को) लोक प्रिय नहीं होते, किन्तु अपनी कामना के लिए ही लोक प्रिय होते हैं ॥७॥

निश्चय देवों की कामना के लिए (मनुष्य को) देव प्रिय नहीं होते, किन्तु अपनी कामना के लिए देव (विद्वान्) प्रिय होते हैं ॥८॥

निश्चय भूतों (प्राणी-अप्राणी) की कामना के लिए (मनुष्य को) भूत प्रिय नहीं होते, किन्तु अपनी कामना के लिए ही प्रिय होते हैं ॥९॥

निश्चय सब की कामना के लिए (मनुष्य को) सब प्रिय नहीं होते, किन्तु अपनी कामना के लिए ही सब प्रिय होते हैं ॥१०॥

मृत्यु का दुःख

इस सम्पूर्ण उपदेश का सार यही है कि समस्त प्राणी और अप्राणी केवल अपनी कामना के लिए मनुष्य को प्रिय होते हैं। यदि मनुष्य में किसी प्रकार से वह योग्यता आ जाए कि वह अपने सम्बन्धियों स्त्री-पुत्रादि के साथ जो उसने कामना जोड़ी हुई है, उसे पृथक् कर लेवे, तो क्या उस समय भी मनुष्य को किसी की मृत्यु का दुःख हो सकता है ? इसका निश्चित उत्तर यह है कि फिर दुःख कैसा ? दुःख तो सारा स्वार्थ-हानि ही का होता है। यदि वियुक्त और अवशिष्ट दोनों के बीच में स्वार्थ का सम्बन्ध न हो, तो फिर किसी को मृत्यु क्लेशित नहीं कर सकती। जगत् में प्रतिदिन सहस्रों मनुष्य उत्पन्न होते और मरते हैं। परन्तु हमें न उनके पैदा होने का हर्ष होता है और न उनके मरने का शोक। क्यों हर्ष और शोक नहीं होता ? कारण स्पष्ट है कि उनकी उत्पत्ति के साथ हम स्वार्थ का सम्बन्ध नहीं जोड़ते, इसलिए हमें उनके जन्म का कुछ भी हर्ष नहीं होता और चूंकि उनके जीवनों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के साथ हमारा स्वार्थ भी जुड़ा हुआ नहीं होता, इसलिए उनके जीवनों की समाप्ति (मृत्यु) का भी हमें कुछ शोक नहीं होता। न्यूयार्क, लण्डन, पेरिस आदि नगरों में प्रतिदिन सैकड़ों मनुष्य मरा करते हैं; क्यों हम उनका मातम नहीं करते ? केवल इसीलिए कि उनके हमारे स्वार्थ का कुछ भी सम्बन्ध नहीं होता। परन्तु न्यूयार्क आदि नगरों में सैकड़ों मनुष्य होंगे, जो उन के मरने का शोक करते होंगे। क्यों शोक करते हैं ? इसलिए कि उनका स्वार्थ उन मरने वालों के साथ जुड़ा हुआ होता है। निष्कर्ष यह है कि मृत्यु-शोक का कारण स्वार्थ और एकमात्र स्वार्थ है—इसलिए स्वार्थ क्या है, इस पर थोड़ा-सा विचार करना होगा—

स्वार्थ-मीमांसा

स्वार्थ का तात्पर्य है (स्व+अर्थ) अपनी कामना, अपनी गरज— "स्व" (Self) अपना और आत्मा का पर्यायवाचक है। दोनों का एक ही अर्थ है, इसलिए "अपना अर्थ" या "अपनी आत्म का अर्थ" इन में कुछ अन्तर नहीं है। ये दोनों समानार्थकपद हैं।

स्वार्थ के भेद

स्वार्थ तीन प्रकार का है—

(१) उत्कृष्ट (२) मध्यम और (३) निकृष्ट। (१) उत्कृष्ट स्वार्थ वह है; जिसमें आत्मा स्वच्छ रूप में रहकर अपने अर्थ की ओर प्रवृत्त होता है। (२) मध्यम स्वार्थ वह है, जिसमें आत्मा मन और इन्द्रियों से युक्त होकर सम्मिलित अर्थ की सिद्धि करता है। (३) निकृष्ट स्वार्थ वह है, जिसमें आत्मा, मन और इन्द्रिय से युक्त ममता के वशीभूत होकर सम्मिलित अर्थ की सिद्धि करता है। निकृष्ट स्वार्थ वह है, जिससे मनुष्य को मृत्यु के दुःख से दुःखी होना पड़ता है। प्रत्येक प्रकार का स्वार्थ ठीक-ठीक समझा जा सके, इसलिए उसका कुछ विवरण यहां दिया जाता है—

स्वार्थ के भेदों की व्याख्या

आत्मा की दो प्रकार की वृत्ति होती है —एक का नाम है 'अन्तर्मुखी वृत्ति' दूसरी को 'बहिर्मुखी वृत्ति' कहते हैं। अन्तर्मुखी वृत्ति का भाव यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है कि आत्मा केवल आत्मा+परमात्मानुभव में रत हो। इसी को निदिध्यासन (Intuition or Realization) कहते हैं। इसी नाम का 'श्रेय' या 'निवृत्तिमार्ग' है। परन्तु जब आत्मा अपने भीतर नहीं किन्तु बाहर काम करता है, तब बहिर्मुखी वृत्तिवाला कहलाता है। उसका भाव यह है कि आत्मा बुद्धि को प्रेरणा करता है, बुद्धि मन को, मन ज्ञानेन्द्रियों को गति देता है; इन्द्रियाँ विषयों में प्रवृत्त हो जाती हैं। इसी को श्रवण और मनन कहते हैं, इसका नाम "प्रेय" या "प्रवृत्ति मार्ग" है।

प्रवृत्ति और निवृत्ति मार्ग

मनुष्य के लिए इन दोनों मार्गों की उपयोगिता है। यदि ये दोनों मार्ग ठीक रीति से काम में लाये जावें तो प्रवृत्ति-मार्ग निवृत्ति का साधक होता है। उपनिषदों में जहां प्रवृत्ति मार्ग की निन्दा की गई है, उसका भाव केवल यह है कि जो मनुष्य प्रवृत्ति मार्ग को ही अपना उद्देश्य बना कर निवृत्ति मार्ग की अवहेलना करते हैं, वे उपनिषदों की शिक्षानुसार तिरस्कार के योग्य होते हैं। इस बात को उपनिषदों ने असंदिग्ध शब्दों को कहा है। देखो—

न साम्परायः प्रतिभाति बालम्प्रमाद्यन्त वित्तमोहेन मूढम् ।
अयं लोको नास्त पर इति मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे ॥

(कठोपनिषद् २।६)

अर्थात् अज्ञानी पुरुषों को जो प्रमादग्रस्त और धन के मोह से मूढ हो रहे है, परलोक की बात पसन्द नहीं आती; ऐसे पुरुष तो केवल इसी लोक को मानने वाले (प्रवृत्ति-मार्गगामी) हैं और परलोक (निवृत्ति-मार्ग) को नहीं मानते, उन्हें बार-बार मृत्यु का ग्रास बनना पड़ता है। परलोक को छोड़ जो केवल इसी लोक को अपना सब कुछ समझने लगते हैं, उन्हें सांसारिक मोह जकड़ लेता है, और मोहग्रस्त होकर उन्हें अपने उद्देश्य से भी पतित हो जाना पड़ता है। इस विषय में एक बड़ी शिक्षाप्रद आख्यायिका नारद की है—

नारद की आख्यायिका

एक बार नारद ने कृष्ण महाराज की सेवा में उपस्थित होकर उनसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आत्मज्ञान प्राप्त करना चाहा। महाराज ने उन्हें अधिकारी नहीं समझा और इसलिए उन्हें आत्मोपदेश नहीं किया। दूसरे अवसर पर आकर नारद ने फिर वही प्रश्न किया। महाराज ने उत्तर न देकर नारद से कहा कि चलो कहीं भ्रमण कर आवें। नारद प्रसन्नता से रजामन्द हो गया और इस प्रकार दोनों चल दिये। कुछ दूर पहुँच कर ग्राम दिखाई दिया कृष्ण ने नारद से कहा कि जाओ, इस ग्राम से पीने का जल ले आओ। नारद चले गए। एक कुएं पर पहुचे, जहां कुछ स्त्रियां पानी भर रही थीं। उनमें एक अति रूपवती सुशील कन्या भी थी। नारद ने उससे जल माँगा। उसने बड़ी प्रसन्नता से नारद को जल दिया। परन्तु नारद जल लेकर वहां से चले नहीं। और जब वह कन्या जल लेकर अपने घर की ओर चली, तो उसके पीछे हो लिए। कन्या ने घर पहुंच कर अपने पीछे नारद को आता देख कर समझा कि यह ब्रह्मचारी भूखा प्रतीत होता है। उसने आदर से नारद को बिठला कर भोजन कराया, परन्तु नारद भोजन करके भी वहाँ से नहीं टले। इसी बीच में कन्या का पिता, जो कहीं बाहर गया हुआ था, लौट कर घर आया और उनकी नारद से भेंट हुई। जब बातें ढंग की होने लगीं, तब नारद ने सुअवसर समझ कर कन्या के पिता से कहा कि इस कन्या का विवाह मेरे साथ कर दो। कन्या के पिता ने योग्य वर समझकर विवाह कर दिया। उस कन्या के सिवाय घर में और कोई बालक या स्त्री नहीं थी, इसलिए कन्या के पिता ने नारद से कहा कि यहीं रहो। नारद उसी घर में प्रसन्नता से रहने लगे। कुछ काल के बाद पिता का देहान्त हो गया। अब युगल उस घर में मालिक के तौर पर रहने लगे। गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए नारद के होते-होते तीन पुत्र हो गये। इसी बीच में वर्षा अधिक होने से बाढ़ आ गई और पानी गांव में भी आ गया। ग्राम-निवासी अपने-अपने घर छोड़ कर जिधर-तिधर जाने लगे। नारद को भी कहीं चलने की चिन्ता हुई और उन्होंने अपने दो छोटे बच्चों को कन्धों पर बिठला कर बड़े पुत्र को एक हाथ से पकड़ा, और दूसरे हाथ से स्त्री का हाथ पकड़ा। पार होने के समय उनका बड़ा लड़का अपने आपको सम्भाल नहीं सका। उसका हाथ नारद के हाथ से छूट गया और वह पानी में बह गया। नारद अपनी विवशता देखकर किसी प्रकार सन्तोष कर आगे चल दिये कि पानी ने फिर धकेला और नारद गिरने को हुए, परन्तु किसी तरह से उन्होंने अपने को तो सम्हाला परन्तु इस संघर्ष में उनके कन्धों से बाकी दो पुत्र भी पानी में गिरकर बह गये।

अब उनके हाथ केवल उनकी स्त्री रह गयी। नारद को उन पुत्रों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बहने का दुःख तो बहुत हुआ, परन्तु किसी प्रकार अपनी स्त्री और अपने जी को समझा कर आगे चल दिए कि स्त्री तो मौजूद ही है, और भी पुत्र हो जावेंगे। जब वे दोनों युगल इस प्रकार जा रहे थे कि अचानक पानी की प्रबल झपेट ने स्त्री को भी बहा दिया। नारद बहुत हाथ-पांव मार कर किसी प्रकार पानी से निकल कर उसी स्थान पर पहुंचे जहां से कृष्ण महाराज के लिए पानी लेने ग्राम को चले थे। तब उनका माया-मोह छूटा और वह वहीं पश्चात्ताप करने लगे कि मैं ग्राम में किस काम के लिए गया था और वहां जाकर किस जगत्-जाल में फंस गया। परन्तु "अब पछताए क्या होत है, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।"

आख्यायिका कितनी अच्छी शिक्षा देती है कि मनुष्य जब उद्देश्य को भुला कर संसार के माया-मोह में फंस जाता है, तब उसकी ऐसी ही दुर्दशा होती है जैसे नारद की हुई। इसीलिए उपनिषद् ने शिक्षा यह दी है कि मनुष्य को श्रेय-मार्ग भुलाकर, केवल प्रवृत्ति-मार्ग को अपना उद्देश्य नहीं बना लेना चाहिए। किन्तु प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों को उनका उचित स्थान देना चाहिए। तभी मनुष्य का कल्याण हो सकता है।

मनुष्य ममता ही के वश में होकर तो इस प्रकार के कार्य करता है, जिससे उसे दुःखी होना पड़ता है। इसी ममता के वश में होने का नाम 'निकृष्ट स्वार्थ' है। यही 'निकृष्ट स्वार्थ है, जिससे मनुष्य को धन-सम्पत्ति के चले जाने या बन्धु-बांधवों की मृत्यु से दुःख उठाना पड़ता है। इसके सिवा एक बात और भी है, यदि कुछेक लोगों के कथनानुसार इस प्रकार दुःखित और क्लेशित होने को, गई वस्तु की पुनः प्राप्ति का यत्न माना जावे तो भी यह यत्न वृथा है। यह बात पिता पुत्रादि के सम्बन्ध की वास्तविकता ज्ञात होने से स्पष्ट होगी।

पिता, पुत्र, बन्धु-बान्धवों के सम्बन्ध का वास्तविक रूप क्या है—यह बात जानने के लिए सम्बन्ध की सत्ता पर विचार करना चाहिए। क्या पिता-पुत्र का सम्बन्ध दोनों की आत्माओं में है? उत्तर यह, कि नहीं, क्यों कि पिता-पुत्र के सम्बन्ध के लिए आयु का भेद अनिवार्य है। परन्तु आत्माएं सब एक सदृश नित्य हैं, जिनका न आदि है और न अन्त। इसलिए यह सम्बन्ध आत्माओं में, आयु का भेद न होने से, नहीं हो सकता। फिर क्या सम्बन्ध शरीर और शरीरों में है? नहीं, यह भी नहीं हो सकता, क्योंकि मरने के बाद भी शरीर बाकी रहता है, परन्तु कोई उसे पिता या पुत्र समझ कर घर में नहीं रखता। किन्तु शरीर से आत्मा के निकलते ही जबकि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसकी संज्ञा शरीर से "शव" हो जाती है, यथा भव शीघ्र दाह करने की प्रत्येक चेष्टा किया करता है। यदि शरीर ही पिता या पुत्र हो तो उसके दाह करने से पिता और पुत्र के घात का दाह करने वालो को होना चाहिए। परन्तु ऐसा नहीं होता, किन्तु शव का दाह कर्तव्य और पुण्य बतलाया गया है। अतः यह स्पष्ट है कि पिता-पुत्रादि का सम्बन्ध न तो केवल आत्मा में है और न केवल शरीर में। फिर यह सम्बन्ध किस में है? इसका उत्तर यह है कि सम्बन्ध शरीर और आत्मा के संयोग होने पर स्थापित होता और वियोग होने पर टूट जाता है। आत्मा और शरीर के संयोग का नाम ही पिता-पुत्रादि हुआ करता है। एक गृहस्थ के घर में पुत्र का जन्म होता है। इस जन्म होने का अर्थ क्या है? शरीर और आत्मा का संयोग, इसी संयुक्त द्रव्य का नाम ही पुत्र होता है। इस प्रकार जब शरीर और आत्मा के संयोग का नाम ही पिता-पुत्रादि हुआ करता है, तो इस सम्बन्ध के टूट जाने पर इस सम्बन्ध की समाप्ति हो जाती है, यह परिणाम निकालना अनिवार्य है। इस प्रकार जब मृत्यु (शरीर और आत्मा का वियोग) होने पर सम्बन्ध टूट जाता है और पिता-पुत्रादि की कोई सत्ता बाकी नहीं रहती, तो फिर दुःखित और क्लेशित होने का यत्न किसकी पुनः प्राप्ति के लिए किया जा सकता है?

एक फारसी के कवि "उर्फी" ने बहुत अच्छी तरह से इसी सिद्धान्त को प्रदर्शित करने का यत्न किया है। उसने लिखा है, यदि रोने से प्रियतम मिल जाता है, तो सौ वर्ष तक इसी आशा में रोया जा सकता है। निष्कर्ष यह है कि मरने पर मरने वाले के लिए रोना, पीटना, दुःखित और क्लेशित होना व्यर्थ और सर्वथा अनावश्यक है; बल्कि इसके विपरीत अवशिष्ट परिवार को यह सोचते हुए कि यह वस्तु ईश्वर की थी, उसने उसे जब चाहा ले लिया और उसके इस प्रकार उस वस्तु को ले लेने से हम पर जो उससे सम्बन्धित उत्तरदायित्व रूप बोझ था, कम हो गया और परिणाम में हमें आंशिक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। इस स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए हर्ष करना चाहिए न कि मातम।

सच्ची शान्ति का सच्चा उपाय

पहली बात—सबसे प्रथम जिस शिक्षा को देना है; वह ब्रह्मचर्य की शिक्षा है। ब्रह्मचर्य का यह भाव है कि मनुष्य में आस्तिक बुद्धि के साथ वह योग्यता उत्पन्न हो, जिससे मनुष्य अपने मन और इन्द्रियों पर अधिकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रख सके। मन बड़ा चंचल है। यही मन की चंचलता जब इन्द्रियों में भी आ जाती है, तब मनुष्य का पतन हो जाता है।

इसलिए मनुष्य के सबसे बड़े यही दो कर्त्तव्य हैं—(१) ईश्वर-परायणता, (२) अपने ऊपर अधिकार—इन्हीं कर्त्तव्य-द्वय का नाम ब्रह्मचर्य है। सुतराम् ब्रह्मचर्य प्रत्येक नर-नारी के लिए अनिवार्य है। जितने भी इन्द्रियों के विषय हैं, क्षणिक सुख के देने वाले हैं। और उस क्षणिक सुख के बीतने के साथ ही प्राणियों में उस विषय की असारता जान कर उससे वैराग्य उत्पन्न होता है। परन्तु यह वैराग्य भी विषयों के सुख की भांति ही क्षणिक होता है। उस वैराग्य के बीतने पर फिर मनुष्य उन्हीं विषयों की ओर चलने लगता है। बस, इसी चलेन्द्रियता के दोष को दूर करने का साधन ब्रह्मचर्य है।

बिषय की निस्सारता का अभिप्राय

कोई विषय हो, उसका सुख बहुत थोड़ी देर, उनके भोगने के समयमात्र में, रहता है। इधर भोग खतम हुआ, उधर सुख रुखसत। उदाहरण के लिए रसना के विषय को लीजिए। मनुष्य को किसी वस्तु विशेष का स्वाद अत्यन्त प्रिय है, वह उसी स्वाद के लिए उसे खाता है। जिह्वा पर उस वस्तु के रखते ही स्वाद आ जाता है। परन्तु वह स्वादप्रिय प्राणी चाहता है कि उस वस्तु को खाये नहीं, किन्तु जिह्वा पर ही रक्खा रहने दिया जाय जिससे देर तक स्वाद आता रहे, परन्तु अब उसे ऐसा करने से स्वाद नहीं आता। उस वस्तु के जिह्वा पर रखते ही खूब स्वाद आ गया था, परन्तु मालूम नहीं वह स्वाद कहां चला गया। वस्तु जिह्वा पर रक्खी हुई है, परन्तु स्वाद नहीं आता। अब स्वाद क्यों नहीं आता? इसलिए कि वह तो क्षणिक था। स्वाद का क्षण बीतते ही स्वाद खत्म हो गया। यही हाल संसार के प्रत्येक विषय का है। इसलिए इन विषयों को क्षणिक और निस्सार कहा जाता है। ब्रह्मचर्य के नियमों पर अमल करने की योग्यता उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य बैठते-उठते, सोते-जागते इन सब नियमों को स्मरण करता रहे, और भरसक यत्न करे कि उन्हें काम में लावे। उनके काम लाने के लिए दो साधन हैं।

ब्रह्मचर्य के दो साधन

पहला साधन तप है। मनुष्यों को कठोरता सहने का जीवन व्यतीत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करना चाहिए। कष्टों को प्रसन्नता से सहन करना चाहिए, आराम-तलबी के पास भी नहीं फटकना चाहिए। दूसरा साधन स्वाध्याय है। उत्तम-उत्तम ग्रन्थों के अध्ययन से मनुष्य का हृदय और मस्तिष्क ब्रह्मचर्य के पवित्र नियमों के ग्रहण करने के योग्य बना करता है।

दूसरी बात— चित्त की एकाग्रता है। सुख असल में विषयों में नहीं, किन्तु चित्त की एकाग्रता में है। इसलिए चित्त एकाग्र होना चाहिए। चित्त की एकाग्रता प्राप्त करने के लिए इस बात की आदत डालनी चाहिए कि जो काम भी करे, खूब जी लगा कर किया करे और अपने को कभी खाली न रखे। कुछ न कुछ सदैव करते रहना चाहिए। चित्त की एकाग्रता के लिए ईश्वर के मुख्य नाम 'ओ३म्' का सार्थक जप इस प्रकार करना चाहिए कि कोई श्वास जप से खाली न जाने पावे—यह जप प्रातः-सायं अथवा रात्रि आदि में अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार करना चाहिए। इन साधनों से चित्त एकाग्र हो जाता है। चित्त की एकाग्रता मानो मोहनमन्त्र है, जिससे प्रत्येक कार्य्य की सिद्धि हो सकती है।

तीसरी बात—'ममता का त्याग' है। ममता दुःखों की जननी है। ममता को छोड़ देने से मनुष्य दुःखों की सीमा उल्लंघन कर जाता है। मौत उसके लिए कष्टप्रद नहीं रहती। ममता त्याग का साधन वैराग्य है। प्रबल वैराग्य से ममता नष्ट हो जाती है, इसलिए यत्न करके वैराग्य से ममता के परदे को चित्त से हटा देना चाहिए। काम मुश्किल जरूर है, परन्तु असम्भव नहीं। यत्न करने से सब कुछ हो जाता है।

चौथी बात—चौथी बात जो आचरण में लानी चाहिए वह आत्म-अध्ययन है। आत्म-अध्ययन का भाव यह है कि मनुष्य शान्ति के साथ समय-समय पर अपने गुणों और दोषों पर विचार किया करे और दोषों के छोड़ने के लिए यत्नवान् रहा करे। जब तक मनुष्य अपने ऊपर दृष्टि नहीं रखता, तब तक उसे अपने दोषों, और अपनी त्रुटियों का पता नहीं चला करता इसलिए दिन-रात में एक खास समय में, और सबसे अच्छा है रात्रि में सोने से पहले का समय इस काम के लिए हुआ करता है। उसी समय ईश्वर को अपने हृदय में विराजमान समझ कर अपने दिन भर के कामों पर विचार किया करे। जो-जो उनमें त्रुटियां हुई हों, उनके लिए प्रतिज्ञा कर लिया करे कि से न होंगी और फिर पूरा-पूरा यत्न किया करे कि वे दोष उसमें न रहें—इसी का नाम आत्म-अध्ययन है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पांचवीं बात—पहली चार शिक्षाएं वे कर्तव्य हैं, जिनका सम्बन्ध केवल उन्हीं मनुष्यों से हुआ करता है, जो उन्हें प्रयोग में लाया करते हैं। अब दो शिक्षाएं वे हैं, जिनका सम्बन्ध अन्यों से है। उनमें से पहली अर्थात् पांचवीं शिक्षा "विश्वप्रेम" है। मनुष्य का हृदय लचकीला होना चाहिए, जिससे उसमें प्राणि-मात्र की हित-कामना निहित रहा करे। ईश्वर जगत् का पिता है। मनुष्य, पशु-पक्षी—सभी उसके उत्पन्न किये हुए, उसके पुत्र-पुत्रियों के सदृश हैं। इसलिए जहां मनुष्यों के अन्तर्गत भ्रातृभाव होना चाहिए, वहां पशु-पक्षियों के लिए भी उनके हृदय में दया का भाव रहना चाहिए। इस प्रेम की मंगल कामना से जब मनुष्य का हृदय पूरित रहा करता है, तब उसके भीतर एक अपूर्व उत्साह और आह्लाद की आभा जाज्वल्यमान रहने लगती है जो उसके प्रत्येक कार्य की सिद्धि का अचूक कारण बना करती है। मनुष्य इसी प्रकार से अनेक दोषों तथा अनाचारों से बचा करता है। जहां प्रेम से हृदय शुद्ध और उदारतापूर्ण हुआ करता है वहां ईर्ष्या द्वेष से वह मलिन और संकीर्णता का निवास गृह बना करता है। यही कर्तव्य है जिसके प्रयोग में लाने से मनुष्य परस्पर प्रेम के सूत्र से सूत्रित होकर जाति और समाज बनाया करते हैं, जो अभ्युदय (लोकोन्नति) का एकमात्र कारण है। मनुष्यों में परस्पर इस प्रेम की लता अधिकतर उसी समय अंकुरित हुआ करती है जब उनके हृदय प्रभु-प्रेस से भी पूरित हुआ करते हैं। इसलिए मनुष्य-प्रेम और ईश्वर-प्रेम दोनों साथ-साथ ही चला करते हैं।

छठी बात—छठा कर्तव्य सेवा का सच्चा भाव है। यह वह श्रेष्ठ कर्तव्य है जिससे मनुष्य सहृदय और लोकप्रिय बना करता है, उसके आत्मा में विशालता आती है। इसी उच्च कर्तव्य के प्रयोग में लाने से मनुष्य पतितों का पावन बनता, गिरे हुओं को उठाता और अनेकों दोषों से युक्त प्राणियों को दोषमुक्त करता है। एक उदाहरण दिया जाता है और यह उदाहरण वैष्णव सम्प्रदाय के एक आचार्य 'चैतन्य' के जीवन से सम्बन्धित है—

उदाहरण

एक बार महात्मा चैतन्य बंगाल के एक नगर में आए और एक वाटिका में ठहरे। उनके साथ उनके कतिपय शिष्य भी थे। नगर के लोगों ने बात-बात में प्रकट किया कि उस नगर में एक व्यक्ति मघायी बड़ा दुष्ट है, उससे बहुधा नगर निवासी दुःखी रहा करते है। चैतन्य ने यह सुन कर अपने एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिष्य को भेजा कि मघायी को बुला कर लावे—मघायी उस समय अपने एक-दो मित्रों के साथ शराब पी रहा था। उसी समय चैतन्य के शिष्य ने उसे गुरु का सन्देश सुनाया और साथ चलने की प्रार्थना की। मघायी ने एक खाली बोतल सन्देशहारे को मारी, जिससे उसका सिर जख्मी हो गया और खून निकलने लगा। उसी हालत में शिष्य ने लौटकर घटित घटना गुरु को सुना दी। चैतन्य ने तब अपने १०-१२ शिष्यों को भेजा कि यदि वह प्रसन्नता से न आवे, तो उसे पकड़ लावें। मघायी अब उनके साथ चैतन्य के पास जा रहा है। वह सोचता जाता था कि उससे अपराध हुआ है और उसे कठोर दण्ड भोगना पड़ेगा। इसी चिंता से चिन्तित और दुःखी मघायी चैतन्य की सेवा में उपस्थित किया जाता है। चैतन्य ने उसे आराम के साथ एक गुदगुदे बिस्तरे पर लिटा दिया, परन्तु इससे उसका भय और बेचैनी दूर नहीं हुई। इसी बीच में चैतन्य उसके पांवों के पास आकर बैठते हैं और उसके पांव दबाना चाहते हैं। पांव के छूते ही वह घबरा कर उठ बैठता है और बड़ी नम्रता से उनसे अपने पातकों और अवगुणों की गिनती करते हुए कहता कि महाराज ! आपने मेरे अपवित्र शरीर को अपना हाथ लगाकर क्यों उन्हें अपवित्र किया। उसकी आंखों से अश्रु धारा बही चली जा रही है और वह अपने दोषों की गणना चैतन्य को कराता चला जा रहा है। फल यह होता है कि मघायी की काया पलट जाती है और वह चैतन्य का शिष्य बन जाता है और उनके शिष्यों में सबसे ऊंचा स्थान पाता है। इस आख्यायिका से स्पष्ट है कि किस प्रकार चैतन्य ने सेवा के द्वारा एक गिरे हुए पुरुष को उठा कर उसे अच्छे से अच्छा आदमी बना दिया।

सातवीं बात— सातवां और अन्तिम कर्त्तव्य विशेषकर चतुर्थाश्रमस्थ मनुष्यों का यह है कि वे अपने को ईश्वर-भक्ति, ईश्वरप्रेम से इस प्रकार रंग लें कि उसके सिवा संसार की प्रत्येक वस्तु उन्हें गौण प्रतीत होने लगे। इसके लिए उन्हें निरन्तर उठते-बैठते, सोते-जागते ईश्वर का स्मरण करते रहना चाहिए। यदि वे सोने से पहले जी लगाकर ईश्वर स्मरण करते हुए सो जावेंगे तो निश्चित है कि उन्हें यदि स्वप्न भी दिखलाई देगा तो उसमें वे अपने ईश्वर का साक्षात्कार करते हुए ही देखेंगे। प्रत्येक प्रकार के झगड़ों, झंझटों और अशान्तिप्रद कार्यों से चित्त हटाकर इस ही एक काम में लग जाने से इष्ट की सिद्धि होती है और इस इष्ट-सिद्धि के बाद व्यास के शब्दों में मनुष्य को ईश्वरीय अनुभव होने लगता है।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्मपरिवर्तन के लिए विदेशों से धन

—रमेशचन्द्र
सम्पादक, पंजाब केसरी

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है और देश के वर्तमान संवैधानिक ढांचे में प्रत्येक देशवासी को अपने ढंग से अपने धर्म का पालन करने, पूजा-पाठ करने और धर्मप्रचार करने की पूरी स्वतंत्रता है। परन्तु यदि इस आजादी का दुरुपयोग किया जाने लगे या इसका उपयोग किसी दूसरे धर्म में अनुचित हस्तक्षेप के लिए किया जाने लगे तो यह बात निश्चित ही संविधान की भावना के विरुद्ध होगी। इसमें सन्देह नहीं कि स्वतंत्रता के बाद देश के अन्दर कई बार साम्प्रदायिक दंगे हुए हैं और कई जगह अल्पसंख्यकों को भेदभाव की शिकायत भी पैदा हुई है परन्तु दूसरी ओर ऐसे भी प्रदेश हैं जहां हिन्दुओं को भी वहां की धार्मिक बहुसंख्या से यह शिकायत है कि वह भी उनसे भेदभाव कर रही है। इतने बड़े देश में कहीं न कहीं ऐसी परिस्थितियों का उत्पन्न हो जाना विस्मयजनक नहीं। विशेषकर तब जब साम्प्रदायिक तत्त्व इस देश में पर्याप्त संख्या में मौजूद हैं और उनमें से कई को विदेशी शक्तियां भी अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। परिस्थतियों की मांग तो यह है कि इन साम्प्रदायिक तत्त्वों का, चाहे उनका सम्बन्ध अल्पसंख्यकों से होया बहुसंख्यकों से, पूरी शक्ति के साथ दमन किया जाए। परन्तु अफसोस तो यह है कि राष्ट्रवादी और धर्मनिरपेक्ष कही जाने वाली पार्टियों में भी आज ऐसे लोग मौजूद हैं, जो साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का प्रदर्शन करने में लेशमात्र भी संकोच अनुभव नहीं करते।

पिछले दिनों अखिल भारतीय जनता पार्टी के महासचिव एवं संसद् सदस्य श्री शहाबुद्दीन ने संसद् के ४० मुस्लिम सदस्यों को इकट्ठा करके प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक ज्ञापन दिया, जिसमें भारतीय मुसलमानों के साथ हो रहे भेदभाव और ज्यादतियों का रोना रोया गया था। इस ज्ञापन में जहां कई बातें कही गई थीं, वहां इस बात पर भी रोष व्यक्त किया गया था कि मुसलमानों को यह कह कर बदनाम किया जा रहा है कि भारत की मुस्लिम संस्थाओं को पश्चिम एशिया से धन मिलता है और उसके बल पर भारत के हरिजनों को सामूहिक रूप से मुसलमान बनाया जा रहा है। इस ज्ञापन में यह धमकी दी गयी थी कि यदि ज्ञापन में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उठाई गई अपत्तियों और शिकायतों को दूर न किया गया तो मुस्लिम सांसद सामूहिक रूप से त्यागपत्र दे देंगे। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि श्री शहाबुद्दीन यद्यपि उस जनता पार्टी के महासचिव हैं, जो धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखती है और धर्म को राजनीति में घसीटने के सर्वथा विरुद्ध है, वे 'मुस्लिम इंडिया' नाम का एक अखबार भी निकालते हैं, जिसमें ऐसी ही साम्प्रदायिक भावनाओं की अभिव्यक्ति की जाती है।

श्री शहाबुद्दीन के इस ज्ञापन के प्रसंग में भारत कल्याण मंच, बम्बई की ओर से एक पत्र जालौन के श्री मथुराप्रसाद श्रीवास्तव का प्रसारित किया गया है, जिसके कुछ अंश मैं यहां उद्धृत कर रहा हूं—

"जनता पार्टी के महासचिव एवं संसद् सदस्य सैयद शहाबुद्दीन ने ४० मुस्लिम ससद् सदस्यों सहित प्रधानमंत्री को ज्ञापन प्रस्तुत कर इस बात का खण्डन किया है कि भारत की मुस्लिम संस्थाओं को पश्चिम एशिया से धन मिलता है। सैयद शहाबुद्दीन को यह आश्चर्य है कि ऐसा आरोप लगाने वाले लोग अन्य धर्मावलम्बियों को हिन्दू धर्म में दीक्षित करने के लिए खुले आम धन संग्रह और उसका प्रयोग कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दू नेताओं का कदम मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा, अन्तर्राष्ट्रीय समझौते तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों के प्रति भेदभाव न करने की अन्तर्राष्ट्रीय घोषणा में दिए गए अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों का उल्लंघन होगा। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि ये लोग धार्मिक अल्पसंख्यकों का अस्तित्व स्वीकार करने या बर्दाश्त करने को तैयार नहीं तथा उनसे यह आशा करना बेकार है कि वे धार्मिक अल्पसंख्यकों के प्रति न्याय और निष्पक्षता के साथ व्यवहार कर सकेंगे। यद्यपि श्री शहाबुद्दीन ने पश्चिम एशिया से धन मिलने का खण्डन किया है, तथापि केन्द्रीय गुप्तचर संस्था ने २७ जुलाई १९८१ को इस सम्बन्ध में जो प्रारम्भिक रिपोर्ट प्रस्तुत की है, उसमें तमिलनाडु और पांडिचेरी के कुछ गांवों में हरिजनों के सामूहिक धर्मपरिवर्तन में विदेशी धन के प्रयोग किये जाने की सम्भावना व्यक्त की है।

'अरब टाइम्स' ने भी इस सत्य को उद्घाटित किया है। कुवैत से प्रकाशित होने वाले उपरोक्त अखबार ने अपने १९ जनवरी १९८१ के अंक में यह समाचार प्रकाशित किया कि भारत के निर्धन लोगों को इस्लाम में परिवर्तित करने लिए के वहां २० अरब डालर का कोष संचित किया गया है, जिसके उपयोग और संचालन का कार्य लन्दन स्थित इस्लामी कल्चरल सैंटर नामक संस्था को सौंपा गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्मपरिवर्तन के कार्यों में प्रलोभन की जांच के लिए मध्यप्रदेश सरकार ने नियोगी जांच आयोग गठित किया था। उसने भी अपनी जांच में धन के लालच की वास्तविकता को स्वीकार किया था।

श्री शहाबुद्दीन भले ही इस वास्तविकता को स्वीकार न करें और प्रधान मन्त्री को दिए गये ज्ञापन के प्रति क्षमा याचना या खेद प्रकट न करें, किन्तु इस देश में धर्मप्रचार का जो अधिकार प्रदान किया गया है, वह देशवासियों के लिए है। विदेशी इस कानून की उदारता से उत्साहित होकर उसमें रुचि नहीं ले सकते और न इस उद्देश्य के लिए संघर्ष कर सकते हैं। यदि वे ऐसा करते हैं तो इस देश की जनता को अपनी सरकार से यह कहने का पूरा हक है कि धर्मान्तरण के लिए विदेशों से आने वाले धन पर रोक लगाई जाए। श्री शहाबुद्दीन ने अन्य संसद् सदस्यों सहित प्रधान मन्त्री को ज्ञापन देकर अपनी साम्प्रदायिक भावनाओं का ही परिचय दिया है, जो वास्तव में खेदजनक है।

मुझे नहीं पता कि श्री शहाबुद्दीन के पास उपरोक्त बातों का क्या उत्तर है? परन्तु इस वास्तविकता से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि आज अमरीका, रूस और अरब देश अपने-अपने ढंग से भारत और अन्य देशों में अपनी विचारधारा फैलाने के लिए धन प्रयोग कर रहे हैं। इस रुपए से कई देशों की सरकारों के तख्ते उलट दिए गए हैं और कई देशों की शासन व्यवस्थाएं बदल दी गई हैं। जिस तरह भारत के मुसलमानों से हो रहे तथाकथित जुल्म और ज्यादती का प्रचार पाकिस्तान और कुछ भारतीय मुसलमानों की ओर से हो रहा है, उसके दृष्टिगत अरब देशों की ओर से भारत के इस्लामीकरण के अभियान को बिल्कुल गलत करार नहीं दिया जा सकता। हैरानी तो तब होती है, जब स्वयं को धर्मनिरपेक्ष और राष्ट्रवादी कहलाने वाले हमारे मुसलमान भाई भी ऐसे प्रचार में बह जाते हैं। यह एक वास्तविकता है कि मुसलमानों को सामूहिक रूप से स्वतन्त्र लेखन और स्वतन्त्र भाषण के साथ जितनी लोकतान्त्रिक स्वतन्त्र भारत में प्राप्त हैं, उतनी पाकिस्तान या अन्य किसी भी मुस्लिम देश में मुसलमानों को प्राप्त नहीं। फिर भी अपने ज्ञापन में आए दिन मुसलमानों से भेदभाव का रोना रोकर और बहुसंख्यकों के विरुद्ध जहर उगल कर श्री शहाबुद्दीन और अन्य मुस्लिम सांसदों ने अपनी साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का प्रदर्शन किया है, जो सर्वथा खेदजनक और दुःखदायी है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा आनन्द स्वामी उवाच

वकील गाथा

एक वकील की बात सुनाता हूं आपको। वकील साहब कभी-कभी सत्संग में जाते थे। उनका सात साल का बच्चा भी साथ जाता था। वहां एक आदमी ने एक बार गाना गाया, 'कड़वे बोल न बोल रे भाई!' बच्चे को यह गाना अच्छा लगा। उसने याद कर लिया। जब कभी उसको समय मिलता, तब वह इस गीत को गाता फिरता—'कड़वे बोल न बोल।'

एक दिन वकील साहब और उनकी धर्मपत्नी में हो गई अनबन; रूठ गये दोनों। कई दिन बीत गये। एक दूसरे से बोले नहीं। परन्तु पति-पत्नी कब तक रूठे रहें। पति के मन में बार-बार आए कि वह मान जाए, पत्नी के मन में भी आये। परन्तु दोनों की यह इच्छा कि पहल दूसरा करे। पति दफ्तर से आते अपने कमरे में जाकर बैठे रहते। पत्नी खाना बनाकर नौकर के हाथ भेज देती। पहल होने में न आती। एक दिन वकील साहब दफ्तर से आए, अपने कमरे में चले गए। इनके नन्हे बच्चे ने इनके कमरे में आकर गाना शुरू किया—"कड़वे बोल न बोल !"

वकील साहब के हृदय में एक आशा जाग उठी। बच्चे से बोले—"बेटा! यह गीत अपनी मां के कमरे में जाकर गा !"

बच्चा मां के कमरे में गया। वहां जाकर गाने लगा—"कड़वे बोल न बोल।"

मां ने कहा—"यहां क्या गाता है, जा, अपने पिता जी के कमरे में जाकर गा !"

बच्चा फिर पिताजी के कमरे में पहुंचा; बोला—"कड़वे बोल न बोल !"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिताजी ने कहा—"अरे! तुझे मां के कमरे में जाकर गाने को कहा था। वहीं जाकर गा!"

बच्चा फिर मां के कमरे में पहुंचा। मां ने कहा—'अरे! तुझे पिता जी के कमरे में गाने के लिए कहा था। जा, वहां जाकर गा!"

बच्चे ने दोनों कमरों के बीच में जाकर कहा—"तुम दोनों तो मुझे गाने नहीं देते। मैं अब यहां खड़ा होकर गाऊँगा।" वह गाने लगा—"कड़वे बोल न बोल रे भाई, कड़वे बोल न बोल!"

पिता और माता दोनों ने बच्चे की भोली बोली को सुना। दोनों हँस पड़े। हँसी के इस फव्वारे में क्रोध की दीवार टूट गई। दोनों बच्चे के पास आ गए। एक दूसरे की आंखों में देखकर हँसते हुए बोले—कड़वे बोल न बोल!" घर में मुस्कराहटें चमक उठीं, क्रोध के बादल टुकड़े-टुकड़े हो गए। रोशनी जाग उठी। यह है सत्संग का चमत्कार! जादू है जादू, यह सत्संग!

विश्वकर्मा दिवस १७ सितम्बर, ८३ को प्रकाश्य प्रवेशांक

सामाजिक विकृतियों के खिलाफ एक जेहाद

ममत्व-शिशु

पंच समाज कल्याण की सामाजिक त्रैमासिक पत्रिका जिसमें मनु (लोहार) मय (सुतार) त्वष्टा (कसार) शिल्पी (सिलावट) और देवज्ञ (सुनार) तथा इनके सभी शाखा-उपशाखाओं पर विज्ञानसम्मत तथ्यों के साथ समाज के प्रत्येक वर्ग की सम्पूर्ण जानकारी। वंशवृक्ष, पूर्वजों की जानकारी, वैवाहिक गतिविधियां और साहित्य।

अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकर्मा मैरिज ब्यूरो, प्रतापगढ़ (चितौड़गढ़)-३१२६०५ के संयोजन में, लगभग ४० पृष्ठ—बड़े साइज में प्रकाश्य इस पत्रिका को अपना रचनात्मक तथा आर्थिक सहयोग देकर समाज को संगठित करने में सहयोग दें।

प्रति अंक: २ रु० ५० पैसे, वार्षिक: १० रु०, आजीवन: १०१ रुपए; संरक्षण: १००१ रु०।

सम्पादकीय कार्यालय

प्रधान सम्पादक—ममत्व-शिशु, भाई—१६६,
रविशंकर शुक्ल नगर, इंदौर-४५२६७६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोरक्षा के लिए अकबर का फरमान

अकबर ने मौलवियों से परामर्श करके १५८६ में गोहत्याबन्दी के लिए निम्नलिखित फरमान जारी किया—

"सल्तनत के प्रबन्धक कर्मचारी, अमीर-उमरा, परगनों के हाकिम और शाकिम और शाही इलाकों के कारबार के आदमी यह जान लें कि इस न्याय के युग में यह फरमान जारी किया गया है कि इसका पालन सबके लिए परमावश्यक है। सबको मालूम रहे कि समस्त पशु ईश्वर के बनाये हुए हैं। सबसे कोई न कोई लाभ होता है। इसमें गाय की जाति चाहे वह मादा हो या नर लाभ देने वाली है, क्योंकि मनुष्य और पशु अन्न खाकर जीते हैं। अन्न खेती के बिना पैदा नहीं हो सकता। खेती हल चलाने से ही हो सकती है और हलों का चलाना बैलों पर निर्भर है। इससे स्पष्ट हुआ कि समस्त संसार और पशुओं तथा मनुष्यों के जीवन का आधार एक गाय जाति ही है। ऊपर लिखे कारणों से हमारी ऊँची हिम्मत और साफ नीयत का यह तकाजा है कि हमारे साम्राज्य में गोहत्या की रस्म बिलकुल न रहे। इसलिए इस शाही फरमान को देखते ही समस्त राजकर्मचारियों को इस विषय में विशेष रूप से प्रयत्न करना चाहिए, जिससे शाही फरमान के अनुसार अबसे किसी गांव या शहर में गोहत्या का नाम-निशान तक बाकी न रहे। यदि कोई आदमी इस आज्ञा का उल्लंघन कर वर्जित काम को नहीं छोड़ेगा, तो वह समझ ले कि उसे सुल्तानी गजब (क्रोध) में जो ईश्वरीय कोप का एक नमूना है, फँसना पड़ेगा और वह दण्डनीय होगा। इस फरमान का जो उल्लंघन करेगा, उसके हाथ-पांव की उँगलियां कटवा दी जायेंगी।"

(इस फरमान की मूल प्रति ग्वालियर में सुरक्षित है।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंगूर

—अनिल चोपड़ा

लोग कहते हैं कि 'फलों का राजा' आम है, पर मैं कहता हूं कि 'फलों का राजा' ही नहीं, 'महाराजा' अंगूर है। अंगूर कुदरत का इन्सान को सबसे कीमती और हसीन-तरीन तोहफा है। अंगूर में कुदरत ने दिल खोल कर अपने खजाने लुटाए हैं। इस नन्हे-से फल में जबरदस्त शक्तियां हैं; इसमें रोग-निरोध की अपार क्षमता है। आम तो मात्र स्वाद व खुशबू के कारण फलों का राजा बन बैठा है, इसमें रोग निरोध की शक्ति तो है ही नहीं, उल्टे बेमौसम व अधिक खा लेने से कई रोग उत्पन्न कर देता है। अंगूर को मैं फलों का राजा किसलिए कहता हूं—इसके लिए निम्नलिखित तथ्य पढ़िए—

अंगूर में सर्वप्रथम तो कैंसर को ठीक करने की आश्चर्यजनक क्षमता है। प्राकृतिक चिकित्सा के अनुगामी यह बात भली-भांति जानते और मानते हैं कि केवल चालीस दिन तक अंगूर व पानी मात्र का सेवन करने से कैन्सर काबू में आ जाता है। प्राकृतिक चिकित्सा से सम्बन्धित पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों का अध्ययन करने से ऐसे अनेक दृष्टांत पढ़ने को मिलते हैं, जिनमें अंगूर से कैन्सर की सफलतापूर्वक चिकित्सा की गई है। भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई प्राकृतिक चिकित्सा के परम भक्त और ८७ साल की उम्र में भी पूर्ण स्वस्थ हैं। वे भी इस बात को प्रचारित करते रहे हैं कि अंगूर से कैन्सर दूर हो सकता है। क्योंकि अंगूर का रस शुद्ध मानवीय रक्त के बहुत कुछ समान है।

अंगूर बहुत शक्तिशाली फल है। कमजोरी और दुर्बलता में यह शरीर को बिजली के करंट की तरह तुरंत शक्ति देता है। यदि किसी को विश्वास न हो तो वह चार-छह दिन अंगूर का सेवन कर देख ले। सेवन का ढंग यह है कि नाश्ते या भोजन के स्थान पर ही अंगूर लेना चाहिए, दोनों चीजें साथ नहीं। यौवन के लिए भी अंगूर वरदान है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गर्भवती स्त्री को प्रसव से बीस-पच्चीस दिन पूर्व नियमित रूप से अंगूर-सेवन कराने से प्रसव सुख-शांति से सम्पन्न होता है। इस अंगूर सेवन का साथ ही साथ बच्चे पर बड़ा हितकर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। बच्चा स्वस्थ व सुन्दर उत्पन्न होता है। बच्चे को बाद में ग्राइप वाटर व घुट्टी पिलाने की परम्परा है, लेकिन यह भी बहुत कुछ अंगूर-निर्मित है।

दुनिया में सर्वाधिक नशीली व कीमती शराब अंगूर से ही बनती है। इसका कोई विकल्प नहीं यह उदाहरण देने का अर्थ यह नहीं। कि अंगूरी शराब पी जाए, बल्कि यह कि पाठक अंगूर की महत्ता से परिचित हों।

इसी तरह सब कीमती आयुर्वेदीय द्राक्षासव अंगूर-निर्मित ही हैं जैसे अंगूर महत्त्वपूर्ण है, उसी तरह अंगूर के हरे पत्ते बहु-प्रयोजनीय हैं। सुबह खाली पेट दो-तीन हरे पत्ते सेवन करने से पेट के समस्त विकार दूर होते हैं। पेट की गड़बड़ी को ये ठीक करते हैं। स्त्रियों के लिए अंगूर के पत्तों का रस निकाल कर चेहरे पर लगाने से बढ़ कर अन्य कोई सौन्दर्य-प्रसाधन नहीं। इनसे भी कहीं अधिक लाभ अनुभवी आयुर्वेदाचार्य या प्राकृतिक चिकित्सक बतला सकते हैं।

अब आप स्वयं ही देखिए कि अंगूर क्या है? क्या यह अपने विशाल गुणों के कारण फलों का राजा कहलाने के योग्य नहीं? तो फिर चूकिए मत। अंगूर के मौसम में नियमित रूप से अंगूर का सेवन जरूर कीजिए। कीमत में भी यह मिठाइयों, तली वस्तुओं, खटाइयों, भटूरों, समोसों से जो रोग के घर हैं; सस्ता है।

शिक्षक—हिमालय पर्वत कहां है?

छात्र—मुझे मालूम नहीं?

शिक्षक—बेंच पर खड़े हो जाओ।

छात्र—बेंच पर खड़े होने से क्या नजर आ जायेगा?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यंग्य

हत्यारे के नाम खुला पत्र

—सुरेन्द्र चतुर्वेदी

जयपुर की केन्द्रीय जेल में गत तीन मई को मेहरचंद नामक एक अपराधी को फांसी लगा दी गई। उस पर अपने भाई-भाभी व उनके दो बच्चों को (भैंस के बंटवारे के लिए) हत्या करने का आरोप था। इसी अपराधी को लिखा गया एक पत्र—

मेरे स्वर्गीय भाई मेहरचंद,

आखिर तुम्हें देश के कानून ने फांसी पर चढ़ा ही दिया। मैंने तुम्हें कहा था कि भारत में कानून के हाथ देश के नक्शे से भी बहुत बड़े हैं पर तुम थे कि कहते थे हिन्दुस्तान में जो भी गुनाह होते हैं, उन्हें करने से पहले अपराधी कानून के लम्बे हाथों को या तो खरीद लेता है या काट देता है। मैंने तुम्हें कहा भी था कि भारतीय अदालत का न्यायाधीश कोई बिकाऊ खिलौना नहीं होता पर तुमने तो कहा कि भारत में किसी भी मुकद्दमे का फैसला न्यायाधीश नहीं करते बल्कि गवाह करते हैं और गवाहों की नीलामी वकीलों की दलाली से भी आसान शर्तों पर हो जाती है। पर खैर! अब तुम अपनी इन्हीं गलतफहमियों के कारण भारत जैसे देश में, जहां हर तरफ अमन-चैन है, लोग बिना ताला लगाए आराम से खर्राटे लेते हैं, जहां बहन-बेटियों की इज्जत लूटने वाले लोग प्रसव के दौरान ही 'बैक टु पैविलियन' हो जाते हैं, जहां हत्या करने वाले फांसी के फंदे पर चढ़ा दिये जाते हैं, यानी कुल मिलाकर जहां रामराज्य है, वहां तुमने अपने भाई-भाभी व उनके बच्चों को मार कर ठीक नहीं किया। तुम्हें अपने कर्मों की सजा मिलनी ही चाहिए थी और वह फांसी के फंदे पर चढ़ने के साथ ही मिल गई है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब जबकि कानून की हत्या के बदले कानून ने तुम्हारी भी हत्या कर दी है, मुझे तुमसे कई शिकायतें करनी हैं।

मुझे लगता है कि तुम्हारे खानदान में कोई खद्दरधारी नेता पैदा नहीं हुआ वर्ना तुम अपने हाथों से हत्या क्यों करते? एक भैंस के बंटवारे को लेकर अपने भाई-भाभी व उनके बच्चों को सार्वजनिक रूप से क्यों मारते? अरे, जहां देश के बंटवारे के लिए एक सौ एक लोगों को मारने वाले लोग आराम से एक धार्मिक इमारत में छिपे बैठे हैं, वहां तुम्हें पुलिस वालों के समक्ष आत्मसमर्पण करने की क्या जरूरत थी? कत्ल करना जरूरी था तो पहले कोई ऐसा मन्दिर ढूंढ़ लिया होता जहां पुलिस का परिन्दा भी पर नहीं मार सकता था।

रंगा-बिल्ला के सहचर! यदि तुम्हें मन्दिर भी नहीं मिल पाया था, तो क्या तुम चम्बल की ओर नहीं भाग सकते थे? तुमसे तो वह औरत फूलन ही अच्छी रही जो एक साथ कई लोगों को मौत के घाट उतार कर भी कानून की छाती पर मूंग दलती रही! तुम जरा भी समझदार होते तो किसी रमेश सिकरवार के गिरोह में शामिल हो जाते! तीन क्या तीस लोगों की हत्या करते, एक भैंस क्या एक सौ भैंसें खूटे से खोलते। कोई तुम्हारा क्या बिगाड़ सकता था? मलखान सिंह, फूलन देवी, घनश्याम सिंह व ऐसे ही कई लोगों का भला किसने बाल बांका कर लिया? वे तो आज भी देश के कर्णधार बने हुए हैं! एक अकेला रमेश सिकरवार मध्यप्रदेश की पुलिस की वर्दी पसीने से गीली कर रहा है। पर तुमने कब भूगोल या जनरल नॉलिज की पुस्तक पढ़ी थी, जो तुम्हें मालूम होता कि भारत के नक्शे में मध्यप्रदेश भी एक राज्य है। अर्जुन सिंह भी एक मुख्यमंत्री है, जो बिना आपरेशन के हृदयपरिवर्तन कर देता है। पचासों की हत्या करने वाले फालतू लोगों को पालतू बना देता है। काश! तुमने एक बार मध्य-प्रदेश की पावन जमीन पर आत्मसमर्पण का सौभाग्य प्राप्त किया होता। कसम देश के संविधान की! महात्मा गांधी के नाम पर इन्दिरा गांधी के नुमाइन्दे मुख्य मंत्री तुम्हें विशाल समारोह आयोजित करवा के रातोंरात देश का हीरो बना देते।

पत्रपत्रिकायें तुम्हारी मर्दानगी के गुण गातीं। पुलिस वाले तुम्हारी गोलियों से बच जाने की खुशी में जश्न मनाते। कानून तुम्हारी आरती उतारता। जेल में तुम्हारी पूजा होती और तुम इस तरह फांसी के फंदे पर चढ़ने के कष्ट को न भोगते।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काश तुम्हें मालूम होता कि भारत माता आजकल बड़ी सहनशील हो गई है। तुमने देखा नहीं कि असम में कितने भैया-भाभी संगीनों की नोक पर मुर्दा लटके हुए हैं? कितने भतीजे-भतीजी जिन्दा जलाए जा रहे हैं। तुमने तो भैंसों के बंटवारे पर खूनखराबा किया। वहां मां-बहिनों की इज्जत के बंटवारे पर भी कानून मुस्करा रहा है।

पापी! अगर तुम्हें अपने भाई-भाभी को मारना ही था तो उनकी हत्या करने की क्या जरूरत थी? इतनी ही दुश्मनी थी तो उन्हें असम भिजवा देते! इससे भी अधिक तड़पा कर मारना था तो उन्हें पश्चिमी राजस्थान भिजवा देते, जहां वे अकालग्रस्त होकर भूख से मर जाते। उन्हें तमिलनाडु भिजवा देते, जहां वे प्यास से तड़प-तड़प कर दम तोड़ देते। बच्चों को मारना था तो उन्हें अमृतसर के उस मन्दिर के सामने खड़ा कर देते, जहां किसी डी. आई. जी. पर की गई गोलियों की बौछार के बीच वे भी मरमरा जाते। तुमने जरा भी दूरदर्शिता, पक्के इरादे व अनुशासन का सहारा नहीं लिया, वर्ना तुम अपने भैया-भाभी को किसी ट्रेन में भी भिजवा सकते थे जहां तुम्हारे भाई को ट्रेन से धक्का देकर कुछ फौजी तुम्हारी भाभी को भी ठिकाने लगा देते। रही बात तुम्हारे भतीजे-भतीजियों की, तो भाई मेरे, उन्हें पढ़ाते-लिखाते, बड़ा करते और जब उन्हें नौकरी नहीं मिलती तो वे या तो खुद-ब-खुद खुदकशी कर लेते वर्ना किसी विमान का अपहरण करने के बाद विधायक-सांसद तो बन ही जाते।

तुम निरे मंदबुद्धि थे मेहरचन्द! वर्ना २०-सूत्री कार्यक्रम के तहत तुम्हें एक क्या कई भैंसें मिल सकती थीं, जिनके आगे बीन बजाकर तुम पूरी जिंदगी ऐश कर सकते थे। पर खैर, जो कुछ भी हुआ, तुम देश की स्थिति के अनुकूल सिद्ध नहीं हुए, इसलिए फांसी को प्राप्त हुए। काश, तुम्हें डार्विन का सिद्धान्त मालूम होता, संविधान का भावार्थ मालूम होता और होता कानून की लक्ष्मणरेखाओं का अनुमान!

—परिश्रम वह सुनहरी चाभी है जो भाग्य का द्वार खोलती है।

—चाणक्य

—नारी प्रकृति की सुकुमार बेटी है, उस पर क्रोध मत करो; उसका हृदय कोमल है, उस पर विश्वास करो।

—वेदव्यास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुओं को निगलने वाली चार शक्तियां

—प्रो० हरिश्चन्द्र

हिन्दुओं के पतन के अनेक कारण हैं। अन्धविश्वास, आत्मविश्वास और स्वाभिमान का अभाव, धन का अत्यधिक लोभ, स्वार्थपूर्ण मनोवृत्ति, अकर्मण्यता भ्रष्टाचार, आपसी फूट इत्यादि।

ये सब आन्तरिक कारण हैं। इनकी बहुत चर्चा हो चुकी है। कुछ कारण बाहरी हैं। प्रस्तुत लेख के विद्वान् लेखक ने हिन्दुओं को निगलने वाली चार ऐसी शक्तियों की ओर उंगली उठाई है, जिनके आक्रमण ने खतरनाक रूप धारण कर लिया है। लेख पढ़ने योग्य ही नहीं, विचार करने योग्य भी है।

—सम्पादक

हिन्दू कौम जर्जर समझी जाती है और हड़पने के लिए दुनिया में सबसे आसान कौम है। चार आक्रमणकारी शक्तियां हिन्दुओं के अस्तित्व को समाप्त करने पर तुली हुई हैं। तीन शक्तियां बाहरी हैं—इस्लामी, ईसाई और कम्युनिस्ट। इन तीनों शक्तियों के प्रतिनिधि भारत के ही हैं और हिन्दू कौम से ही कट कर बने हैं। यहीं का नमक व अन्न खाकर यहीं विष उगल रहे हैं। ये शक्तियां बाहरी इसलिए हैं, क्योंकि बाहर के इशारे पर वे यहां काम करते हैं। इनका प्रेरणास्रोत बाहर है।

इस्लामी आक्रमणकारी शक्ति में भारत के सभी मुसलमानों को नहीं शामिल किया जाना चाहिये। इस शक्ति के अंग वे ही मुसलमान माने जाने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहिये, जिन्हें भारतीय होने का गर्व नहीं, किन्तु मुसलमान होने का बहुत फख्र है। जो भारत के अनेक सहस्राब्दियों के इतिहास में कोई अच्छी बात नहीं देखते, किन्तु मुगलकालीन भारत पर बहुत गर्व करते हैं। जो समझते हैं कि मुसलमान भारत में नवाब या जहांपनाह बनने के लिए ही पैदा किये गये हैं, नहीं तो कम-से-कम एक दामाद या मेहमान बनकर रहने के लिए। जिसे अपना अल्पसंख्यक स्वरूप नहीं सुहाता भले ही उसे अपना अलग स्वरूप बनाये रखने के नाम पर विशेषाधिकार मिलते हों। मोटे तौर पर, कहा जाये तो जो सम्पूर्ण भारत को या भारत के कुछ हिस्सों को इस्लामी राष्ट्र के रूप में देखना चाहता है या ऐसा करने में जो सहायक हो रहा है, उसे इस्लामी आक्रमणकारी शक्ति का अंग समझा जाना चाहिये। अपने आपको हिन्दू कहने वाले भी (विशेषकर आज के राजनैतिक मंच के सभी कलाकार) इस आक्रमणकारी शक्ति के मजबूत हाथ माने जाने चाहिये।

इसी प्रकार ईसाई व कम्युनिस्ट आक्रमणकारी शक्तियों के बारे में कहा जाना चाहिये कि भारत में रहने वाला हर ईसाई या अपने आपको कम्युनिस्ट कहने वाला हर व्यक्ति इन शक्तियों का अंग नहीं है। जो भारत के टुकड़ों को ईसाई राष्ट्र या रूस की विदेश सेवा में संलग्न एक "प्रोग्रेसिव समाजवादी राष्ट्र" बनाना चाहते हैं, वे क्रमशः ईसाई आक्रमणकारी शक्ति व कम्युनिस्ट आक्रमणकारी शक्ति के अंग माने जायेंगे।

चौथी शक्ति भारत की ही है। उसे परोक्ष प्रेरणा पश्चिमी जगत् से मिलती है। कुछ वर्ष पूर्व तक इस शक्ति में अधिकतः अभिजात हिन्दू ही सम्मिलित होते थे, किन्तु अब तो मध्यम आयवर्ग के हिन्दू भी अच्छी संख्या में आने लगे है। इन्हें आप मैकालेवादी कह सकते हैं या अंग्रेजीदां। यह चौथी शक्ति हिन्दू होते हुए भी उपरोक्त तीन आक्रमणकारी शक्तियों का पक्ष लेती है, अतः अपने आप में एक आक्रमणकारी शक्ति है। मैकालेवादी अपने आपको हिन्दू कहने में थोड़ा संकोच भी करते हैं।

जब हिन्दू-मुस्लिम दंगे होते हैं तो मैकालेवादी हिन्दू साम्प्रदायिकता को कोसते हैं व हिन्दुओं को उनकी पारम्परिक सहिष्णुता की याद दिलाते हैं। वे यह नहीं देख पाते कि दंगे वहीं होते हैं, जहां मुस्लिम जनसंख्या २०-३० प्रतिशत हो जाती है। यदि हिन्दू ही दंगा करता है तो वहां क्यों नहीं करता जहां उसकी संख्या ९०-९५ प्रतिशत है व मुसलमान ५-१० प्रतिशत ही हैं। मैकालेवादी अपने मुस्लिम मित्रों को कुछ नहीं कहते। वे समझते हैं कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमानों ने दंगे में जो कुछ भी किया, वह आत्मरक्षा का ही उपाय था। वे इस तथ्य को भी नहीं देखते कि एक मुस्लिमबहुल महल्ले में हिन्दू अपने आपको असुरक्षित पाता है, जबकि एक हिन्दूबहुल महल्ले में मुसलमान को किसी भी प्रकार का भय नहीं होता।

मैकालेवादियों को ईसाइयों में असीम प्रेम की गंगा बहती दिखाई देती है। मदर टेरेसा तो उनकी आराध्य देवी है, जिसकी पूजा करते वे नहीं थकते। भारत सरकार ने उन्हें भारतरत्न की उपाधि दे ही दी है। लेकिन मैकालेवादियों को शिकायत है कि पहले एक विदेशी संस्था ने मदर टेरेसा को "नोबेल-शांति पुरस्कार" दिया, उसके बाद भारत सरकार ने "भारतरत्न"। मैकालेवादी शिकायत करता है कि हम मदर टेरेसा को पहचानने में विदेशियों से पीछे क्यों रहे? (देखें "इंडिया टुडे" १५ जून १९८३ में एक पाठक का पत्र)। वह यह भूल जाता है कि जब श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने निजी हैसियत में लोकसभा में "धर्मस्वातंत्र्य विधेयक" प्रस्तुत किया था, तब मदर टेरेसा ने तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को पत्र लिख कर अपने प्रभाव का प्रयोग कर उक्त विधेयक को वापस लेने का अनुरोध किया था। निष्पक्ष दृष्टि से देखा जाये तो उक्त विधेयक सर्वथा न्यायपूर्ण था व भय-लोभ आदि द्वारा हुए धर्मान्तरण को अवैधानिक बनाता था। नगालैंड, मिजोरम, मेघालय के ईसाईबहुल होने से जो राष्ट्रीय संकट उत्पन्न हुआ है, उस पर मैकालेवादी दृष्टिपात नहीं करता।

मैकालेवादियों को कम्युनिस्टों में भी अनेक अच्छी बातें दिखायी देती हैं। कम्युनिस्टों की ओर इंगित करके वे हिन्दुओं को बताते हैं कि जातिवाद के विष को हिन्दू कौम से निकालना ही होगा।

मैकालेवादियों को हिन्दुओं की सभी कमजोरियां दिखाई देती हैं व अन्य तीन शक्तियों में कोई नहीं। यह पक्षपात मैकालेवादी की अपनी विशिष्टता है। वह यह भी नहीं मानता कि अन्य तीन शक्तियों से भारत को कोई खतरा है। वह इन तीन आक्रमणकारी शक्तियों के अस्तित्व को स्वीकार भी नहीं करता। उसका कहना है कि ये तीनों शक्तियां कुछ साम्प्रदायिक हिन्दुओं के मन की काल्पनिक उपज हैं। यह चौथी शक्ति सबसे खतरनाक है, क्योंकि (क) यह हिन्दुओं से ही बनी है व बनती जा रही है। (ख) ऐन मौके पर अन्य शक्तियों का पक्ष लेती है, (ग) समाचारपत्र व पत्रिकाएं (विशेषकर अंग्रेजी), रेडियो, दूरदर्शन, साहित्यप्रकाशन, सरकारी सत्ता (विशेषकर नौकरशाही विभाग) इसके अधिकार में हैं, (घ) इसे मातृभूमि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से प्रेम नहीं। देश में कुछ भी हो रहा हो, यह मैकालेवादी चहारदीवारी पर बैठा "निष्पक्षता का चोगा" पहन कर अपने विचार देता है, जो प्रायः "हिन्दू कौम को प्रवचन" ही होते हैं। यदि मैकालेवादी को भारत कभी रहने लायक जगह नहीं लगी तो इसे पूरा विश्वास है कि इसकी "निष्पक्षता व स्वामिभक्ति" के कारण यूरोप अथवा अमेरिका में इसे शरण मिल जायेगी। सबसे अधिक दुःख की बात तो यह है कि यह हिन्दू कौम ही इस चौथी शक्ति को जन्म देती है व दूध पिला-पिला कर पालती है। इनका जन्म प्रायः अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में होता है, जहां अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिए यह हिन्दू हर किसी की खुशामद करता फिरता है।

इन चार शक्तियों से घिरी हिन्दू कौम का भविष्य में क्या स्थान है?

हिन्दू का हिन्दू के रूप में भविष्य नहीं

इस्लामी, ईसाई, कम्युनिस्ट व मैकालेवादी शक्तियां बाहरी मोहरे बन कर हिन्दू कौम को नष्ट करने पर तुली हुई हैं। यदि ये शक्तियां अपने प्रयास में सफल होती हैं तो देश के और टुकड़े कर देंगी व अनेक क्षेत्रों में गृहयुद्ध को जन्म देंगी। हिन्दुओं का एक वर्ग भय या लोभ के वश में समर्पण कर देगा व एक वर्ग इस तलवार का सामना करने को बाध्य होगा, जिसे कुछ आक्रमणकारी शक्तियां पैनी कर रही है। हिन्दू कौम अपनी ही विकृतियों के कारण इतनी जर्जर और विघटित है कि वह बौद्धिक या लड़ाई-झगड़े के क्षेत्र में आक्रमणकारियों का सफलतापूर्वक सामना करने में समर्थ नहीं। पिछले इतिहास का ढिंढोरा पीट कर अपनी शक्ति को ऊंचा समझना बुद्धिमत्ता नहीं। आने वाला समय निश्चित रूप से यह बताने वाला है कि हिन्दू 'हिन्दू' के रूप में जीवित नहीं रह सकता। यह एक यथार्थ दृष्टिकोण है। विचार करके देखें तो यह है भी इतनी सड़ी-गली कौम कि यह जीने लायक है भी नहीं। तभी इसे हड़पने के लिए संसार की प्रभुतासम्पन्न शक्तियां, जो मुख्य रूप से तीन ही हैं—इस्लामी (अरब राष्ट्रों में उत्पन्न हुई), ईसाई (यूरोप व अमेरिका में उत्पन्न) एवं कम्युनिस्ट (रूस में उत्पन्न हुई)—प्रयत्नशील हैं। जब हिन्दुओं का ही "हिन्दू" के रूप में भविष्य नहीं है, तब उन संस्थाओं का भी भविष्य में कोई स्थान नहीं, जो हाल ही में उत्पन्न हुई हैं व हिन्दू को "हिन्दू" के रूप में जीवित रखने का स्वप्न देखती हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक ही रास्ता—वैदिक धर्म

इन शक्तियों के सामने समर्पण करने या पैनी तलवार से गर्दन कटाने के अतिरिक्त हिन्दू के सामने केवल एक ही रास्ता है। वह रास्ता है—वेदों की शरण में आना। हिन्दूमात्र को वेदों की शरण में आना होगा। हिन्दू वेदों को अपना धर्मग्रन्थ मानता ही है व उन्हें आदर की दृष्टि से देखता है। वेद उसकी अपनी चीज है, जिसे वह भूल बैठा है व जिससे वह दूर हो गया है। वेदों से दूर होने के ही कारण हिन्दू कौम में इतनी अधिक विकृतियां आ गयी हैं कि यह कौम सभ्य संसार की सबसे निम्नस्तरीय कौम बन गई है। संसार में और कहां इतना भ्रष्टाचार व बेईमानी है? संसार में और कहां नवविवाहिताओं को मार दिया जाता है या उन्हें इतना तंग कर दिया जाता है कि वे आत्महत्या कर लेती हैं? कहां किसी कुलविशेष में जन्म लेने मात्र से कोई व्यक्ति घृणित बन जाता है?

हिन्दू से वैदिकधर्मी बनना ही समझदारी का रास्ता है। वैदिकधर्मी बनकर ही वह शान्ति से, पारस्परिक प्रेम के साथ अपनी भारतभूमि में पूरे सम्मान के साथ रह पायेगा और भारत के बाहर भी सम्मान पायेगा। ओ३म् के झण्डे के नीचे व अपौरुषेय ज्ञान वेद की प्रामाणिकता के आधार पर संघटन में ऐसी दृढ़ता व शक्ति आयेगी कि कोई भी आक्रमणकारी आंख उठाने का साहस नहीं करेगा। तब चारों आक्रमणकारी शक्तियां खोखली पड़ जाएंगी। हिन्दुओं का वैदिकधर्मियों के संघटन में जो परिवर्तित रूप होगा, उसकी आकर्षण शक्ति इतनी अधिक होगी कि अन्य चारों शक्तियों के लोग वैदिकधर्मी बनने लगेंगे। पहले तो उन शक्तियों का बुद्धिजीवी वर्ग वैदिकधर्मी बनेगा, फिर संख्याबल वाला वर्ग। जहां बुद्धि पहुंचती है, वहां हाथ-पैर पहुंच ही जाते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में वेद की उदात्त व सार्वभौम शिक्षाओं के सामने हर विचारशील व्यक्ति को नतमस्तक होना ही पड़ेगा।

कोई भी समझदार व्यक्ति अजीबोगरीब पौराणिक काहनियां सुनने को तैयार नहीं कि किसी का पेट फटा व उसमें से एक-दो लोग निकल आये या धरती फटी व कोई उसमें समा गया या किसी का सिर हाथी का व धड़ मनुष्य का व किसी का सिर मनुष्य का किन्तु धड़ सिंह का, इत्यादि। कोई यह भी मानने को तैयार नहीं कि किसी पहाड़ी पर या आसमान में कोई ईश्वर बैठा है व दूतों की सहायता से वह संसार पर शासन कर रहा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। उसने सृष्टि को लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व बनाया। उसका एक इकलौता बेटा है, जिसे एक कुमारी ने बिना किसी पुरुष के इस धरती पर जन्म दिया, इत्यादि। न ही कोई यह मानने को तैयार है कि चौथे आसमान पर एक सिंहासन पर खुदा बैठा है। (अब सब जानते हैं कि पोल के अलावा आकाश नाम की कोई चीज नहीं।) उस खुदा ने धरती पर कई पैगम्बर भेजे, लेकिन १४०० वर्ष पूर्व उसे कुछ ऐसा सूझा कि उसने एक "अन्तिम पैगम्बर" को रसूल बना कर भेजा। उसने अपनी पिछली सभी किताबों को रद्द कर दिया (जो इस दुनिया में हम व आप जैसा अल्पज्ञ लेखक भी नहीं करता व एक अन्तिम किताब कुरआन भेज दी भला जब परमात्मा पैगम्बर व किताबें निरन्तर भेज ही रहा था, तो एकबारगी यह सिलसिला बन्द क्यों कर दिया और इसी रसूल को एजेन्ट बनाया कि जिसकी वह सिफारिश करेगा, उसे ही खुदा जन्नत में भेजेगा। आसमान में कोई जन्नत है, इसे कोई मूर्ख ही स्वीकार करेगा। कोई भी विचारशील व्यक्ति इस प्रकार की बुद्धिविरुद्ध बातों को स्वीकार नहीं कर सकता। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि आज के युग में स्वाभाविक उन्नति वैदिक धर्म की ही होगी। वैदिक धर्म ही एकमात्र धर्म है, जो बुद्धि का उपयोग करने की बात कहता है, जबकि सारे मजहब अक्ल के दखल को स्वीकार नहीं करते। अक्ल का उपयोग करना मनुष्य के लिए जितना स्वाभाविक है, उतना ही स्वाभाविक मानव मात्र के लिए वैदिक धर्म है।

हिन्दू कौम जिस वैदिक धर्म से बिछुड़ गयी है, उसे ही अपना कर संघटित हो सकती है। वेद और केवल वेद के नाम पर सारे हिन्दू संघटित हो सकते हैं, बल्कि संसार के सारे मनुष्य वेद के नाम पर एक हो सकते हैं। एक संघटित शक्ति पर किसी का आक्रमण करना हंसी-खेल नहीं। आक्रमणकारी शक्तियों के सिर उठाने का एकमात्र कारण यह है कि हिन्दू कौम विघटित है। विघटित इसलिए है, क्योंकि वह वेद से बहुत दूर चली गयी है। वेद की शरण में आना ही समय की पुकार है—नाऽन्यः पन्था विद्यते अयनाय—इसके अलावा और कोई रास्ता है ही नहीं।

वेद की शरण में आने के उपाय

वेद भाड़े के पण्डित से पढ़वा लेने या अपने घर में छिप कर पढ़ लेने की चीज नहीं। हिन्दू ने यत्न ही नहीं किया कि वेदमन्त्रों को समझ-समझ कर पढ़े। वेदमन्त्र कोई हौवा नहीं। उन्हें पढ़कर समझ लेना कोई कठिन कार्य नहीं। हिन्दू को एक और शिकायत है कि उसके पास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
समय नहीं। हो भी कैसे, सुबह से लेकर रात तक वह धन जोड़ने में व्यस्त रहता है। एक व्यस्त से व्यस्त व्यक्ति भी वेदमन्त्रों का संकलन तो पढ़ ही सकता है। चारों वेदों में कुल मिलाकर लगभग बीस हजार मन्त्र हैं। कोई व्यक्ति अपने जीवन को सुधारना चाहता हो, तो १०-२० वेदमन्त्र ही पर्याप्त हो सकते हैं। आवश्यकता है कि वह वेदमन्त्रों को शुद्ध हृदय से अर्थसहित पढ़े व भाव को समझ कर अपने जीवन में उतारे। वेद की शरण में आने का यही अर्थ है कि वेद की उदात्त व सार्वभौम शिक्षाओं को समझना व उन्हें अपने जीवन में उतारना अर्थात् तदनुसार आचरण करना।

संसार की किसी भी पुस्तक या पंक्ति से पूर्व वेदमन्त्र अस्तित्व में थे। वेद से पुरानी कोई पुस्तक नहीं। वास्तविकता तो यह है कि जब मानव का आविर्भाव हुआ, तभी वेदों का भी। शाश्वत मानवधर्म तब से है, जब से मानव है व तब तक रहेगा जब तक मनुष्य का अस्तित्व है। हिन्दू कौम पर भले ही खतरा छाया हो, वैदिक धर्म का भविष्य उज्ज्वल है। जिस-जिस भौगोलिक प्रदेश में मनुष्य समाज वैज्ञानिक (अर्थात् तर्कसंगत) चिन्तन की ओर अग्रसर होगा, वहां-वहां वैदिक धर्म उन्नति करेगा। वेद किसी क्षेत्रविशेष या व्यक्तिविशेष की बपौती नहीं। जैसा पिछले कुछ वर्षों से हो रहा है, पश्चिमी जगत् में वैदिक धर्म (भले ही इस नाम से नहीं) प्रगति कर रहा है। दो उदाहरण पर्याप्त होंगे। (१) निरामिष भोजन (शाकाहार) की ओर प्रवृत्ति— जिस तेजी से पश्चिमी जगत् में (विशेषत: अमेरिका में) युवावर्ग मांसाहार का त्याग कर रहा है, वह चमत्कारपूर्ण है। किन कारणों से वहां मांसाहार त्याज्य समझा जा रहा है? मूल कारण यही है कि मनुष्य में मानवप्रवृत्ति बढ़ रही है। उसे ही मानवधर्म (या वैदिक धर्म) की प्रगति कहा जा सकता है। (२) योग वैदिक दर्शन ने मानवता को एक अभूतपूर्व योगदान दिया, जब उसने हमें एक तथ्य बताया कि हम श्वास-प्रश्वास पर नियंत्रण करके (अर्थात् प्राणायाम द्वारा) अपने मानसिक व्यवहारों (जैसे काम, क्रोध, लोभ इत्यादि) पर नियंत्रण कर सकते हैं। वैदिक दर्शन के इस अंग की विस्तृत व्याख्या महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन में की है। पश्चिमी जगत् में योग के नाम पर जहां व्यायामादि प्रचलित हो रहे हैं, वहीं बहुत-से लोग प्रतिदिन बीस-तीस मिनट आंखें मूंद कर एक आसन में बैठने भी लगे हैं। वे स्वयं इसका फल मानसिक शान्ति के रूप में मानते हैं। इस उदाहरण को वैदिक दर्शन के एक मुख्य सोपान पर चढ़ते चले जाने के रूप में देखा जा सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन दोनों उदाहरणों को देने का एक और प्रयोजन है और वह यह कि विदेशों में तो वैदिक संस्कृति की उन्नति हो रही है, किन्तु भारत में इसे नष्ट किया जा रहा है। अण्डा व मांस का भक्षण हिन्दू कौम में बढ़ता ही जा रहा है। इन पदार्थों के भक्षण का प्रचार भी किया जा रहा है। बच्चों की पुस्तकों व स्वास्थ्य रक्षक पुस्तकों में ये सब बातें देखी जा सकती हैं। योग भारत में थोड़ा बहुत अपनाया जा रहा है, किन्तु विदेश से आयातित वस्तु के रूप में—'योगा' के रूप में। मात्र कुछ आसन किए जा रहे हैं, जिन्हें स्वामी दयानन्द ने नटक्रिया की संज्ञा दी थी। प्राणायाम, ध्यान इत्यादि का विशेष प्रचार नहीं।

वैदिक संस्कृति भारत में लुप्त हो भी जाये, तो भी पृथ्वी के किसी और भूभाग में बनी रहेगी। हां, इसके कुछ विकृत होने का भय है, लेकिन कालान्तर में विकृत रूप भी चला जायेगा। यदि हिन्दू कौम वैदिक धर्म को अपना ले, तो भारत को विश्वगुरु बनने का गौरव मिलेगा, जैसा पहले कभी कहा जाता था—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

(मनुस्मृति २।२०)

अर्थात् इसी ब्रह्मावर्त देश में उत्पन्न हुए विद्वानों से पृथ्वी पर रहने वाले सब मनुष्य अपने-अपने आचरण तथा कर्तव्यों की शिक्षा ग्रहण करें।

वैदिक धर्म ही मानवधर्म है—मानवस्वभाव के सर्वथा अनुकूल है। सारे मजहब वैदिक धर्म के विकृत रूप हैं। मजहबों में जितनी भी अच्छी बातें हैं वे वेदों की हैं व गलत बातें मजहब वालों के अपने दिमाग की उपज हैं। हिन्दू कौम की आज की दुर्दशा का कारण उसका वेदों से दूर भटक जाना ही है। हिन्दू कौम के जर्जर हो जाने के कारण यह मुख्यतः चार आक्रमणकारी शक्तियों—इस्लामी, ईसाई, कम्युनिस्ट व मैकालेवादी का—आसान शिकार बन गयी है। हिन्दू कौम के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लग रहा है। किसी समस्या का समाधान समस्या की उत्पत्ति के मूल कारण को समझने से ही मिल सकता है। हिन्दू कौम के पतन व विघटन का मूल कारण उसका वेद मार्ग से दूर चला जाना है। अतः हिन्दू का भविष्य तभी सुरक्षित है, यदि वह वेदमार्ग पर चले अर्थात् वैदिकधर्मी बन जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

युग-युग से ऐसी बात कही

जो धर्म ध्वजा लेकर बढ़ते, वे हो जाते हैं अमर सभी,
हमने ही क्या ऋषि-मुनियों ने, युग-युग से ऐसी बात कही ।
जब कभी किसी ने वहशी बन, हमको दी कोई चुनौती है,
हम तो रक्षक हैं मूल्यों के, बर्दाश्त हमें कब होती है ।
अंगार लिए हैं प्राणों में, मन्दिर का दीप जलाते हैं,
या स्वयं प्रज्वलित होकर भी, जग का अंधकार मिटाते हैं ।
सिख गुरुओं के बलिदानों की, है समता कोई आज कहीं,
हमने ही क्या ऋषि-मुनियों ने, युग-युग से ऐसी बात कही ।
पाखण्डखण्डिनी ध्वजा आज, भारत-भू की रखवाली है,
विष का प्याला पी जाते हैं, करुणा भी इतनी पाली है ।
ऐसे फौलादी सीने हैं, संगीनें तक झुक जाती हैं,
श्रद्धानन्द बनना पड़ता है, जब आंच धर्म पर आती है ।
क्या वीर हकीकत की गाथा, दुनिया में मिलती और कहीं,
हमने ही क्या ऋषि-मुनियों ने, युग-युग से ऐसी बात कही ।
जो धर्म बदलते भूखों का, वे अपना चेहरा देखें तो,
भारत के शाश्वत मूल्यों को अपनी तुलना में देखें तो ।
'कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम्' में खो जायेंगे ये नाद सभी,
हमने ही क्या ऋषि-मुनियों ने, युग-युग से ऐसी बात कही ।

—कु० बन्दना चौहान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुरान में क्या है ?

सूरा अत तौबा

मदीना में उतरीआयतें---१२६

१. "अल्लाह" और उसके "रसूल" की ओर से उन 'मुश्रिकों' को साफ जवाब है जिनके साथ तुमने सन्धि की थी।

२. तो (हे मुश्रिको !) इस भू-भाग में चार महीने और चल फिर लो, और जान लो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सके और यह कि अल्लाह 'काफिरों' को अपमानित करने वाला है।

३. और अल्लाह और उसके 'रसूल' की ओर से बड़े 'हज्ज' के दिन लोगों के लिए मुनादी की जाती है कि अल्लाह 'मुश्रिकों' (के प्रति जिम्मेदारी) से बरी है, और उसका 'रसूल भी। तो यदि तुम लोग 'तौबा' कर लो, तो यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है, परन्तु यदि तुम मुंह मोड़ते हो, तो जान लो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकते। और जिन लोगों ने कुफ्र किया है उन्हें दुःख देने वाली यातना की मंगल सूचनाएं दो।

४. सिवाय उन 'मुश्रिकों' के जिन से तुमने सन्धि की, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की। और न तुम्हारे मुकाबले किसी की सहायता की, तो उनके समझौते को उनके नियत समयव तक पूरा करो। निस्सन्देह अल्लाह डर रखने वालों से प्रेम रखता है।

५. फिर, जब हराम महीने बीत जायें, तो मुश्रिकों को जहां कहीं पाओ कत्ल करो, और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो, और हर घात की जगह उन की ताक में बैठो। फिर यदि वे "तौबा" कर लें और "नमाज" कायम करें और "जकायत" दें तो उनका मार्ग छोड़ दो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

६. और यदि "मुश्रिकों" में से कोई व्यक्ति तुमसे शरण का इच्छुक हो, तो उसे शरण दे दो यहां तक कि वह अल्लाह का कलाम सुन ले। फिर उसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसके सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दो। यह इसलिए कि ये ऐसे लोग हैं जो जानते नहीं।

७. इन "मुश्रिकों" के लिए अल्लाह और उसके रसूल के नजदीक कोई सन्धि कैसे हो सकती है सिवाय उन लोगों के जिन से तुम ने "मस्जिदें हराम" ("काबा") के पास सन्धि की थी ? तो जब तक वे तुम्हारे साथ सीधे रहें, तुम भी उन के साथ सीधे रहो। निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों से प्रेम करता है जो करने वाले हैं।

८. कैसे (यह हो सकता है) जब कि यदि उन्हें तुम पर अधिकार प्राप्त हो जाये तो न वे तुम्हारे बारे में किसी नाते-रिश्ते की परवाह करें और न किसी प्रतिज्ञा की ? वे अपने मुंह से तो तुम्हें राजी करते हैं परन्तु उनके दिल इन्कार करते हैं। और उनमें अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं।

९. उन्होंने अल्लाह की "आयतों" के बदले थोड़े मूल्य "सांसारिक कलाभ" का सौदा किया, तो वे अल्लाह के मार्ग से रोकने लगे। निश्चय ही बुरा काम है जो वे करते हैं।

१०. किसी ईमान वाले के बारे में न नाते-रिश्ते की परवाह करते हैं और न किसी प्रतिज्ञा की। यही लोग हैं जो सीमा से आगे बढ़ जाते हैं।

—जहां नारी का सम्मान होता है, वहां देवता रमण करते हैं। —मनु

—संसार में निःस्वार्थ प्रेम केवल मां दे सकती है।

—शेक्सपियर

—सबसे अधिक भगवान् से डरो और उससे भी अधिक उससे डरो, जो भगवान् से भी न डरे।

—श्री करपात्री जी

—सब अनर्थों की जड़ स्वार्थ है।

—गोस्वामी तुलसीदास

—स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।

—लोकमान्य तिलक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजस्थान में हजारों पाकिस्तानी अवैध रूप से बसे हैं !

जयपुर। राजस्थान में भारी संख्या में अवैध रूप से पाकिस्तानी नागरिकों के रहने के पुष्ट समाचार मिले हैं। गृह विभाग में इस सम्बन्धी मामलों की जांच-पडताल के लिए उचित संख्या में कर्मचारियों के होने के कारण उनकी संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है। सरकार और सभी राजनीतिक दल इस स्थिति से चिंतित हैं।

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार प्रतिवर्ष कम-से-कम ४०० पाकिस्तानी नागरिक वैध पारपत्र लेकर यहां आते हैं और उसके बाद अवधि समाप्त होने पर वापस नहीं जाते बल्कि अपने सगे-सवधियों के यहां लुकछिप कर रहते हैं और अन्ततः वे भारतीय बन जाते हैं।

पुलिस सूत्रों के अनुसार १९७७ में ३६३, १९७८ में ४५०, १९७९ में ७५१, १९८० में २५८ और १९८१ में ११२२ ऐसे पाकिस्तानी नागरिक थे जो राजस्थान में पाकिस्तान से वैध पारपत्रों पर आए थे, पर अवधि समाप्त हो जाने पर भी पाकिस्तान वापस नहीं गए। तीस जून १९८२ तक उस वर्ष में ७५९ पाकिस्तानी नागरिक और राजस्थान में आए और वापस नहीं गए।

राजस्थान की १००० कि. मी. स्थल सीमा से तस्करी-जासूसी करने वाले लोग भी आते जाते रहते हैं। इनकी पकड-धकड़ भी होती है, पर ऐसे भी कई लोग हैं जो बिना पारपत्रों के राजस्थान की सीमा में आ गए और जैसलमेर और बाड़मेर के इलाकों में राजनेताओं के संरक्षण में रह लेते हैं।

पहले तो बाडमेर का एक वरिष्ठ कहा जाने वाला राजनेता निरन्तर इसी धन्धे मेंसम्मिलित था और उसके पाकिस्तान में अपने सम्पर्कसूत्र थे। उसके मां-बाप पाकिस्तान में रहते थे। उसकी एक बीवी पाकिस्तान में रहती थी और उसका एक खेत भी पाकिस्तान में था। चूंकि यह उस समय एक सत्तारूढ़ दल के लिए सोने की मुर्गी था, इसलिए उसको जयपुर और जोधपुर में बड़े नेताओं का प्रश्रय मिला हुआ था और वह सरकारी गाडी में पाकिस्तान आता-जाता था और तस्करी करता था। १९६५ में उसको सुरक्षा के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खतरा जानकर भारत रक्षा कानून में बंद कर दिया गया था, पर उसके चांदी के जूते के जोर और राजनीतिक धर्मपिताओं ने उसको बचा लिया। १९७१ में भी वह पकड़ा नहीं जा सका, क्योंकि वह एक बड़े राजनेता के घर में घुस कर रहा।

एक बड़ी कठिनाई यह है कि राजस्थान सरकार अवैध रूप से राजस्थान में रहने वाले पाकिस्तानियों के खिलाफ कोई भी कार्रवाई नहीं कर पा रही है, क्योंकि उनमें से अनेकों ने अपने भारतीय रिश्तेदार बना लिए हैं और उनकी सहायता से भारतीय नागरिकों के रूप में अपने नाम मतदाता सूचियों में लिखवा लिए हैं और यहां रोजगार करने लगे हैं।

गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर (तिलहर) में छात्रों का प्रवेश

गुरुकुल का नवीन शिक्षा सत्र ८ जुलाई से प्रारम्भ हो गया है। प्राचीन आश्रम पद्धति के अनुसार ज्ञान और चरित्र के समन्वित तथा व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर बल देने वाली संस्था उत्तर प्रदेश राज्य प्रशासन से प्रथम श्रेणी में वर्गीकृत एवं आर्थिक सहायता प्राप्त है। यहां बेसिक शिक्षा परिषद् से सम्बन्धित प्रारम्भिक कक्षाओं (१ से ५ तक) तथा संस्कृत विश्व-विद्यालय वाराणसी से प्रथमा (षष्ठ) से आचार्य (एम० ए०) समकक्ष स्तर के अध्ययन एवं परीक्षाओं की व्यवस्था है। तदनुसार प्राचीन विषयों के गहन अध्ययन के साथ सभी आधुनिक विषयों (अंग्रेजी, विज्ञान, गणित आदि) का यथेष्ट परिज्ञान कराया जाता है।

मेधावी एवं अविकसित वर्ग के छात्रों को पात्रता के आधार पर राजकीय एवं केन्द्रीय छात्रवृत्तियां सुलभ हैं।

भोजन शुल्क ५०) प्रतिमास है। घृत, दुग्धादि पर व्यय बच्चे की निजी आवश्यकता के अनुसार देय होगा।

प्रवेशार्थी शीघ्र सम्पर्क स्थापित करें।

आचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विचार प्रवाह

क्या रा० स्व० सं, विकृति का प्रतीक है?

—राघवेन्द्र शर्मा 'राघव'

कहते हैं कि गीदड़ शेर की खाल ओढ़कर राजा बन बैठा था। किन्तु समय की मार से वह भी कहां तक शेर बना रहता? वही हाल हमारे सत्तारूढ़ शासन की चालों से दिखाई दे रहा है। इन्दिरा कांग्रेस के बड़े-बड़े पदाधिकारी अपने वोट बैंक को बनाये रखने के लिए बड़े-बड़े भाषण झाडने मंच पर खड़े होते हैं। देश के अस्तित्व के लिए मर मिटने वाली संस्था और संगठन उन्हें खटकते रहते हैं। अतः भाषणों, वक्तव्यों या फिर संवाददाताओं से बातचीत में उनकी इस मनोवृत्ति का पता चल जाता है। पिछले दिनों इन्दिरा कांग्रेस के नेता सी. एम. स्टीफन का एक वाक्य पढ़ा, जिसमें उन्होंने कहा था—'हिन्दू समाज मूलरूपेण सहिष्णु है, रा० स्व० सं० उसमें एक विकृति है।' किन्तु ऐसा कहने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि सहिष्णु का अर्थ यह नहीं कि चीन या पाकिस्तान देश पर आक्रमण कर दे और हमारे कर्णधार सहिष्णुता- सहिष्णुता के गीत गाते रहें। पाकिस्तान के दो बार आक्रमण करने पर रा० स्व० सं० ने ही प्रतिरोध में पहल की थी। उन्होंने पाकिस्तानी आक्रमणकारियों से भारतीय सेना के पहुंचने तक डटकर लोहा लिया। देश की गर्दन पर तलवार चलायी जा रही हो और संघ के कार्यकर्ता शान्त हुए बैठे रहें, यह नहीं हो सकता।

जो लोग एक विकृति कहकर रा० स्व० सं० पर आरोप लगाना चाहते हैं, उन्हें अभी भारत का असली और विशेषतः रा० स्व० सं० से सम्बन्धित इतिहास पढ़ने की आवश्यकता है। उनकी बुद्धि रा० स्व० सं० के सिद्धान्तों को समझने के लिए अभी बालबुद्धि के समान है।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रा० स्व० सं० अपना दायित्व समझे

शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरता हो, जिस दिन किसी पत्र-पत्रिका में रा० स्व० सं० पर कुछ न कुछ आरोप न लगाया जाता हो। कभी केन्द्रीय सरकार तो कभी राज्य सरकारें रा० स्व० सं० पर आरोप लगाती रहती हैं। यहां तक कि देश की प्रधान मन्त्री भी रा० स्व० सं० पर आरोप लगाना नहीं भूलतीं। खेद की बात है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी जहां भी सार्वजनिक सभाओं में भाषण करने जाती हैं, वहां संघ को साम्प्रदायिक कहकर अराष्ट्रीय करार देती हैं। श्रीमती गांधी को यह स्मरण रखना चाहिए कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ देश का वह संगठन है, जिसने देश की अखण्डता और एकता के पक्ष में ठोस भूमिका निभायी है। देश स्वयंसेवकों के बलिदानों को भूला नहीं, जो देश की स्वतन्त्रता हेतु अपने पुत्र, पत्नी, परिवारादि को छोड स्वातन्त्र्य होली में स्वाहा हो गये। अपना दोष छिपाने या स्वार्थवश अन्यों पर दोषारोपण करना बुद्धिमत्ता नहीं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कुछ महत्त्वपूर्ण हिन्दुत्ववादी सिद्धान्तों के कारण तथाकथित बुद्धिजीवी इसे साम्प्रदायिक समझ लेते हैं। ऐसे ही ईर्ष्यालु या पृथक्तावादी तत्त्व संघ पर उसकी भावनाओं के विरुद्ध आरोप मढ़ने लगते हैं। बहुत से अशिक्षित लोग भी दूसरों की बहकावट में आकर जैसा सुना, उसका ढिंढोरा पीटना जानते हैं। यहां तक कि प्रशासनिक अधिकारी भी स्वार्थवश रा० स्व० सं० पर आरोप लगाते रहते हैं। किन्तु यह निश्चित है कि रा० स्व० सं० साम्प्रदायिक न होकर देश के लिए अत्यन्त अपेक्षित संगठन है। भारत के सुधारवादी शिक्षित समाज को इससे बड़ी बड़ी आशायें हैं। इसके राष्ट्री और सुधारवादी होने का ज्वलन्त प्रमाण यह है कि आज तक भारत के किसी भी उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय तक में इसके विरोध में एक भी मुकद्दमा सफल नहीं हो सका। कुछ समय पूर्व न्यायपालिका की इसी निष्पक्ष न्याय करो की प्रवृत्ति को देखकर सत्तारूढ़ दल भी पक्षपातपूर्ण कार्रवाइयों के समाचार पत्र-पत्रिकाओं में थे। उसका कारण यह था कि न्यायपालिका के अधिकार को सीमित करके निष्पक्ष न्याय के विपरीत जैसा चाहो, हुक्म बजवा सको। भारत राष्ट्र के सर्वोच्च न्यायाधिकारी श्री वाई. वी. चन्द्रचूड़ ने भी इस विषय में अनेक बार संकेत किए।

ऐसे समय रा० स्व० सं० का यह विशेष दायित्व बन जाता है कि वह अपने कार्य को व्यापक रूप दे। भारत के गांव-गांव में रा० स्व० सं० की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक शाखा हो, जिससे माध्यम से वह स्वत्व की भावना को जनता के सामने रख सके। रा० स्व० सं० एक राष्ट्रीय संगठन है। अतः वह देश से पहले मानव से प्रेम करता है और मानव की खातिर देश से प्रेम करता है। किन्तु अपने इस मूलभूत सिद्धान्त के संरक्षण हेतु संघ को यह अवश्य विचारना होगा कि वह अपना व्यापक अस्तित्व बनाने हेतु क्या भूमिका अदा कर रहा है।

बहुरा सुने न भारती कान धेनु रंभाय

भारत एक कृषिप्रधान देश है। अतः देश की आशाओं का आधार कृषि है। किन्तु जब भारत के निर्धन और असहाय किसानों के मूल साधन का ही विनाश किया जाने लगे तो राष्ट्र का आर्थिक सन्तुलन बिगड़ना स्वाभाविक है। बेचारा किसान थोड़ा समर्थ हुआ तो ट्रैक्टर आदि महंगे कृषि साधनों की ओर आकर्षित होता है। इस पर उसे अपनी जमीन जायदाद तक बेचनी पड़ जाती है। और जब वह ट्रैक्टर लाने पर लाभांश १० प्रतिशत और व्ययांश ५० प्रतिशत देखता है तो बरबाद होकर पछताता है, रोता है और कहता है कि मैं इस हाथी (ट्रैक्टर) को न लेता तो क्यों अपना घर फूंकता ? सरकारी एजेंटों के चक्कर में आकर मारा-मारा फिरा। अब उसकी जायदाद नष्ट होने पर उसे दर-दर की ठोकरें खाकर जीना पड़ता है। फिर उसे रोटी के लिए मरा-सा बैल भी नहीं मिलता। कहां तक कहें ? इस सबका मूल कारण है गोधन का विनाश। भारत की अंधी सरकार न जाने किस औचित्य को लेकर देश का गला काट रही है ? गाय के दूध की दुर्लभता से देश में अनेक विभीषिकायें फैल रही हैं। जन स्वास्थ्य के मूल तत्त्व पर सरकार ध्यान ही नहीं दे रही। देश का उत्पादन निरन्तर गिरता जा रहा है। विदेशी कर्ज से भारत दबता जा रहा है। ऐसी अवस्था में भी शासन अभी तक गोहत्या को बन्द नहीं करा रहा।

भारत में गायें निरन्तर कट रही हैं। शासन चुप्पी साधे हुए है, जबकि राष्ट्रीय स्वयं सेवी संस्थाएं आवाज उठा रही हैं। खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि न तो राष्ट्रीय संस्थाएं या संगठन और न ही सत्तारूढ़ सरकार इस विषय में कोई ठोस कदम उठा रही हैं। आज गोवंश की रक्षा के मामले में यदि शासन चुप्पी साधे बैठा है तो स्वयंसेवी संगठन व संस्थाएं तुरन्त आगे आकर क्रांतिकारी कदम उठायें। इन्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि देश की जनता उनके साथ है। यदि देश के भविष्य की चिंता किसी को है तो वह शीघ्र ही इस कार्य को क्रियात्मक रूप देने में जुट जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति का शिष्टमंडल खुर्जा में

(हमारे कार्यालय संवाददाता से)

खुरजा—गंगा की नहर की गोद में अलीगढ़, बुलन्दशहर की सड़क पर बसा एक छोटा-सा गांव—जहां कभी संस्कृत पाठशालाओं की भरमार हुआ करती थी। धीरे-धीरे उद्योग नगरी बन गया और यहां के बने चीनी के बरतन देश-विदेश की शोभा बढ़ाने लगे। पिछले ३०-३५ सालों में इसका और भी विकास हुआ होता, अगर उसे बिजली आदि की अधिक सुविधाएं प्राप्त हुए होतीं। यह शान्तिप्रिय नगर जून के अन्तिम सप्ताह में साम्प्रदायिक झगड़ों की लपटों में घिर गया। अचानक एक छोटी-सी घटना को लेकर उपद्रव आरम्भ हुआ। उपद्रव का कारण था एक बरात में छूट रही आतिशबाजी। मुसलमानों ने आपत्ति की और बालमीकि बन्धुओं ने चुनौती स्वीकार की। देखते ही देखते सारा नगर दंगे की चपेट में आ गया। दूकानें जलने लगीं और जब तक शासन चुस्त न हुआ तब तक वह सब कुछ होता रहा जो ऐसे में होता है।

१० जुलाई को अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षुः जी, पण्डिता राकेश रानी, कुमारी आभा, श्री सतीश और दो अन्य युवकों के साथ दंगाग्रस्त क्षेत्रों को देखने के लिए गया। कहानी कोई नयी नहीं थी। मुसलमानों के घर से हथियारों का बड़ी संख्या में मिलना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वे झगड़े की तैयारी पहले से कर रहे थे। आर्य-समाज मन्दिर में नगर के प्रमुख कार्यकर्ताओं की एक बैठक पण्डिता राकेश-रानी की अध्यक्षता में हुई। वहां उपस्थित जन-समूह ने उनसे आग्रह किया कि आप इस क्षेत्र का नेतृत्व संभालें, क्योंकि सारे क्षेत्र में मुस्लिम साम्प्रदा-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यकता फिर से सिर उठा रही है। अक्तूबर में लोक सभा का उपचुनाव भी होने वाला है। उसके लिए भी आपसे खड़ा होने का आग्रह किया गया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि ऐसे दंगे भारतवर्ष में प्रतिदिन होते रहेंगे जब तक हिन्दू संगठित नहीं होगा और इस नीति पर आचरण नहीं करेगा कि हम किसी को छेड़ेंगे नहीं, पर अगर कोई हमें छेड़ेगा तो हम उसे छोड़ेंगे भी नहीं। बैठक में नागरिकों ने अपने विचार प्रकट किये। सभानेत्री के आसन से बोलते हुए पण्डिता राकेशरानी ने कहा कि हमें जीवन की दौड़ में सामना भी करना है और जीतना भी है। हम झुकेंगे नहीं और रुकेंगे भी नहीं। मुसलमान भारत के अन्य नागरिकों के समान अधिकार लेकर यहां रह सकते हैं, पर उन्हें अल्पसंख्यक होने के नाते विशिष्ट अधिकार चाहिएं तो ये अधिकार उन्हें किसी भी मूल्य पर नहीं दिये जा सकते। हमारी नीति है कि भारत के सभी नागरिक समान हों। उन्हें भारतीय होने के नाते एक साथ मिल कर रहना चाहिए।

राकेशरानी जी ने कहा—आज की इन परिस्थितियों, इन दंगों को देखकर मुझे सन् १९४७ की याद आ रही है। उस समय मुसलमानों ने आगे बढ़कर कहा था कि हमें एक अलग राष्ट्र के रूप में पाकिस्तान चाहिए। पाकिस्तान बना और वहां किसी हिन्दू को वे अधिकार प्राप्त नहीं, जो मुसलमानों को हैं। इतना असला (शास्त्रास्त्र) मस्जिदों व घरों में पकड़ा जाता है। क्या इससे पूजा की जाती है? फिर इतना पैसा कहां से आता है? हमें तन, मन, धन सब कुछ अर्पण करके अपने देश और अपनी संस्कृति की रक्षार्थ आगे आना और सक्रिय होना पड़ेगा। तभी हिन्दू राष्ट्र का निर्माण संभव हो सकेगा। जब मुसलमान स्वयं को पहले मुसलमान बाद में कुछ और कहता है, तो हमें हिन्दू कहलाने में संकोच क्यों? आज सोने का नहीं, जागने का समय है। ईश्वर हमें ऐसी प्रेरणा करे कि हम संगठन बना कर, एकता के सूत्र में बंधकर इस समस्या का समाधान करें। हिन्दू राष्ट्र बनायेंगे। कोई रोक नहीं पायेगा।

अस्वस्थ होते हुए भी वेदभिक्षुः जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा कि या तो जब यह राष्ट्र इस्लामिस्तान बनेगा या पूर्ण हिन्दू राष्ट्र। इसके लिए हमें उग्र राष्ट्रवाद को जन्म देना होगा।

वहां के एक प्रतिष्ठित नागरिक श्री धर्मेन्द्र चौधरी जी भी शिष्टमण्डल के साथ थे। नगर की स्थिति देखकर द्रवित हो वे कहने लगे कि "हम हिन्दू

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आक्रमणकारी नहीं, लेकिन यदि विवश किया जायेगा तो हम पीछे हटने वाले नहीं।" भारत कोई मिट्टी का शेर नहीं, जो मुसलमानों ने सोचा है कि वे इस पर सवारी कर लेंगे। अब शेर जाग गया है। शेर जब जागता है, तो सब उससे भयभीत हो भागते हैं। वही यहां होगा।

—उन्होंने यह भी कहा कि यदि कोई हमारे देश में रहना चाहता है, तो शान्तिपूर्वक रहे। जो रहेगा, उसे हमारे मन्दिरों पर—मन्दिरों की मधुर घन्टियों पर आपत्ति उठाने का कोई अधिकार नहीं होगा। हमारी गौ, गंगा, हमारे देश की माटी की वन्दना करनी होगी। नहीं तो वे चले जायें अपने देश में—अपने घर में। अब हमें एक संगठन का निर्माण करना होगा। एक झंडे के नीचे एकत्रित हो डटकर मुकाबला करना होगा। हिन्दू राष्ट्र को, अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करनी होगी।

अन्त में शिष्टमण्डल ने दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया। दंगा फुटा दरवाजा नामक क्षेत्र से प्रारम्भ हुआ था।

+

कहां तक बर्दाश्त किया जाए ?

परम पूज्य दीदी,

मेरा खून उबल रहा है कि मेरा ही घर और मुझे ही रहने का अधिकार नहीं। इस सरकार को तुरन्त कुर्सी से उतार देना चाहिए। दीदी, तुरन्त विद्रोह का बिगुल बजा देना जरूरी है। अब कहां तक बर्दाश्त किया जाए। दीदी, आप के ऊपर २३ मुकद्दमें क्या, एक लाख भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

दीदी, आपके पीछे सारे हिन्दू सेना है। दीदी, आप अन्याय के खिलाफ लड़ो। हम लोग आपके साथ हैं। अभी इस इलाके में अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति नहीं। जब से हमने जन ज्ञान मांगना शुरू किया है तब से हिन्दुओं में जोश आ रहा है। ईश्वर आपकी उम्र दीर्घायु करे। यही हम लोगों की ईश्वर से प्रार्थना है।

कमला प्र० भगत
लालपुर

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वर्णमन्दिर में बैठे उग्रवादी शैतानियत पर उतारू हैं

लोकसभा में आचार्य भगवान् देव शर्मा की स्पष्टोक्ति

नई दिल्ली। लोकसभा के सदस्य आचार्य भगवान् देव शर्मा ने, जो इन्दिरा कांग्रेस के टिकट पर अजमेर से निर्वाचित होकर आए, सदन में पंजाब की स्थिति पर एक महत्त्वपूर्ण भाषण दिया। मामूली सम्पादन के साथ उनका वह भाषण ज्यों का त्यों नीचे दिया जा रहा है।

सिख धर्म के जन्म दाता गुरु नानक देव जी थे। पंजाब से लेकर वे इंसानियत का पैगाम देते हुए मक्का-मदीना तक हहुंचे। बड़े-बड़े राजा महाराजा, सुल्तान और बादशाह उनकी प्रेम की वाणी को सुनकर प्रभावित हुए और सिख धर्म संसार में छा गया। एक तो वे सन्त थे और दूसरे वे सन्त हैं जो आजकल स्वर्णमन्दिर में बैठे हुए हैं और जो शस्त्र लेकर शैतानियत करके शासन करना चाहते हैं। गुरु नानक देव जी के साथ बाला और मर्दाना दोनों गए थे। मैं गृह मन्त्री जी को सुनाना चाहता हूं—क्योंकि बहुत प्रसिद्ध बात है। उनको शायद मालूम भी होगी। एक शैतानों की नगरी उनको मिली। गुरु नानक ने उनको आशीर्वाद दिया, बसे रहो। जो अच्छे आदमी थे, उनको कहा कि उजड़ जाओ। मुझे लगता गृह मन्त्री ने भी निश्चय रखा है कि शैतान स्वर्णमन्दिर में बसे रहें, वहीं है कैद रहें, जेल में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहेंगे तो उनको रोटियां खिलानी पड़ेंगी, लेकिन मन्दिर में रह कर कड़ाह प्रसाद वहीं का खाते रहें। परन्तु यह बात चलेगी नहीं।

आज लोगों की श्रद्धा गुरुद्वारे के प्रति ऐसे उग्रवादियों के कारण घट गई है, गुरुद्वारों में उन्होंने जाना बन्द कर दिया है। डैपुटेशन गृह मन्त्री, प्रधान मन्त्री तथा राष्ट्रपति जी से मिला भी है और उनसे कहा है उन्होंने कि हमारी श्रद्धा मत तोड़ो। वहां जो इस तरह के चन्द लोग बैठे हैं, सिख भाइयों को चाहिए कि वें स्वयं पहल करें और गुरुद्वारे से इस प्रकार के तत्वों को निकालें।

सुब्रह्मण्यम् स्वामी जी वहां गये, जिन्होंने यहां यह सवाल किया और उन्होंने कहा कि लौंगोवाल कहते हैं कि खालिस्तान हमको नहीं चाहिए, तो फिर क्या चाहिए? उपाध्यक्ष जी, १९५६ से लेकर आज तक पंजाब की समस्या के साथ मैं भी जुड़ा हुआ हूं, जब मास्टर तारासिंह और फतेह सिंह जी ने पंजाबी सूबा के लिए आन्दोलन चलाया। आर्यसमाज की तरफ से भाषा के आधार पर जो हिन्दुओं की भाषा हिन्दी थी आर्यसमाज ने आन्दोलन चलाया, जिसमें गिरफ्तार करके ४ दिन मुझे चंडीगढ़ जेल में रखा गया, उसके बाद साढ़े तीन महीने जालन्धर जेल में रहा। तब से मैं इस के इतिहास को जानता हूं। परन्तु कुछ लोगों ने जो पंजाब के अन्दर परिस्थिति पैदा कर दी है, हिन्दू और सिख भाई जो सदियों से साथ रहे और हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए जो बलिदान किया उसको मैं दोहराना नहीं चाहता, उस आंदोलन के आधार पर पंजाब का बंटवारा हो गया। पंजाब गुरुमुखी भाषाभाषी होगा। तो फिर खालिस्तान की कौन-सी बात रह गई?

जहां तक बात करने का सवाल है, यह विशेष घटना जो गतवर्ष २६ अप्रैल को घटी, मरी हुई गाय की गर्दन मन्दिर में रख दी गई, प्रधान मन्त्री ने उसी दिन तत्कालीन गृहमन्त्री श्री जैल सिंह को आदेश दिया और उनके साथ हमें भेजा, नारायण दत्त तिवारी जी को भेजा, और गिरधारी लालजी को, जो सनातन धर्म सभा के चैयरमैन हैं, उनको भेजा। हम विशेष प्लेन से वहां गए और उसी दिन रात को ९ बजे तक पहुंच कर ११ बजे मन्दिर और गुरुद्वारे पर गये। वहां जो स्थिति पैदा की सिर्फ अकाली उग्रवादी उसके लिए जवाबदार नहीं हैं, बल्कि दूसरी भी संकीर्ण साम्प्रदायिक विचारधारा वाले हैं जो होड़ में लगे हुए हैं। जो वहां पर हिन्दुओं के द्वारा जलूस निकालना चाहते हैं तो उसकी प्रतिक्रिया होती है, जिसका प्रभाव पटियाला में भी पड़ा। और उस दिन जो झगड़ा हुआ, उसमें विस्तार से जाने का समय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं, परन्तु वहां पर हिन्दू और सिख जो विदेशी ताकतों से मिल कर काम कर रहे हैं, और मेरा आक्षेप है सुब्रह्मण्यम् स्वामी जी के ऊपर जो उन्होंने आज यहां पर बयान दिया है, उसने पंजाब की आग में घी डालने का काम किया और उनकी प्रवृत्तियों पर हमें सन्देह हुआ है कि उनकी गतिविधियां देश के लिए खतरनाक साबित होंगी। उनका सम्बन्ध जिन-जन लोगों के साथ है, चाहे गंगासिंह हो, जगजीत सिंह हों, चाहे लालडेंगा और फीजो का लन्दन वाला गठबन्धन हो और उनके साथ उनकी क्या सांठ-गांठ चल रही है, वहां ये जा सकते हैं और कोई नहीं जा सकता। मैं पूछना चाहता हूं लौंगोवाल ने फरमान निकाला वहां पर कोई बन्दूक नहीं रख सकता। २४ घंटे में ही लोंगोवाल को वह वक्तव्य वापस लेना पड़ा। क्या चलती है उसकी स्वर्ण मन्दिर में ? कुछ नहीं। वहां लोंगोवाल कुछ कहता है, तलवन्डी कुछ कहता है, बादल कुछ कहता है। किस पर विश्वास दिया जाए ? धर्म के स्थान पर शैतानियत का काम हो रहा है। और जो बयान दे रहे हैं, मैं मणिराम बागड़ी जी को बधाई देता हूं, उन्होंने उसी समय उनको टोका, क्योंकि इस तरह प्रोत्साहन देना देश के साथ गद्दारी है, देशद्रोह है।

जो पंजाब का बंटवारा हुआ, हरियाणा का हुआ, और यह भी बता दूं अकालियों को प्रोत्साहन जनता पार्टी के समय दिया गया। क्या यह बात सच नहीं है कि कि १९७७ में जो पंजाब सरकार ने हरयाणा सरकार से आपस में पानी के सम्बन्ध में समझौता किया, और हरियाणा ने पैसा भी दिया, श्री बादल ने उसको स्वीकार भी किया, और वही बादल उस नहर को खुदवाने के लिए बाधा खड़ी करना चाहते हैं। इस तरह के शैतानों को प्रोत्साहन नहीं दिया जा सकता। चन्द लोग भारत के भाग्य के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते।

किसने दरवाजा बन्द किया भारत सरकार से बात करने के लिए ? प्रधानमन्त्री के पास प्रातः काल से लेकर शाम तक प्रतिनिधिमण्डल मिलते रहते हैं। हर बार बुलाया गया है, बातचीत होती रही है प्रधान मन्त्री की, गृहमन्त्री की प्रधानमंत्री और गृहमन्त्री ने कभी भी कोई दरवाजा बन्द नहीं किया, हमेशा बात के लिए बुलाया। बात किस बात पर करनी है ? यह ठीक है कि राजनीति का दांव-पेच खेला जा रहा है, कोई नहर या जमीन का मामला नहीं है।

इन्द्रवेश जी ने कहा कि वहां खालिस्तान बनाएंगे। यहां भगतसिंह ने जो शहादत दी थी "भारत माता की जय" कहकर, क्या इसलिए कि खालिस्तान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बनेगा ? क्या वह सिख नहीं था ? यह गलत बात है कि बाद में वह आर्यसमाजी बन गए और उसके चाचा अजितसिंह सरदार थे, दारासिंह जो उसके चाचा थे, लाला लाजपतराय आर्यसमाजी नेता, हिन्दुओं के नेता ने देश को मिलाकर आजादी प्राप्त की। क्या इसलिए कि आगे चलकर ऐसे देश का बंटवारा करायेंगे ?

तलवन्डी, बादल और जरनैलसिंह दिल्ली की तरफ देखते हैं। शरारत करते हैं, उनका ध्यान कभी रावलपिंडी और नानकाना साहब की तरफ क्यों नहीं जाता, जहां के लिए उनको पासपोर्ट लेना पड़ता है ? हिन्दुस्तान की राजगद्दी और बड़े से बड़ा दर्जा ज्ञानी जैलसिंह जी को दिया जो कि सरदार हैं हमारे राष्ट्रपति हैं, इस पार्लमेंट को चलाने का का संसदीय कार्य मन्त्री श्री बूटासिंह के पास है, जिसके आधार पर यहां कार्य बनता है। रिजर्व बैंक का गवर्नर एक सिख को बना दिया, एयर फोर्स का जनरल एक सिख को बना दिया। हम सारे हिन्दुस्तान का तख्त और ताज सिखों को देना चाहते हैं, उनको जिनमें योग्यता हो, जो देशभक्त हों। गद्दारों को प्रोत्साहन नहीं मिल सकता। ये कुंए के मेंढक बनना चाहते हैं। ये सावधान हो जाएं, हिन्दुओं को झंझोड़ने की कोशिश न करें।

गृह-सचिव पटियाला गये उन्होंने अच्छा पार्ट अदा किया है। मेरी प्रार्थना है कि आप भी जाइए और उनको आश्वासन दीजिए। आर्यसमाजियों की पंजाब में बहुत बड़ी शक्ति है, गांव-गांव में आर्यसमाजी हैं, ४८ प्रतिशत हिन्दू पंजाब में हैं, उनकी उपेक्षा नहीं कर सकते। यदि आर्यसमाजी बिगड़ गये तो स्थिति विचित्र बन जाएगी। वे बिगड़ेंगे नहीं, यह हमें विश्वास है, परन्तु आपको आश्वासन देना पड़ेगा कि कोई भी इस तरह का कोई कदम नहीं उठाएगा जिससे हिन्दू और सिख आपस में युद्ध करें, कत्लेआम करें और खून की नदियां बहें। पंजाब की नदियों में हिन्दू और सिखों का खून न बहे, इस बात की तरफ आपको ध्यान देना पड़ेगा।

जहां तक चण्डीगढ़ का सवाल है, उसके बारे में मैं कहना चाहता हूं कि उसको केन्द्रशासित रहने दिया जाये। आप इसकी स्पष्ट घोषणा कीजिए। यदि आपने कोई कदम उठाया तो हरयाणा में असन्तोष पैदा हो जायेगा। हिमाचल का भी तो अधिकार है—पानी का। वहां भी झगड़ा है। आपको इसका भी फैसला करना पड़ेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चंडीगढ़ की प्रजा से आप अभिप्राय मांगिए और लोकशाही से जो अभिप्राय वे दें उस आधार पर आप चण्डीगढ़ का फैसला कीजिए।

एक बात अन्त में मैं यह कहना चाहता हूं कि वहां जो स्थिति आज है, वह बहुत भयंकर है और विचित्र है। उसको सन्तोष दिलाने के लिए, आग को बुझाने के लिए एक ही मार्ग मेरी दृष्टि में है। संसद् कल समाप्त हो रही है, परसों के बाद कोई भी दिन आप निश्चित कर लें। लोक सभा के स्पीकर माननीय श्री बलराम जाखड़, जो इस सदन के अध्यक्ष हैं, जिसमें सब पार्टी के लीडर हैं, उनके नेतृत्व में सारी पार्टी के लीडर हम सब साथ मिल कर चण्डीगढ़ चलें—शांति और अहिंसा का कारवां बनाते हुए स्वर्ण मन्दिर में जायें। हम चाहते हैं कि वहां गुरु-ग्रन्थ साहब का पाठ सुनें, गुरुवाणी का पाठ सुनें और वहां का कड़ाह प्रसाद खाकर प्यार का कारवां बनायें।

हिन्दू-सिख के बीच में, जो एक मां-बाप की औलाद हैं, उनमें बंटवारा न हो। उनके लिए हर संभव कोशिश की जाए और मेरी प्रार्थना है कि आप विचार कर निर्णय करें कि लोकसभा के स्पीकर के साथ हम सब पार्टी के लीडर एक जलूस बनाकर पैदल शान्ति-कूच करते हुए चण्डीगढ़ से अमृतसर पहुंचें। अगर मेरी इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्यार के कारवां के सामने उन शैतानों के सिर झुक जाएंगे और हिन्दुस्तान अखंड रहेगा। ★

—अहिंसा वीर का शस्त्र है। —महात्मा गांधी

—दुर्भाग्य सदा उसी दरवाजे से आता है, जो हम खुला छोड़ देते हैं। —लोकोक्ति

—झूठ के अनेक भाई-रिश्तेदार हैं, पर सच अकेला है। —इमर्सन

—मां और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर हैं। —वाल्मीकि

—ऐसा कौन बुरे से बुरा काम है, जिसे दुर्जन नहीं करते और ऐसा कौन बड़े से बड़ा काम है जिसे सज्जन न कर सकें। —अज्ञात

—जो सबका कर्षण करे वही कृष्ण। —अज्ञात

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुरान पर एक विवादास्पद पुस्तक

विश्व नास्तिक संघ के उपाध्यक्ष जोसेफ एदमास्कु ने 'कुरान ए क्रिटीकल स्टडी' नामक विवादास्पद पुस्तक लिखकर सारे केरल में एक तूफान मचा दिया है। धर्मान्ध मुस्लिम इस पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग कर कर रहे हैं। यह भी कहा जा रहा है कि हाल में केरल में जो साम्प्रदायिक झगड़े हुए, उसके मूल में इस पुस्तक का बढ़ता प्रचार भी था।

जोसेफ का जन्म एक रुढ़िवादी ईसाई परिवार में हुआ था। १९ वर्ष की उसने 'ईसा मानव था' नामक एक पुस्तक लिखी, जिसमें ईसा की एक नयी छवि को पेश करने का प्रयास किया गया था।

इस पुस्तक के कारण उसे अपना घर छोड़ने को विवश होना पड़ा। लेकिन जोसेफ के भंडाफोड़ अभियान में और तेजी आ गयी और उसने अन्य विवादास्पद पुस्तकें भी लिखीं—"द बाइबिल गॉस्पल आफ फूल्स" "साईं बाबा एक चीट, 'क्राइस्ट ऐंण्ड कृष्ण नेवर लिव्ड।'

जोसेफ की कुरान और इस्लाम विरोधी पुस्तक भारत में प्रकाशित दूसरी इस्लामविरोधी पुस्तक है।

सर्वप्रथम इस्लामविरोधी पुस्तक अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ने (जिनकी हत्या एक धर्मान्ध मुस्लिम अब्दुल रशीद ने की थी) लिखी थी। उसका नाम था "सेवियर ऑफ ए डाइंग रेस"। अब्दुल रशीद को, जिसे इस हत्या के लिए अंग्रेजों ने फांसी दी थी, हाल ही में जिया उल हक ने 'शहीद' घोषित कर उसके नाम पर एक संग्रहालय खोला था।

जोसेफ की मान्यता है कि कुरान से अधिक मानवता विरोधी पुस्तक शायद ही कोई हो। यह भी कि उसकी इस पुस्तक का विरोध सिर्फ धर्मान्ध मुस्लिमो ने ही किया है। उसका कहना है कि कुरान में जिस जन्नत का जिक्र है, वह एक वेश्यालय का ही वर्णन हो सकता है। पुस्तक के अन्तिम अध्याय का शीर्षक है, "मुहम्मद का जन्म नहीं हुआ होता तो कितना अच्छा होता।"

अब हमें इस पुस्तक में वर्णित आरोपों के उस उत्तर की प्रतीक्षा है, जो मुस्लिम विद्वान तैयार कर रहे हैं। ×

—सदाजीवतलाल चन्दूलाल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानंद निर्वाण-शताब्दी पर आर्यसमाज क्या करे ?

—बनारसीदास चतुर्वेदी

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म १८२४ में हुआ था और स्वर्गवास १८८३ में। उनकी मृत्यु शताब्दी इसी वर्ष नवम्बर में मनाई जा रही है।

वे उन्नीसवीं सदी में भारत के महान् जागरण के अग्रदूतों में से एक थे। उनकी विद्वत्ता, अनथक परिश्रमशीलता और निर्भीकता अतुलनीय थी। निस्संदेह उनकी महान् साधना से हमारे देश में उत्साह और सुधार की एक प्रबल लहर प्रवाहित हुई थी। धार्मिक अन्धविश्वास और सामाजिक कुरीतियों पर उनके प्रहार संहारक सिद्ध हुए और हमारे देश का सामाजिक जीवन स्वच्छतर हुआ।

स्वामीजी की संगठन-शक्ति भी अद्भुत थी। उनके द्वारा संस्थापित आर्यसमाज ने स्त्री शिक्षा, दलितोद्धार और अनेक सामाजिक सुधारों का सूत्रपात किया। उनके आदर्शों से हमारे देश में शिक्षा की गुरुकुल-प्रणाली को प्रोत्साहन मिला। कांगड़ी, ज्वालापुर, वृन्दावन और सूपा (गुजरात) के गुरुकुलों की सेवाओं को कौन भूल सकता है? वास्तव में आर्यसमाज और उसके कार्यकर्त्ताओं ने हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में जो सेवाएं की हैं, उन पर प्रकाश डालना व्यर्थ है—वे सुविदित हैं।

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने हमारे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में जो योगदान दिया; वह एक स्वतंत्र लेख का अधिकारी है। यहां पर इसका उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा कि प्रारम्भ में ब्रिटिश सरकार आर्यसमाज को शंका की दृष्टि से देखती थी और उसके कार्यकर्त्ताओं को खतरनाक मानती थी। दीनबन्धु एंड्रूज ने व्यक्तिगत तौर पर प्रयास करके उस संदेह को दूर कराया था। दीनबन्धु एंड्रूज और स्वामी श्रद्धानन्द के बीच अत्यन्त प्रेमपूर्ण सम्बन्ध थे।

जहां तक हिन्दी प्रचार का प्रश्न है, स्वामी दयानंद और महात्मा गांधी—और इन दोनों का जन्म कठियावाड़ में हुआ था—की सेवाएं महान् हैं। हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य के इतिहास में आर्यसमाजियों और आर्यसमाज के गुरुकुलों के स्नातकों की सेवाओं पर तो एक अलग ग्रंथ ही लिखा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जा सकता है। स्व. पं. रुद्रदत्त संपादकाचार्य, महाकवि शंकरजी, स्व. पं. पद्मसिंह शर्मा, स्व. इन्द्र विद्यावाचस्पति, स्व. पं. सुदर्शनजी, स्व. लक्ष्मीधर वाजपेयी, 'नवजीवन' के सम्पादक स्व. केशवदेव शास्त्री, स्व. द्वारिका-प्रसादजी सेवक, स्व. सत्यदेव विद्यालंकार, स्व. रामगोपाल विद्यालंकार, स्व. शंकरदेव विद्यालंकार, स्व. हरिशंकर शर्मा, स्व. अशोकजी, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, पं. सातवलेकर आदि की हिन्दी सेवा को कौन भूल सकता है ?

महर्षि के निर्वाण को आगामी दीपावली पर एक सौ वर्ष पूरे हो जायेंगे। आवश्यकता इस बात की है कि इन एक सौ वर्षों पर विहंगम दृष्टि डाली जाये और आर्यसमाज की उपलब्धियों और उसकी वर्तमान कमियों पर भी निष्पक्षतापूर्वक प्रकाश डाला जाए, ताकि भविष्य के लिए सही कार्य-क्रम बने। इधर आर्यसमाज का काम हमारे देश में पहले की अपेक्षा कुछ शिथिल दीख पड़ता है। इसके कारणों पर विचार करने की आवश्यकता है। स्व. हरिशंकरजी शर्मा ने एक बार हमसे कहा था कि चुनाव की प्रथा ने आर्य-समाज का अहित ही किया है।

आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्ताओं की कीर्तिरक्षा होनी ही चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन-चरित्र श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने प्रकाशित कर दिया था। मगर वह अब दुर्लभ हो गया है। उसका पुनर्मुद्रण होना चाहिए और स्वामी जी की आत्मकथा का भी। ज्ञानपुर के डा० कपिलदेव द्विवेदी ने महात्मा नारायणस्वामी का आत्मचरित्र पुनर्मुद्रित करा दिया है। स्वामी दर्शनानंद को लोग बिल्कुल भूल ही गये। वे कई गुरुकुलों के संस्थापक थे। गुरुकुलों के स्नातकों ने हिन्दी साहित्य तथा पत्रकारिता के लिए जो महान् कार्य किया, उस पर पूरा-पूरा प्रकाश पड़ना चाहिए।

यह बहुत आश्चर्य की बात है कि महर्षि निर्वाण-शताब्दी में केवल दो महीने बाकी हैं, मगर उसकी चर्चा हिन्दी पत्रों में हुई ही नहीं। महर्षि दयानंद किसी जाति या धर्म के अंध-हिमायती न होकर सारे विश्व को शुद्ध चरित्रवान तथा सुखी देखना चाहते थे। सारे संसार को आर्य बनाओ—'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'—का अर्थ अन्य मतावलम्बियों को अपने मत में लाना न था। वे सारे संसार को श्रेष्ठ बनाना चाहते थे। यद्यपि तत्कालीन परि-स्थितियों के कारण उन्हें देश का सोया मानस झकझोरना पड़ा था; पर यह तत्कालिक कार्य ही था, सदा-सर्वदा के लिए नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि 'राष्ट्र-निर्माता महर्षि दयानंद' नामक ग्रंथ इस निर्वाण-शताब्दी के अवसर पर निकाला जाये और उसमें एक अध्याय विदेशों में किए गए आर्य-समाज के कार्यों पर भी हो। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आटा दीजिए !

३ से ६ नवम्बर तक अजमेर में विशाल मेला "महर्षि दयानन्द निर्वाण-शताब्दी" के रूप में होने जा रहा है। इस अवसर पर देश-विदेश से १० लाख व्यक्ति एकत्र होंगे।

उन के भोजन के लिए ऋषि लंगर की व्यवस्था आप ने करनी है। अतः मेरी देश की धर्मप्राण जनता से प्रार्थना है कि वे कम से कम एक बोरी आटे के लिए २५१/- **स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के नाम** भेजने की कृपा करें। ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा **परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर** के पते पर भेजें।

जो आटे की बोरी देना चाहें वे आटे की बोरी भेजें। दूर के सज्जन २५१/- भेजें। इससे एक बोरी आटा आप की ओर से ले लिया जायेगा।

जो १०-२०-५०-१०० बोरी दान में देना चाहें वे भी उदारतापूर्वक भेजें। यह आटा साधु-महात्माओं, विद्वानों, सन्यासियों के लिए विशेष रूप से काम आयेगा।

आटा देकर पुण्य प्राप्त करें। महात्माओं को भोजन करा कर धर्म-लाभ करें।

—वेद भिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

DECLARATION

WE are Hindus settled in America. Although living so far away from home, we do worry about all the problems bedevilling India today. We are saddened by the current conditon of India. It is not possible for any people to live abroad with self-respect if their existence in their own homeland is not secure.

Your paper, the Monthly Jana-Gyan came to our attention only recently. The colour pictures of Shivaji, Rana Pratap, Swami Dyananda and Bhagat Singh on the cover attracted our attention. Your writing in the paper made it quite clear to us that you have understood and seen through the deep conspiracy hatched by the present rulers of India, the prime minister, her M.P.'s and M.L.A.'s to turn India into an Islamic state; that you want to fight this conspiracy. We too have the same opinion in the matter. Although we are so far from India, there should be no dearth of Hindus in our land. It has now become necessary to rebel against this enterprise of Islamising India.

Pakistan was created after the partitioning of India in 1947. Huge tracts of land producing wheat, rice, fish and milk have been handed over to the Moslems, who claimed to be a different nation. A bigger share of land than was commensurate with their number was

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

FROM AMERICA

[redacted]

We, the Hindus in America, will help with finances. We will also organise the Hindu in Canada and other lands abroad. Please announce in no uncertain terms, our goals; we Hindus will come to your help. We promise you our help in all seriousness and you can, if you so wish, publish this offer from us, in your paper.

If West Bengal's chief mininister Jyoti Basu can help the Palestine Liberation Organisation financially in their terrorist activities, if the prime mininister of India can offer help to Arafat to fight for Palsetine. then there in nothing that can stop us from helping our own people in their attempt to liberate India from the clutches of traitors and enemies of the Hindus.

A. SHARMA

Aug. 3, 1983

President, Hindu Students' Association of North America. New York NY-10001

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"This is What We Did"

as confessd by foreigners themselves

CRUELTY towards women and children was a new experience in India. Up to the time of Alauddin Khilji, says Barni, no hand had ever been laid upon ladies or children on account of men's misdeeds. Alauddin devised special measurss against his Hindu subjects. The Hindu was to be so reduced as to be left unable to keep a horse to ride on, to carry arms, to wear fine clothes or to enioy any of the business of life. (National story of India, vol. III by Stanley Lane Pool).

Syyad Mohammad Latif M.A., in his History of the Punjab (page 75-76) writes about the beliefs of the Mohammedan:

"......A drop of blood shed in the cause of God, knight in arms, is of more avail to the faithful than two months of fasting prayer. He who perished in holy war went straight to Heaven. In paradise nymphs of fascinating beauty impatiently waited to greet his first approach. There the gallant martyrs lived for ever a life of happiness and bliss, free from sorrows and liable to no inconvenience from excess. They would possess thousands of beautiful slaves and get houses furnished with splendid gerdens and with all the luxuries of life to live on. Such liberal promises of future happiness, added to an immediate prospect of riches and wealth, were enough to kindle the frenzy of the desert population of Arabia. Their martial spirit was roused and their sensual passions were enflamed."

India in the Mohammedan Period—V.A. Smith (page 257) "......their fierce fanatiscism which regarded the destruction of non-Muslims as a service eminently pleasing to God, made them absolutely pitiless".

"Great jealousy and hatred existed those days between the Hindus and Mohammedans and the whole Non-Muslim population was subiect to persecution by the Mohammedan rulers".

(History of the Punjab by Syyad Mohd. Latif page 240).

IBN ASIR in his Kamilu-at-Twarikh records that Shahab-ud-Din of Ghazni massacred thousands of the inhabitants of

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Ajmer and reserved the remainder for slavery. At Benaras, too, the slaughter of the Hindus—men, women and children was immense.

Hasan Niazm-i-Naishapuri in his TAJ-UL-MA'ASIR states that Qutab-ud-Din Aibak (1194-1210 A.D.) when he conquered Meerut, demolished 700 Hindu temples and erected mosques on their sites. In the city of Koil, now called Aligarh, he converted the Hindu inhabitants to Islam by the sword and beheaded all who adhered to their religion. In Kalinjar he destroyed one hundred and thirteen temples, built mosques on their sites, massacred over one hundred thousand Hindus, and made slaves of about fifty thousand and more and sent them to Ghazni.

ABDULLA WASAF in his Taziyat-ul-Ansar wa Tajriyat-ul-Asar writes that when Ala-ud-Din Khilji (1295-1316 A.D.) captured the city of Cambay at the head of the gulf of Cambay, he killed the adult male Hindu inhabitants for the glory of Islam, set flowing seas of blood, and sent the women of the country to his home and made about twenty thousand maidens his private slaves

"Alauddin once asked his Qazi what the Mohammedan Law prescribed fot Hindus. The Qazi replied, "Hindus are like the earth, if silver is demanded from them, they ought, with the greatest humility, to offer gold. And if a Mohammedan desires to spit into a Hindu's mouth, the Hindu should open it wide for the purpose. God created Hiudus to be slaves of Mohammedans. The Prophet hath ordained that, if the Hindus do not accept Islam, they should be imprisoned, tortured. and finally put to death, and their property confiscated."

In the Tabaqat-Nasiti by Minha-j-ul-Sira : it is stated that Mohammed Bakhtyar Khilji conquered Bihar with a band of 200 cavalry, he put to sword about one hundred thousand Buddhists and burnt a valuable library of ancient Pali and Sanskrit books.

Here is a leaf from Twarikh-i-Timuri revealing that Amir Timur brutally put to sword 752,000 Hindus and burnt 29,000 alive. Timur wrote proudly in his autobiography that he massacred 1,000,000 Hindus on one day.

'Amir Khusro in his Twarikh Alai or Lhazain Ul Futuh writes that when the Emperor Feroz Shah Tughlak (1351-88)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

took the city of Bhilsa in Bhopal, he destroyed all its Hindu temples, took away their idols, placed them in front of his fort and had them daily bathed with the blood of a thousaud Hindus".

'India in Mohammedan Period' by V.A. Smith : "After the Tughlaks came the Sayyids and the Lodis. All of them were fierce bigots. Their reigns too, offer little but scenes of bloodshed, tyranny and treachery".

Elphinstone's The History of India (page 410) Sikandar Lodi was one of those bigots who have sat on the throne of India. He destroyed the temples in towns and forts that he took from the Hindus, and he forbade the people performing pilgrimages, and bathing on certain festivals at places on the sacred streams within his own dominions. On one occassion he carried his zeal to cruelty and injustice for a Brahmin having been active in propagating the doctine that "all religions, if sincerely practised were equally acceptable to God", he summoned him to defend this opinion in his presence against twelve Mohammedan divines, and on his refusing to renounce his tolerant maxim, put him to death".

(see also History of Medieval India by Ishwari Prasad page 481).

Professor Max Muller says "I can only say that after reading the accounts of the terrors and horrors of Mohammedan rule, my wonder is that so much of native virtue and truthfulness should have survived". He also says :

"When you read of the atrocities committed by the Mohammedan conquerors of India after that time (1000 A D) to the time when England stepped in and whatever may be said by her envious critics, made, at all events, the broad principles of our common humanity respected once more in India, the wonder, to my mind, is how any nation could have survived such an inferno, without being turned into devils themselves.

"When, however, centuries of foreign (Moghul) domination have left the people as virtuous, truthful and refined as any free people to be found anywhere in the world, what further evidence is necessary to prove the high character of the ancient Hindus, whose lives were regulated by ethical principles of the highest order.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

23 आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से बनाया हुआ दाँतों के लिए

तिदिन प्रयोग करने से जीवनभर दांतों की प्रत्येक बीमारी छुटकारा। दांत दर्द, मसूड़े फूलना, गरम ठंडा पानी गना, मुख-दुर्गन्ध और पार्यरिया जैसी बीमारियों का एक मात्र इलाज।

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स

महाशियां दी हट्टी (प्रा.) लि.

9/44 इण्ड. एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 539609,534093

हर केमिस्ट व प्रोविज़न स्टोर्स से खरीदें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

D-C-201
R.N.107119/65

D—C—201

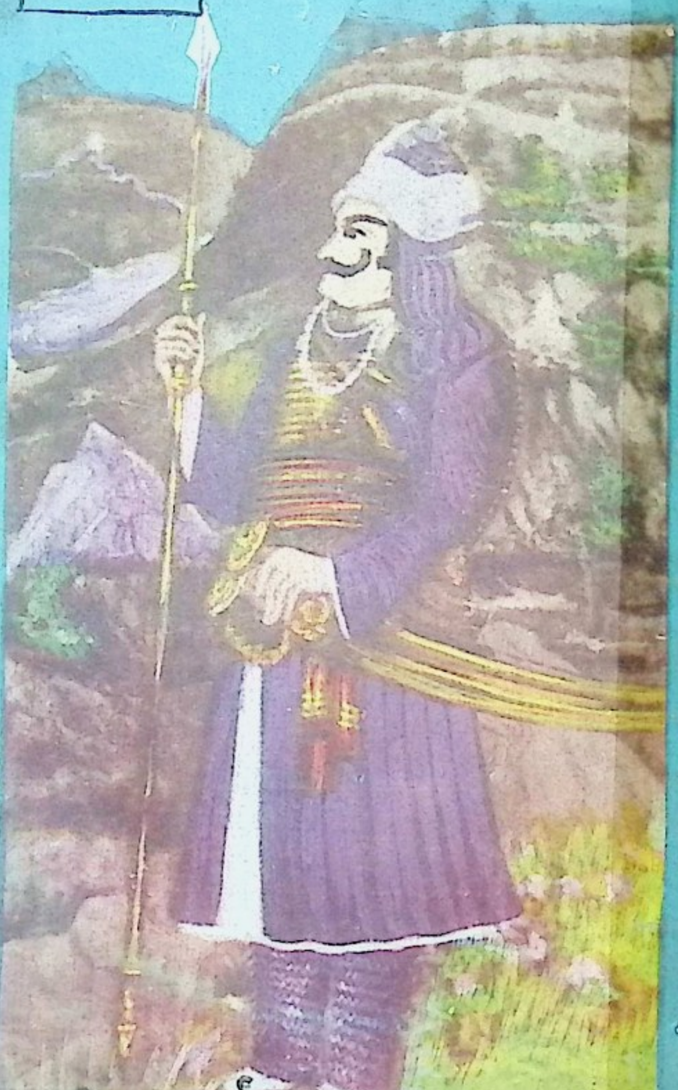

हमारे आदर्श : महाराणा प्रताप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi